ललिता
उपन्यास

अनुवादक
पं० चन्द्रशेखर पाठक,

ललिता

बङ्ग भाषा के सुप्रसिद्ध लेखक बाबू शरचन्द्र चट्टोपाध्याय
के "परिणीता" नामक उपन्यास का
अनुवाद

अनुवादक—पं० चन्द्रशेखर पाठक

प्रकाशक
दुर्गाप्रसाद खत्री
प्रोप्राइटर लहरी बुकडिपो, काशी।

प्रथम बार] १६२५ [मूल्य ॥)

वक्तव्य

प्रस्तुत पुस्तक हमारी कृति नहीं है। यह बंगाल के उन्हीं प्रसिद्ध औपन्यासिक श्री शरत्चन्द्र चट्टोपाध्याय की कृति है, जो बंग समाज में सर्वश्रेष्ट औपन्यासिक गिने जाते हैं, जिनका चरित्र चित्रण, मनोभाव चित्रण, तथा भाषा सौष्ठव अनुकरणीय तथा आदरणीय माना जाता है। वास्तव में उपन्यास लेखन कला में शरत् बाबू ने अपनी विलक्षण प्रतिभा दिखलाई है। और यही कारण है कि इस समय बंग लेखक समाज में उनकी शैली का अनुकरण विशेष रूप से होता दिखाई देता है।

'परिणीता' उनकी बहुत दिनों की रचना है। तब में और अब में, उनमें भी बड़ा अन्तर आ गया है, तथापि हमें आशा है कि हिन्दी पाठक इसे पढ़ कर मनोरंजन के साथ ही साथ कुछ न कुछ और भी अवश्य ही प्राप्त करेंगे।

अब यह अनुवाद कैसा हुआ है इस सम्बन्ध में हमारा मुंह खोलना ही अनुचित है इसका विचार तो विचारशील सहृदय पाठक और मनस्वी आलोचक ही करेंगे हम इतना ही कह सकते है कि शरत् बाबू की पुस्तकों का सफलतापूर्वक अनुवाद करना सहज काम नहीं है आशा है भूल चूक के लिये क्षमा मिल जायगी। भारत में इस दान की कभी कमी नहीं रही है।

कलकत्ता
श्रावण—१९२०

विनीत—
चन्द्रशेखर पाठक.

ललिता

पहला परिच्छेद

मेघनाद की छोड़ी हुई शक्ति लगने पर लक्ष्मण का मुख-भाव अवश्य खराब हो गया था, पर गुरुचरण का चेहरा तो उस समय और भी बिगड़ गया जब एक दिन सवेरे ही भीतर से समाचार आया कि उनकी स्त्री ने बिना किसी कष्ट के, निर्विघ्न रूप से पाँचवी कन्या प्रसव की।

गुरुचरण साठ रुपये महीने की बैंक की नौकरी करते थे। अतः किराये की गाड़ी के घोड़ों की भाँति उनका शरीर जैसा सूखा और दुबला पतला हो रहा था, उसी तरह उनके चेहरे पर भी एक निष्काम, निर्विकार और निर्लिप्त भाव झलक रहा था। इतने पर भी यह भयंकर शुभ समाचार सुन कर आज उनके हाथ का हुक्का हाथ में ही रह गया और एक पुरानी, कई पुश्त की तकिया का सहारा ले, वे चुपचाप बैठ गये। एक ठण्डी सांस लेने की भी शक्ति उनमें न रही।

यह शुभ समाचार उनकी दस वर्ष की तीसरी कन्या अन्ना काली ले आयी थी। वह बोली—"बाबा, देखने चलो।"

गुरुचरण उस बालिका के मुख की ओर देख कर बोले—बेटी एक गिलास पानी तो ले आ, बड़ी प्यास लगी है।"

लड़की जल लाने चली गयी। उसके चले जाने पर सब से पहली बात जो गुरुचरण को याद आयी, वह सौरी के खर्च की बाबत थी। इसके बाद, किसी मेले के समय स्टेशन पर गाड़ी आते ही दरवाजा खुला देख कर, अपनी अपनी गठरी मोटरी ले, तीसरे दर्जे के मुसाफिर, जिस तरह पागलों की भाँति लोगों को धक्का देते, ठेलते, गाड़ी की ओर दौड़ पड़ते हैं उसी तरह मार मार शब्द करती हुई, अनेकानेक दुश्चिन्तायें, उनके मस्तिष्क को मन्थन करने लगीं। उन्हें याद आया, कि गत वर्ष, जब उन्होंने अपनी दूसरी कन्या का विवाह किया था, उस समय, यह दुतल्ला मकान बन्धक पड़ा था और अब पावनेदार का छः महीने का सूद बाकी है। दुर्गापूजा में अब महीने भर की ही देर है। मझले दामाद के यहाँ सामान भेजने पड़ेंगे। कल आठ बजे रात तक परिश्रम करने पर भी बैंक की रोकड़ न मिली, आज बारह बजने के पहले ही विलायती डांक से जमा खर्च उतार कर विलायत भेजना पड़ेगा। उसके अलावा, कल बड़े साहब का फर्मान निकला है कि मैले वस्त्र पहन कर कोई आफिस में घुसने न पायगा। जो आयगा उस पर जुर्माना किया जायगा। इधर गत सप्ताह से धोबी का पता नहीं है। घर के आधे से अधिक वस्त्र ले कर वह लापता हो रहा है।

गुरुचरण अब तकिये के सहारे बैठ न सके, हाथ का हुक्का ऊँचा कर उठ बैठे। मन ही मन बोले—"भगवान, इस कलकत्ते

में कितने ही मनुष्य तो नित्य प्रति घोड़ा, गाड़ी, मोटर प्रभृति से दब कर मर जाते हैं। वे क्या मुझसे भी बढ़ कर अपराधी हैं ? दयामय, तुम्हारी दया तो तब समझ में आवे जब कोई भारी मोटर-लौरी मेरी छाती को कुचलती हुई चली जाये।"

इसी बीच अन्नाकाली जल ला कर बोली–"बाबा, उठो, पानी लायी हूं।"

गुरुचरण उठ कर गिलास भर पानी एक ही श्वास में पी गये। फिर बोले–"आह ! जा बेटी गिलास ले जा।

उसके चले जाने पर गुरुचरण फिर लेट गये।

इसी समय ललिता उस कमरे में आ पहुंची। बोली–"मामा, चाय लायी हूं उठो।"

चाय का नाम सुन कर गुरुचरण फिर एक बार उठ बैठे। ललिता के चेहरे की ओर देख कर, मानो उनके हृदय की आधी जलन ठण्डी हो गयी। वे बोले–"सारी रात जागती रही है न ? आ, आ, मेरे पास आ कर बैठ।"

ललिता कुछ लज्जित होती हुई हंसकर बोली–"मैं रात में नहीं जागी हूँ, मामा !"

इस जीर्ण शीर्ण गुरुभारग्रस्त अकाल वृद्ध मामा के हृदय में छिपी हुई व्यथा, उससे अधिक उस गृहस्थी में और कोई न समझता था कोई उतना अनुभव भी न कर सकता था।

गुरुचरण ने कहा–"अच्छा, यहाँ मेरे पास आ कर बैठ।"

ललिता ज्यों ही उनके पास बैठी, त्यों ही गुरुचरण उसके

माथे पर हाथ रख कर, एकाएक बोल उठे-"यदि अपनी इस बेटी को किसी राजा के घर में ब्याह सकूँ, तो समझूँ कि मैंने भी एक काम किया।"

ललिता सर झुका कर चाय डालने लगी। वे कहने लगे-"अच्छा बेटी, अपने दुखिया मामा के घर आ कर तुझे भी दिन रात काम करना पड़ता है न ?"

ललिता ने उसी तरह सर झुकाये हुए ही कहा-"दिन रात काम क्यों करना पड़ेगा ? सभी तो काम करते हैं, मैं भी करती हूं।"

इस बार गुरुचरण हँसे । चाय पीते पीते बोले-"हाँ ललिता आज रसोई पानी का क्या प्रबन्ध हो रहा है ?"

ललिता ने सर उठा कर उनकी ओर देखते हुए कहा-"क्यों मैं रसोई करूंगी न ?"

गुरुचरण ने कुछ चकित हो कर कहा- 'तू रसोई करेगी ? बेटी ! क्या तू रसोई बनाना जानती है ?"

ललिता बोली-"हाँ मामा, मैं जानती हूं । मैंने मामी से सब सीख लिया है ।"

गुरुचरण चाय का प्याला ज़मीन पर रखते हुए बोले-"सच ?"

ललिता ने कुछ संकुचित होते हुए कहा-'सच ! मैंने कई बार रसोई बनायी है, मामी सब बता देती थीं," इतना कह कर उसने सर झुका लिया। उसके झुके हुए सर पर हाथ रख

कर गुरुचरण मन ही मन आशीर्वाद देने लगे। उनकी एक बड़ी भारी दुश्चिन्ता दूर हो गयी।

यह मकान सड़क पर ही बना था। चाय पीते पीते खिड़की की राह से उनकी दृष्टि बाहर की ओर जा पड़ी। गुरुचरण ने चिल्ला कर पुकारा—"शेखर, शेखर सुनो, सुन जाओ।"

पुकार सुन कर एक लम्बा चौड़ा बलिष्ट सुन्दर नवयुवक भीतर चला आया।

गुरुचरण ने कहा-"बैठो, आज सवेरे ही सवेरे अपनी चाची का समाचार तो सुना है न?

शेखर ने मुसकुरा कर कहा—"समाचार कैसा? लड़की हुई है, वही तो?"

गुरुचरण ने एक ठण्डी सांस ले कर कहा—"तुमने तो बहुत सीधे से 'यही तो' कह दिया पर यह यही तो क्या है, सो मैं ही समझता हूँ।"

शेखर ने कहा—"चाचा, ऐसी बात न कहो। चाची सुनेंगी तो उनके मन में बड़ा कष्ट होगा। इसके अतिरिक्त ईश्वर ने जो दिया है, उसे सादर ग्रहण कर प्रसन्न होना चाहिये। आनन्द मनाना चाहिये।"

कुछ देर तक चुप रह कर गुरुचरण ने कहा—"मैं भी जानता हूँ, कि प्रसन्न होना और आनन्द मनाना उचित है, पर बेटा! भगवान भी तो सुविचार नहीं करते मैं गरीब आदमी

हूं, मेरे घर में इतनी कन्याओं की क्या आवश्यकता है ? तुम तो जानते हो कि यह मकान भी तुम्हारे पिता के पास बन्धक पड़ा है। सो रहे पड़ा उसके लिये मुझे दुःख नहीं है, पर यह देखो, यह पिता मामा से हीन सोने की पुतली जैसी ललिता, इसका भी तो कोई प्रबन्ध होना चाहिये, यह राजा के घर में शोभा पाने योग्य है। किस तरह इसको जैसे तैसे के हाथों में सौंप दूँ ? राजा के राजमुकुट में जो कोहेनूर हीरा है, वैसे अनेकानेक कोहेनूर एकत्र कर यदि मेरी इस कन्या को वज़न किया जाये, तब भी इसका मूल्य नहीं होता। परन्तु, यह समझने वाला कौन है ? पैसे की कमी के कारण यह रत्न भी मुझे जैसे तैसे को दे देना पड़ेगा। बताओ तो सही, उस समय मेरे हृदय में कैसी चोट पहुंचेगी ? इसकी उम्र तेरह वर्ष की हो गयी पर मेरे हाथ में ऐसे तेरह पैसे भी नहीं हैं कि कहीं इसका सम्बन्ध स्थिर कर सकूं।"

कहते कहते गुरुचरण की दोनों आंखों में आंसू भर आये शेखर चुपचाप बैठा रहा। कुछ क्षण तक चुप रहने बाद, गुरुचरण फिर कहने लगे—शेखरनाथ, देखो बेटा यदि तुम्हारे दोस्तों में कोई ऐसा हो, जिससे इस कन्या का उद्धार हो सके तो थोड़ी चेष्टा करो, सुना है, कि आजकल बहुत से लड़के रुपये पैसे की ओर ध्यान नहीं देते केवल लड़की पसन्द होने पर ही विवाह कर लेते हैं। शेखर यदि ऐसा ही कोई मिल जाय तो मेरी जान बचे, मेरे आशीर्वाद से तुम भी राजा हो

जाओगे और क्या कहें बेटा, इस मुहल्के में तुम लोगों के आश्रय में ही बैठा हूं तुम्हारे पिता मुझे अपना छोटा भाई समझते हैं।"

शेखर ने सर हिला कर कहा—"अच्छा चेष्टा करूंगा।"

गुरुचरण ने कहा—"भूल न जाना और ललिता तो आठ वर्ष की अवस्था से तुम्हारे पास ही रह कर लिखना पढ़ना सीखती है, तुम भी तो देखते हो कि वह कितनी बुद्धिमती तथा कैसी सीधी सादी लड़की है। इतनी छोटी लड़की है पर आज से वही हम लोगों के लिये रसोई बनायेगी, खिलायगी—अब गृहस्थी मानो उसी के माथे है।"

इस समय ललिता ने एक बार सर उठा कर फिर झुका लिया उस के ओंठ कुछ चौड़े हो कर फिर ज्यों के त्यों सिकुड़ गये। गुरुचरण ने जोर से सांस छोड़ते हुए कहा—"उसके बाप ने क्या कम उपार्जन किया था परन्तु सब का सब इस तरह दान कर गये कि एक ही लड़की उस के लिये भी कुछ न रहा गया।" शेखर चुपचाप बैठा रहा, गुरुचरण कुछ क्षण बाद फिर बोल उठे—और यह भी कैसे कहूं कि कुछ न रह गया? उन्होंने जितने मनुष्यों का जितना दुःख दूर किया है उन सब का फल इसी पुतली को दे गये हैं नहीं तो क्या इतनी छोटी लड़की ऐसी अन्नपूर्णा जैसी मालूम होती। तुम्हीं बताओ शेखर, बात सच्ची है कि नहीं?"

शेखर हसने लगा उसने कोई उत्तर न दिया।

शेखर उठना ही चाहता था कि गुरुचरण ने पूछा—"आज इतना सवेरे सवेरे कहां चले हो ?"

"वैरिस्टर के घर जा रहा हूं—एक मुकद्दमा है," यह कह कर वह ज्यों ही उठा, त्यों ही गुरुचरण ने उसे एक बार और भी याद दिला देने के लिये कहा, "जो कहा है उसे स्मरण रखना, यह ज़रा साँवली है तो क्या हुआ पर ऐसी आंखें ऐसा मुंह, ऐसी हंसी ! इतनी दया माया, सारी पृथिवी में खोज आने पर भी किसी दूसरी लड़की में न मिलेगी।"

शेखर सर हिला कर हँसता हुआ बाहर चला गया। इस युवक की अवस्था पच्चीस छब्बीस वर्ष की होगी। एम० ए० पास कर अब तक प्रोफेसरी कर रहा था। गत वर्ष से एटर्नी हुआ है। उसके पिता नवीनराय ने गुड़ के व्यापार में लाखों रुपये उपार्जन किये हैं। अब वे लखपती कहलाते हैं। कई वर्ष से यह व्यवसाय छोड़ घर में बैठे आढ़त का काम कर रहे हैं उनका वड़ा लड़का अविनाश वकील है—छोटा यही शेखर नाथ है। उनका तितल्ला मकान मुहल्ले में सर ऊंचा किये खड़ा है और उसकी एक खुली छत से गुरुचरण के मकान की छत मिली रहने के कारण दोनों परिवारों में बड़ी घनिष्टता हो गयी है। इसी राह से दोनों घरों की स्त्रियां भी जाती आती हैं।

दूसरा परिच्छेद

श्यामबाजार में एक धनी परिवार था। बहुत दिनों से वहीं शेखर के विवाह की बात चल रही थी। उस दिन उस परिवार के कुछ मनुष्य लड़का देखने भी आये पर उनकी इच्छा थी कि आगामी माघ के महीने में ही बिवाह हो जाय और इसलिये वे उस दिन लग्न भी स्थिर कर जाना चाहते थे। परन्तु शेखर की माँ ने स्वीकार न किया, दासी के द्वारा बाहर कहला भेजा कि लड़का स्वयं जा कर जब बहू देख आयगा, तब विवाह होगा।

पर नवीनराय की दृष्टि केवल रूपये की ओर थी। उन्होंने अपनी स्त्री की इस झमेले की बात पर अप्रसन्न हो कर कहा—"यह कैसी बात है? लड़की तो देखी हुई हुई है, बात पक्की हो जाये, इसके बाद वाग्दान के दिवस लड़की अच्छी तरह देख ली जायगी।"

पर घर की मालकिन सहमत न हुईं उन्होंने बात पक्की न होने दी, उस दिन क्रोधित हो कर नवीनराय ने बहुत देर से भोजन किया और दिन के समय बाहर ही सोये। अन्य दिवस वे अपनी दिवानिद्रा अपने सोने वाले कमरे में ही पूरी करते थे।

शेखरनाथ जरा शौकीन मनुष्य था। तितल्ले के जिस कमरे में वह रहता था वह अच्छी तरह सजाया हुआ था। पाँच

छः दिन बाद एक दिन एक बड़े आइनेके सामने खड़ा होकर वह लड़की देखने को जाने के लिये वस्त्र पहन रहा था कि एकाएक ललिता वहाँ जा पहुँची। क्षण भर चुप चाप उसकी ओर देखती रही इसके बाद बोली--क्या बहू को देखने के लिये जा रहे हो?

शेखर ने चौंक कर पीछे की ओर देखा, बोला--"तुम आ गयीं! अच्छा एक बार खूब अच्छी तरह मुझे सजा तो दो, जिसमें बहू मुझे पसन्द कर ले।"

ललिता हँस पड़ी, बोली--अभी मुझे समय नहीं है--मैं रूपये लेने आयी हूं" इतना कह, उसने तकिये के नीचे से चाभी निकाल आलमारी की एक दराज खोली और उसमें से रूपये निकाल गिन गिन कर आँचल में बाँधने लगी। इस के बाद खूब धीमे स्वर में, मानो वह मन ही मन कुछ कह रही है बोली--रूपये तो आवश्यकता होने पर ही ले जाती हूं पर देखूं चुकते किस तरह हैं।"

शेखर ब्रश से एक ओर के केश को ऊपर उठा, घूम कर खड़ा हो गया और बोला--"चुकता होंगे या हो रहे हैं।"

ललिता कुछ समझ न सकी उस के मुंह की ओर देखने लगी।

शेखर बोला--"देख रही हो, समझ न सकीं।"

ललिता ने सर हिला कर--"नहीं।"

"जरा और भी बड़ी हो जाओ, तब समझोगी"--कह

कर शेखर जूता पहन बाहर चला गया ।

रात्रि के समय शेखर एक कोच पर चुपचाप सोया हुआ था कि उसकी माता उस कमरे में आ पहुंची। वह जल्दी से उठ बैठा; माँ वहीं एक चौकी पर बैठ गयी बोली—"लड़की कैसी है ? कैसी दिखाई देती है ?"

शेखर ने अपनी माँ की ओर देख कर हँसते हुए कहा—"अच्छी है।"

शेखर की माता का नाम भुवनेश्वरी है लगभग पचास वर्ष की अवस्था होगी। परन्तु उसके शरीर की गठन इतनी सुन्दर है कि देखने में वे पैंतीस छत्तीस वर्ष से अधिक उम्र की नहीं मालूम होती थीं। इसके अतिरिक्त इस सुन्दर आवरण के भीतर जो अद्भुत मातृ हृदय छिपा था, वह और भी नवीन और बहुत ही कोमल था। वे गांव की रहने वाली नहीं थी, गांव में जन्म हुआ था और वहां वे बड़ी भी हुई थीं, परन्तु शहर में आने पर एक दिन के लिये भी वे अन्यमनस्क न दिखाई दीं। शहर की चंचलता, सजीवता और आचार व्यवहार पर जिस तरह उन्होंने सहज में ही, अधिकार जमा लिया था; उसी तरह जन्मभूमि की निस्तब्धता आदि और माधुर्य को भी उन्होंने अपने से दूर न होने दिया था। शेखर अपनी इस मां को कितना मानता था। वे शेखर के लिये कितने गौरव का पदार्थ थीं,—यह शायद भुवनेश्वरी भी न जानती थीं, जगदीश्वर ने शेखर को कितने ही पदार्थ दिये थे। अनन्य

साधारण स्वास्थ्य, रूप, ऐश्वर्य, बुद्धि—सभी उसे मिले थे, परन्तु वह अपने को परम सौभाग्यशाली और ईश्वर की सर्व श्रेष्ठ कृपा का पात्र, इस लिये समझता था, कि इस माता के गर्भ से उसका जन्म हुआ था। वह इसे भी ईश्वर का सर्व श्रेष्ठ दान समझता था।

भुवनेश्वरी ने कहा—'अच्छी है' कहकर तू तो चुप हो गया!

शेखर, मुस्कुराकर, सर झुकाये हुये बोला—"तुमने जो पूछा था, वह बता दिया।"

माता भी हँसीं, बोलीं—क्या बता दिया? रंग कैसा है-खूब गोरा? किसके जैसा होगा? ललिता के जैसा?"

इस बार शेखर ने सर उठा कर कहा—"ललिता तो काली है, उससे बहुत साफ रंग है।"

"चेहरा मोहरा कैसा है?"

शेखर ने संकुचित होते हुए कहा—"बेजा नहीं है।"

भुवनेश्वरी बोलीं—"तो तुम्हारे पिता से कहूं?" इस बार शेखर ने कोई उत्तर न दिया, वह चुप हो कर बैठ गया।

क्षण भर चुप रहने बाद, एकाएक पुत्र के मुख की ओर देख कर भुवनेश्वरी बोल उठीं "अच्छा लड़की कुछ लिखना पढ़ना भी जानती है या नहीं।"

शेखर ने कहा—"यह तो पूछा नहीं।"

अत्यन्त चकित हो कर भुवनेश्वरी बोलीं—"पूछा क्या

नहीं ? जो आजकल तुम लोगों के लिये सब से आवश्यक पदार्थ है। उसी के विषय में नहीं पूछा—वही जान न आया ?"

शेखर ने हंस कर कहा—"नहीं, माँ, मैं तो भूल ही गया था।

इस बार भुवनेश्वरी बहुत ही विस्मित हो उठीं, कुछ देर तक वे चुपचाप अपने लड़के के चेहरे की ओर देखती रहीं, इसके बाद उन्होंने मुस्कुराते हुए पूछा—"तो क्या तू उससे विवाह न करेगा ?"

शेखर कुछ उत्तर देना ही चाहता था, परन्तु एकाएक ललिता को भीतर आते देख कर चुप रह गया, ललिता धीरे धीरे भुवनेश्वरी के पीछे आ कर खड़ी हो गई। उन्होंने बांयें हाथ से उसे अपने आगे की ओर खींच कर कहा—"क्यों बेटी ?"

ललिता धीरे धीरे बोली—"कुछ नहीं मां।"

ललिता पहले भुवनेश्वरी को मौसी कहती थी, परन्तु भुवनेश्वरी ने उसे मौसी कहने के लिये मना करते हुये कहा था—"मैं तेरी मौसी नहीं, मां हूं।" उसी दिन से ललिता भुवनेश्वरी को माँ कह कर पुकारती थी, भुवनेश्वरी ने इस समय उसे खींच कर अपने कलेजे से लगा लिया और प्यार करती हुई बोली—"कुछ नहीं ? तब केवल एकबार मुझे देखने के लिये आयी थी।"

ललिता ने कोई उत्तर न दिया। चुप हो रही।

शेखर ने कहा—"देखने आयी है, रसोई कब बनायेगी !"

भुवनेश्वरी बोली—"वह क्यों रसोई बनायगी ?

शेखर ने आश्चर्य से पूछा–तब रसोई कौन बनायगा ? उसके मामा तो उस दिन कहते थे कि ललिता ही रसोई पानी और घर के सब काम काज करती है।

भुवनेश्वरी हंस उठी। बोली–उसके मामा को क्या जो मन में आया कह दिया अभी उसका विवाह हुआ नहीं, उसके हाथ का खायगा कौन ? अपने रसोइये को भेज दिया है, वह उसकी रसोई बना आयगा। बहू हमलोगों के लिये रसोई बना रही है–मैं आज कल दिन के समय उसके यहां ही भोजन करती हूं।

शेखर समझ गया कि माता ने इस दुःखी परिवार का गुरुभार अपने हाथों में ही लिया है। उसने एक तृप्ति सूचक श्वास ली और चुप हो गया।

एक महीने बाद एक दिन सन्ध्या के समय शेखर अपने सोने वाले कमरे में पलंग पर चित्त हो कर पड़ा पड़ा कोई अंग-रेजी उपन्यास पढ़ रहा था। उसका जी भी पढ़ने में खूब लग गया था कि इसी समय ललिता उस कमरे में जा तकिये के बीच से चाभी निकाल जोर से हिलाती डुलाती शब्द करती हुई आलमारी खोलने लगी। शेखर ने किताब की ओर से दृष्टि हटाये बिना ही पूछा—क्या है ?

ललिता बोली–रुपये ले जाती हूं।

शेखर 'हूँ' कहकर फिर पढ़ने लगा। ललिता आँचल के कोने में रुपये बाँध उठ खड़ी हुई। आज वह खूब सज धज कर आई थी, उसकी इच्छा थी कि, शेखर देखे पर जब शेखर ने न देखा तब उसने कहा-'शेखर भय्या ! दस रुपये ले जाती हूं।'

शेखर ने "अच्छा" कह दिया, पर उसकी ओर देखा नहीं अब लाचार हो वह कभी यह चीज कभी वह चीज उठाने लगी वृथा ही देर करने लगी, परन्तु किसी तरह जब उसकी इच्छा पूरी न हुई तब वह धीरे धीरे वहां से बाहर निकल आई परन्तु निकल आने से भी काम न चला। उसे लौट कर फिर दरवाजे के पास जा कर खड़ी होना पड़ा, आज वह थियेटर देखने के लिये जाना चाहती थी।

वह जानती थी कि शेखर की आज्ञा लिये बिना वह कहीं जा नहीं सकती। किसी ने उससे यह कहा न था। क्यों किस लिये-यह सब तर्क वितर्क भी किसी दिन उसके मन में न उठा परन्तु जीवमात्र में ही जो एक स्वाभाविक सहज बुद्धि रहती है उसी बुद्धि ने उसे यह सिखा दिया था कि और लोग जो चाहें करें। जहां इच्छा हो जायें आवें, पर वह नहीं जा सकती। वह स्वाधीन नहीं है और मामा-मामी की अनुमति का मिल जाना भी उसके लिये यथेष्ट नहीं है, इसी लिये वह दरवाजे की ओट में खड़ी हो कर धीरे धीरे बोली—"हम लोग थियेटर देखने जाते हैं।"

उसकी धीमी आवाज शेखर के कानों में न लगी, अतः उसने कोई उत्तर भी न दिया।

अब ललिता ने कुछ ऊँचे स्वर में कहा–"मेरे लिये सब खड़े हैं न?

इस बार शेखर ने सुना, उसने किताब एक तरफ हटा कर कहा–'क्या है?"

ललिता ने कुछ रुष्ट भाव से कहा–"इतनी देर बाद कान में आवाज़ गयी। हमलोग थियेटर देखने जाते हैं?"

शेखर ने कहा—"हमलोग कौन?"

ललिता बोली—"मैं, अन्नाकाली, चारुबाला का भाई, उसका मामा……"

शेखर ने पूछा—"यह मामा कौन है?"

ललिता ने कहा—"उनका नाम गिरीन बाबू है। पांच छः दिन हुआ मुंगेर से यहां आये हैं, यहीं बी० ए० पढ़ेंगे—अच्छे आदमी हैं"—

शेखर ने सुनते ही व्यङ्ग से कहा–"वाह! नाम, धाम, पेशा, देखता हूं कि गहरा परिचय हो गया है, इस लिये पांच छः दिनों से आपके सर के केश भी न दिखाई दिये, क्यों खूब ताश खेला जाता था न?"

शेखर की बातों का ढंग देख कर ललिता एकाएक डर गयी। उसने यह सोचा भी न था कि ऐसा प्रश्न हो सकता है। अतः वह चुप रह गयी।

शेखर ने कहा—"कई दिनों से ताश खूब चलता था न ?"

ललिता ने मृदुस्वर में कहा—"चारु ने कहा है ?"

"चारुने कहा ? किसने कहा ? क्या कहा ?"—कह कर शेखर ने सर उठा कर, एक बार उसकी ओर देख कर कहा—"एक दम सज धज कर आयी हो–अच्छा, जाओ।"

पर ललिता गयी नहीं, वहीं चुपचाप खड़ी रही।

उसके मकान की बगल में ही चारुवालाका मकान था। वह ललिता की समवयस्का और सखी थी, ब्राह्म थी। गिरिन के अलाव अन्य सबको ही शेखर पहचानता था। पांच सात वर्ष पहले दो चार दिनों के लिये गिरीन यहां आया था। इतने दिनों तक वह बांकी पूर में पढ़ता था इसी लिये कलकत्ता आने की उसे आवश्वकता भी न पड़ी और वह आया भी नहीं। यही कारण था कि शेखर उसे पहचानता न था। अब तक ललिता को उसी तरह खड़ी देख कर शेखर ने कहा—"वृथा ही खड़ी क्यों हो, जाओ,"—इतना कह कर, उसने किताब अपने चेहरे के सामने लेली।

लगभग पांच मिनटों तक ललिता चुपचाप खड़ी रही। इसके बाद धीरे धीरे बोली—"जाऊँ ?"

शेखर बोला—"जाती क्यों नहीं हो ललिता ?"

शेखर का भाव देख कर ललिता की थियेटर जाने की इच्छा लुप्त हो गयी, परन्तु यदि वह न जाना चाहती तो भी काम न चलता।

बात यह तय हुई थी, कि आधा खर्च वह देगी और आधा चारु का मामा देगा।

चारु के यहां सभी उसकी राह देखते खड़े खड़े अधीर हो रहे थे और जितनी ही देर होती जाती थी उनकी अधीरता भी उतनी ही बढ़ती जाती थी—ये सभी बातें सभी काण्ड, मानों उस समय वहीं खड़े खड़े ही ललिता को दिखाई देने लगे, परन्तु बहुत कुछ सोचने पर भी उसे कोई उपाय न सूझ पड़ा। उसमें इतना साहस न था, कि अनुमति पाये बिना ही चली जाये, इसी लिये और भी दो चार मिनिटों तक उसी तरह चुप चाप खड़ी रहने बाद वह बोली, "बस आज भर के लिये......जाऊं?"

शेखर किताब एक ओर फेंक बिगड़ कर बोला—"तंग न करो, ललिता! बल्कि! तुम्हारी जाने की इच्छा हो जाओ, अपना भला बुरा समझने की तुम्हारी उम्र हो गयी है।"

ललिता चौंक उठी। शेखर की क्रोध भरी बातें सुनना, उसके लिये कोई नयी बात न थी, इसका उसे अभ्यास था, परन्तु इधर दो तीन वर्षों से ऐसा अवसर एक बार भी न आया था, उधर उसकी साथिने राह देख रही थीं, वह भी वस्त्र पहन एक दम तय्यार थी, इस बीच केवल रुपये लेने के कारण इस पर यह आफत आ पहुंची। वह मन ही मन सोचने लगी, कि उन्हें क्या उत्तर दूं, जो मेरी राह देख रहे हैं।

कहीं जाने आने के सम्बन्ध में, आज तक शेखर की ओर से उसे कभी बाधा न पड़ी थी, अबाध स्वाधीनता ही मिली हुई थी, इसी बात पर आज वह एक दम वस्त्र पहन कर वहीं गयी थी, अब वह स्वाधीनता ही इस दृढ़ भाव से नष्ट नहीं हो गयी, बल्कि जिस कारण से हुई, वह कितना लज्जाप्रद है, यह अपनी तेरह वर्ष की अवस्था में वह पहले पहल ही समझ सकी और इसी लिये वह मन ही मन बड़ी ही मर्माहत हो पड़ी। अभिमान से उसकी आंखों में आंसू भर आये, वह पांच मिनटों तक और भी वहां खड़ी खड़ी शेखर की किसी बात की राह देखती रही, इसके बाद अपने कमरे में जा कर उसने दासी भेज अन्नाकाली को बुला भेजा और उसके हाथ में दस रुपये देते हुए कहा—"काली, तुम लोग आज जाओ, मेरी तबियत ठीक नहीं है, चारु से कह दो, मैं आज न जा सकूंगी।"

काली ने पूछा– 'क्या तबियत ठीक नहीं है बहन ?"

"सर में दर्द है, बदन में दर्द है–बहुत तबियत खराब है" —कह कर वह बिछावन पर करवट बदल कर सो रही। इसके बाद चारु ने आकर बहुत कुछ समझाया, तंग किया, ममी से सिफारिश करायी, परन्तु किसी तरह भी ललिता को जाने के लिये राजी न कर सकी। अन्नाकाली के हाथों में दस रुपये मिल गये थे अतः वह जाने के लिये छटपटा रही थी, कहीं इस झमेले में सबका जाना ही न रुक जाये इसी भय से उसने चारु

को एकान्त में बुला कर रुपये दिखाते हुए कहा-"ललिता बहन की तबियत ठीक नहीं है, यदि वह नहीं ही जायगी तो क्या होगा ? मुझे रुपये दिये हैं, यह देखो, चलो हम लोग चलें। चारु ने समझा अन्नाकाली उम्र में छोटी रहने पर भी उसकी बुद्धि छोटी नहीं है। वह सम्मत हो उसे साथ लेकर चली गयी।

तीसरा परिच्छेद ।

चारुबाला की मा मनोरमा के लिये ताश खेलने से बढ़ कर और कोई प्रिय वस्तु नहीं थी। परन्तु खेलने की इच्छा जितनी थी उतना अच्छा खेलना वह नहीं जानती थी। उसकी यह त्रुटि ललिता सुधार देती थी। वह खूब अच्छा खेलती थी। मनोरमा का ममेरा भाई गिरीन जब से आया था तब से दो पहर के समय उसके यहाँ ताश का एक विराट फड़ जमता था। दो पहर से लेकर संध्यातक ताश खेला जाता था। गिरीन पुरुष था, वह अच्छा खेलता था, अतः उसके विपक्ष में बैठते समय मनोरमा का काम ललिता के बिना चलता ही न था।

थियेटर देखने जाने के दूसरे दिन जब समय पर ललिता न आयी तब मनोरमा ने दासी भेज कर उसे बुला भेजा। उस समय ललिता एक मोटी कापी पर एक अङ्गरेजी पुस्तक से कुछ अनुवाद कर लिख रही थी। अतः वह न गयी।

उसकी सखी बुलाने आयी पर वह भी कुछ कर न सकी अब लाचार हो. मनोरमा ने ललिता की लिखने की कापी और किताब इधर उधर फेंक दी और बोली—"बस अब उठ बड़ी होने पर तुझे जजी न करनी होगी बल्कि ताश ही खेलना पड़ेगा, चल।"

ललिता मन ही मन अत्यन्त दुःखित हुई उसने रोनी सी

सूरत बना कर कहा–"मैं आज किसी तरह भी न चल सकूंगी कल आऊंगी" पर मनोरमा ने कुछ न सुना। अन्त में उस की मामी से कहला कर उसे ले गयी अतः ललिता को आज भो वहां जाकर गिरीन के विपक्ष में बैठ ताश खेलना पड़ा परन्तु आज खेल जमा नहीं उसका ताश खेलने में जी नहीं लगा समूचा समय यों ही सा बीतने लगा अन्त में आज समय के पहले ही खेल उठ गया ललिता जब उठ कर अपने घर जाने लगी। तब गिरीन ने कहा—"कल रात में आपने रुपये भेज दिये पर स्वयं न गयीं चलिये कल फिर हमलोग थियेटर देखने चलें।

ललिता ने माथा हिलाते हुए मृदुस्वर में कहा—"नहीं मेरी तबियत ठीक न थी।"

गिरीन ने हँस कर कहा—"अब तो ठीक हो गयी है। चलिए कल चलना पड़ेगा।"

"नहीं नहीं, कल हमें फुर्सत न मिलेगी"—कह कर ललिता तेजी से वहां से चली गयी आज केवल शेखर के भय से ही उसका खेल में जी न लगा सो नहीं बलिक गिरीन के साथ खेलने, आज उसे स्वयं भी लज्जा मालूम होती थी।"

शेखर के मकान की भांति इस मकान में भी वह लड़कपन से ही आया जाया करती थी और घर की स्त्रियों की भांति ही सब के सामने जाती आती थी इसी लिये वह चारु के मामा के सामने भी जाती, और उनसे बातें भी करती थी। बातें

करने में तो उसे पहले से ही कोई संकोच न था। परन्तु आज ताश खेलते समय, गिरीन के सामने बैठने पर, उसका समूचा समय एक दूसरी ही चिन्ता में बीता। उसे केवल यही मालूम होता था कि इन कई दिनों के परिचय में ही गिरीन उसे कुछ विशेष प्रीति दृष्टि से देखने लगा है। इसके पहले उसने इस बात की कभी कल्पना भी न की थी कि पुरुषों की प्रीति दृष्टि इतनी लज्जा का विषय है।

अपने घर में एक बार सब से भेंट कर, वह तेजी से शेखर के कमरे में चली गयी। और एक दम अपने काम में लग गयी। लड़कपन से ही इस कमरे के छोटे छोटे काम उसे ही करने पड़ते थे। किताबें सजा कर रखना, टेबिल सजा देना, दावात कलम झाड़ पोंछ कर ठिकाने से रख देना—ये सभी काम यदि वह न करती, तो कोई दूसरा भी न करता था। छः सात दिनों तक न करने के कारण बहुत से काम इकट्ठे हो गये थे, उन्हें वह शेखर के आने के पहले ही निपटा देना चाहती थी और इसी लिये वह कमर कस कर काम में लग गयी थी।

ललिता भुवनेश्वरी को माँ कहती थी, अवसर मिलते ही उसके पास जा बैठती और वह स्वयं उस घर वालों को पराया न समझती थी इस लिये उसे भी कोई पराया न समझता था। अपने माँ-बाप के परलोक सिधार जाने के कारण आठ वर्ष की अवस्था में ही यह अपने मामा के घर में चली आयी थी। उसी समय से छोटी बहन की भाँति वह शेखर के आस–

पास घूमती और उस से ही लिखना पढ़ना सीखती थी।

सभी जानते थे, कि शेखर उसे अत्यन्त स्नेह की दृष्टि से देखता है। केवल इतना ही लोग न जानते थे कि वह स्नेह इस समय किस अवस्था में जा पहुंचा है. ललिता भी इस भेद को न जानती थी। लड़कपन से ही शेखर उसे इतना प्यार करता था, कि उसका कोई भी प्यार का व्यवहार, किसी की दृष्टि में अस्वाभावक न मालूम होता था और न उसका कोई व्यवहार किसी की दृष्टि आकर्षित करता था। साथ ही, यह भी समझ लेना चाहिये, कि उसका कोई व्यवहार यद्यपि किसी की दृष्टि आकर्षित न करता था, तथापि किसी को यह आशा भी न थी कि कभी ऐसा भी अवसर आयेगा, कि वह पुत्रवधू के रूप में उस घर में ग्रहण की जायगी। ललिता के घर में भी किसी को यह धारणा न थी और भुवनेश्वरी के मन में भी यह बात कभी उठी न थी।

ललिता ने सोच रक्खा था कि शेखर के आने के पहले ही काम खतम कर चली जाऊँगी, परन्तु अन्यमनस्क रहने के कारण वह घड़ी की ओर दृष्टि न रख सकी। एकाएक दरवाजे के पास ही उसने जूते का शब्द सुना और चौंक कर, वह उठ कर एक ओर, हट कर खड़ी हो गयी।

शेखर कमरे में घुसते ही बोला—"वाह! तब कल रात में कितनी रात गये लौटना हुआ?"

ललिता ने कोई उत्तर न दिया।

शेखर एक गद्दीदार आराम कुर्सी पर लेट गया और बोला—"कब लौटीं ? दो बजे ? या तीन बजे ? मुंह से बात क्यों नहीं निकलती ?"

ललिता उसी तरह चुपचाप खड़ी रही।

अब शेखर ने चिढ़ कर कहा—"नीचे जाओ, माँ बुला रही हैं।"

भुवनेश्वरी भण्डार घर के दरवाजे पर जलपान की तय्यारी कर रही थीं। ललिता ने पास जाकर पूछा "मुझे बुलाया है ?"

"नहीं तो" कह कर उन्होंने मुँह उठा कर ललिता के चेहरे की ओर देख कर कहा–"मुंह ऐसा सूख क्यों गया है ? मालूम होता है अभी कुछ खाया नहीं ?"

ललिता ने सर हिला दिया।

भुवनेश्वरी बोलीं—"अच्छा, जा अपने भैय्या को जलपान दे कर, मेरे पास आ।"

कुछ देर बाद जब जलपान ले कर ललिता ऊपर गयी तब उसने देखा, कि शेखर अब भी उसी तरह आँखें बन्द किये पड़ा है। आफिस की पोशाक भी नहीं उतारी है और हाथ पैर भी नहीं धोये हैं। उसके पास जाकर वह धीरे धीरे बोली—"जलपान लायी हूं।"

शेखर ने आँखें खोल कर देखा तक नहीं। उसी तरह बोला–"कहीं रख जाओ।"

ललिता ने रक्खा नहीं। हाथ में थाली लिये चुपचाप खड़ी रही।

न देखने पर भी शेखर समझ रहा था, कि ललिता गयी नहीं, खड़ी है। अतः दो तीन मिनिट तक चुप रहने बाद बोला—"कब तक खड़ी रहोगी ? मुझे अभी देर है, कहीं रख कर नीचे जाओ।"

ललिता चुपचाप खड़ी रहने पर भी मन ही मन रुष्ट हो रही थी। मृदु स्वर में बोली—"अच्छी बात है, देर है तो हो मुझे भी नीचे कोई काम नहीं है।"

इस बार शेखर ने आँखें खोल हँस कर कहा—"भला अब तो मुंह से बात निकली। नीचे काम भले ही न हो, उस मकान में तो है ? उसमें भी न हो, तो उसके बाद वाले मकान में होगा ही ? तुम्हारा मकान तो एक नहीं है ?"

"नहीं है।" कह कर क्रोधित हो, जलपान की थाली, टेबिल पर रख ललिता तेजी से कमरे के बाहर निकल गयी।

शेखर ने चिल्ला कर कहा, "सन्ध्या के बाद एक बार आना।"

"एक सौ बार मैं ऊपर नीचे नहीं कर सकती।" कह कर ललिता चली गयी।

नीचे आते ही भुवनेश्वरी ने कहा—"अपने भाई को जल-पान दे आयी पर पान देना तो भूल गयी !"

"मुझे अब भूख लगी है, मैं अब नहीं जा सकती, कोई दूसरा दे आयेगा।"—कह कर ललिता जोर से जमीन में बैठ गयी।

उसके रुष्ट मुख की ओर देख, हंस कर भुवनेश्वरी ने कहा, —"अच्छा, तू खा, दासी के हाथ भेज देती हूं।"

ललिता कोई उत्तर न देकर खाने को बैठ गयी।

वह थियेटर देखने न गयी, इतने पर भी शेखर उस पर रुष्ट हुआ। उसी पर क्रुद्ध हो, वह चार पांच दिनों से शेखर के सामने ही न गयी। अथवा जब वह आफ़िस चला जाता, तब दोपहर के समय जाकर, उस के कमरे के काम कर आती थी। शेखर अपनी भूल समझ गया था! इसी लिये, उसने दो दिन उसे बुला भी भेजा? पर वह गयी नहीं।
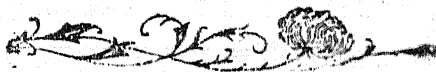
चौथा परिच्छेद ।

एक बुड्ढा भिखमंगा बहुत दिनों से इस मुहल्ले में भीख माँगने आता था। ललिता को उस पर बड़ी दया थी। जब वह आता तभी ललिता उसे एक रुपया देती थी। रुपया हाथ में मिळते ही वह कितने ही अपूर्व और असम्भव आशीर्वाद देने लगता था। ललिता को वे आशीर्वाद बहुत ही अच्छे मालूम होते थे। वह कहता "पूर्व जन्म में ललिता मेरी माँ थी क्योंकि ललिता को देखते ही उसने पहचान लिया था। ललिता के इसी बुड्ढे लड़के ने आज सवेरे ही सवेरे आकर जोर से पुकारा—"मेरी माँ कहां है ?"

पर आज अपनी सन्तान की पुकार सुन कर ललिता कुछ घबड़ा उठी। क्योंकि इस समय शेखर अपने कमरे में ही बैठा था। वह रुपया किसी तरह भी ला न सकती थी। इधर उधर देखती हुई वह अपनी-मौसी के पास जा पहुँची, पर वह भी इस समय दाई से झगड़ा कर, मुंह बना, रसोई कर रही थी। अतः उससे कुछ कहने का उसे साहस न हुआ। उसने आ कर नीचे की ओर देखा। उसका वृद्ध लड़का दरवाजे के सहारे आनन्द से बैठा हुआ था। आज तक ललिता ने कभी भी उसे निराश न किया था। आज खाली हाथ उसे लौटा देने में ललिता बहुत ही दुःखित होने लगी।

वह मनही मन कुछ सोच ही रही थी, कि उस वृद्ध साधु ने फिर हाँक लगाई। अन्नाकाली ने दौड़ते हुए आकर कहा—"बहन! तुहारा 'वही' लड़का आया है।"

ललिता बोली-"काली" एक काम करो। मेरा हाथ खाली नहीं है तू जल्द दौड़ कर उस घर में जा और शेखर भैया से माँग कर एक रुपया जल्दी से लेती आ।"

अन्नाकाली दौड़ती हुई चली गई। कुछ देर बाद उसी तरह दौड़ती हुई वह आ पहुंची और हाँफती हाँफती बोली—"यह लो।"

ललिता ने पूछा—"शेखर भैया ने कुछ कहा?"

अन्नाकाली ने कहा—"नहीं, कुछ नहीं, मुझे कहा, कि जेब में रुपये हैं निकाल लो, मैं ले कर चली आई।"

ललिता ने पूछा—"और कुछ न कहा?"

"नहीं, और कुछ नहीं"—कहकर अन्नाकाली सर हिलाती हुई खेलने को चली गई।

ललिता ने भिक्षुक को विदाकर दिया। आज अन्य दिवसों की भाँति आशीर्वाद सुनने में उसका जी न लगा-खड़ी होकर उसकी बातें उसने न सुनीं, अच्छी ही न लगीं।

इधर कई दिनों से ताश का खेल खूब जोरों में चल रहा था, पर आज दोपहर के समय ललिता न गई, सर दर्द का बहाना कर सो रही। आज सचमुच ही उसका चित्त अत्यन्त अनस्थिर हो रहा था। तीसरे पहर के समय उसने अन्नाकाली

को पुकार कर कहा "काली, तू क्या अब पढ़ने के लिये शेखर भैया के पास नहीं जाती?"

काली ने सर हिलाते हुए कहा—"हाँ जाती हूँ तो।"

ललिता ने व्यग्रता से पूछा—"वे मेरे बारे में भी कुछ पूछते हैं?"

काली बोली—"नहीं...हाँ हाँ, परसों पूछते थे, कि अब तुम दोपहर के समय ताश खेलने जाती हो या नहीं?"

ललिता ने उद्विग्न होकर पूछा—"तू ने क्या कहा?"

काली बोली—"मैंने वही कहा कि तुम दोपहर के समय चारु बहन के यहां ताश खेलने जाती हो। शेखर भैया ने पूछा —'कौन कौन खेलता है?' मैंने कहा—तुम चारु और उसका मामा। अच्छा बहन! तुम अच्छा खेलती हो या चारु बहन के मामा अच्छा खेलते हैं? उस दिन चारु की माँ तो यही कहती थी, कि तुम ही अच्छा खेलती हो, क्यों?"

ललिता ने इस बात का तो कोई जवाब न दिया एकाएक उसने चिढ़कर क्रोध भरे स्वर में कहा—"तू यह सब बात कहने क्यों गई? तुझे सब बातों में दखल देना ही चाहिये। अब मैं तुझे कभी भी कोई चीज़ न दूँगी।" इतना कह क्रोधित होती हुई तेजी से एक ओर चली गई।

अन्नाकाली उसका यह क्रोध देखकर अवाक् होगई। एकाएक इस भाव परिवर्तन का कारण वह कुछ भी समझ न सकी।

चौथा परिच्छेद

ललिता के न जाने के कारण मनोरमा का ताश खेलना दो दिनों से बन्द हो गया था। मनोरमा को पहिले से ही सन्देह हो रहा था कि गिरीन ने जब से ललिता को देखा है, तब से उसका मन उसकी ओर आकर्षित हो गया है। उसका यह सन्देह आज और भी दृढ़ हो गया।

इन दिनों गिरीन की उत्सुकता देखने ही योग्य थी। वह अत्यन्त अन्यमनस्क हो रहा था। संध्या के समय अब वह घूमने नहीं जाता। जब इच्छा होती तभी घर में घुस कर, इधर उधर देखता था। आज दोपहर के समय उसने मनोरमा के पास जाकर कहा, "बहन! क्या आज भी ताश न खेलोगी?"

मनोरमा ने कहा—"कैसे खेलूंगी। गिरीन! आदमी कहां है? तुम्हारी इच्छा हो, तो आओ, हम तीनों ही बैठ कर खेलें।"

गिरीन ने निरुत्साह हो कर कहा—"तीन आदमियों में क्या खेल होता है? उस मकान में रहने वाली ललिता को एक बार बुला भेजो न?"

मनोरमा बोली—"वह न आयेगी।"

गिरीन ने दुःखित होकर पूछा—"क्यों न आयेगी? शायद उस मकान वालों ने मना कर दिया है।"

मनोरमा ने कहा—"नहीं, उसके मामा मामी वैसे आदमी नहीं हैं। वह स्वयं नहीं आती।"

एकाएक गिरीन ने प्रसन्न होकर कहा—"तो तुम आज

स्वयं जाकर उसे बुला लाओ। जरूर आयगी" कह कर वह मनही मन आपही अन्यन्त संकुचित हो गया।

मनोरमा ने कहा—"अच्छा, जाती हूँ इतना कह कर वह चली गई और क्षण भर बादही ललिता को लिये आ पहुंची। फिर ताश का खेल आरंभ हुआ।

दो दिनों से खेल बन्द था। इस लिये आज थोड़ी ही देर में खूब जम गया ललिता का दल जीतने लगा।

दो घण्टे बाद एकाएक अन्नाकाली ने आकर कहा-"ललिता बहन! शेखर भैया बुला रहे हैं, जल्दी चलो।"

ललिता का चेहरा पीला पड़ गया। उसने ताश बांटना बन्द कर कहा—"शेखर भैया आज आफ़िस नहीं गये?"

"क्या जानूँ लोट आये होंगे"—कह कर अन्नाकाली चली गई।

ललिता ने ताश रक्खा मनोरमा की ओर देखकर संकुचित होते हुये कहा—"अब मैं जाती हूं।"

मनोरमा ने उसका हाथ पकड़ कर कहा—"यह क्या, दो बाजी और भी खेल लो।"

पर ललिता घबड़ा कर उठ खड़ी हुई। बोली-"नहीं चाची वे रंज होंगे।" इतना कह तेजी से वहां से चली आई?

उसके चले आने पर गिरीन ने पूछा—"यह शेखर भैया कौन हैं?"

मनोरमा—"बगल में बड़े फाटक वाला जो मकान है, वह उनका ही है।"

गिरीन ने चकित होते हुए कहा—"ओह! वह मकान! नवीन बाबू उसके कोई रिश्तेदार हैं।"

मनोरमा अपनी लड़की के मुंह की ओर देख, ज़रा हँस-कर बोली—"रिश्तेदार तो ऐसे हैं, जिनका कोई ठिकाना नहीं, ललिता के मामा का मकान तक हजम करने की फिक्र में बुड्ढा पड़ा है।"

गिरीन आश्चर्य से उसकी ओर देखता रह गया।

अब मनोरमा कहने लगी—"किसी तरह गत वर्ष रुपये न रहने के कारण गुरुचरण की मझली लड़की का विवाह न होता था, फिर गहरे सूद पर नवीन राय ने रुपये कर्ज देकर मकान को बन्धक रख लिया। यह रुपये कभी न पटेंगे, अन्त में उस मकान पर भी नवीन राय का ही अधिकार हो जायगा।"

सब बातें भली भांति कहने बाद मनोरमा ने अपनी सम्मति प्रकाशित की। बोली—"बुड्ढे की इच्छा है कि गुरुचरण का यह पुराना टूटा फूटा मकान तोड़कर अपने छोटे लड़के शेखर के लिये, एक बड़ा और बढ़िया मकान बनावे। दोनों लड़कों के अलग अलग मकान हो जायें, बात बेजा तो नहीं है।"

यह इतिहास सुन कर गिरीन के मन में कष्ट हो रहा था। उसने पूछा—"अच्छा बहन, गुरुचरण बाबू को तो और भी कई कन्यायें हैं। उनका विवाह किस तरह होगा?"

मनोरमा ने कहा—"अपनी कन्यायें तो हैं ही; तिस पर एक यह ललिता भी उनके गले आ पड़ी है। उसके बाप माँ नहीं हैं, अतः उसका भी सब भार इस गरीब पर ही है, ललिता भी बड़ी हो गयी है, इसी वर्ष उसका विवाह करना होगा। उन के समाज में ऐसा कोई सहायक भी नहीं है, जात से बाहर करना सब जानते हैं पर सहायता करना कोई नहीं जानता। हम लोग मजे में हैं, गिरीन?"

गिरीन ने कोई उत्तर न दिया चुप चाप बैठा रहा मनोरमा फिर कहने लगी—"उस दिन ललिता की बात उठी थी। उसकी मामी की आँखों से आँसू की धारा बहने लगी, बिचारी रो पड़ी—कैसे उसका विवाह होगा, कुछ पता नहीं लगता, उसकी चिन्ता में ही गुरुचरण बाबू को अन्न जल नहीं रुचता। अच्छा, गिरीन, मुँगेर में तुम्हारे ऐसे कोई इष्ट मित्र नहीं हैं, जो केवल लड़की देखकर ही विवाह कर लें, रुपये की ओर न देखें? ऐसी लड़की मिलना कठिन है।"

गिरीन ने दुःखित भाव से कहा—"इष्ट मित्र कहाँ मिलेंगे, बहन? पर मैं रुपये से सहायता कर सकता हूं।"

गिरीन के पिता डाकूर थे। उन्होंने बहुत रुपये आदि कितनी हो स्थावर सम्पत्ति उपार्जन की थी उनके मरने पर समस्त सम्पत्ति का अधिकारी गिरीन ही हुआ था।

मनोरमा ने पूछा—"तुम क्या रुपये कर्ज दोगे?"

गिरीन बोला—"कर्ज क्या दूंगा—उनकी इच्छा हो हाथ में आये, लौटा दें, नहीं तो नहीं सही।"

मनोरमा विस्मित हो उठी! बोली—"रुपया देकर तुम्हें क्या लाभ होगा? वे हम लोगों के रिश्तेदार भी नहीं समाज के मनुष्य भी नहीं हैं। इस तरह कौन किस को रुपया देता है।"

गिरीन अपनी बहन के चेहरे की ओर देख कर हँसने लगा कुछ देर बाद बोला—"यह ठीक है कि वह हमारे समाज के मनुष्य नहीं हैं, पर जाति के तो हैं, बंगाली तो हैं? उनको अत्यन्त आवश्यकता है, कमी है और मेरे पास आवश्यकता से अधिक है तुम एक बार उन से कहो, यदि वे लेना स्वीकार करें तो मैं देने को प्रस्तुत हूं। ललिता उनकी भी कोई नहीं है, हमारी भी—कोई नहीं है—न हो उसके विवाह का सब खर्च मैं ही दूँगा, विवाह तो हो जायगा।"

उसकी बातें सुन कर मनोरमा बहुत सन्तुष्ट हुई। यद्यपि इसमें उसका लाभ या हानि न थी तथापि एक मनुष्य एक दूसरे को इतने रुपये देता है। यह देख कर कितनी ही स्त्रियां विशेष कर प्रसन्न नहीं होतीं। उन के हृदय में एक प्रकार की ईर्षा उत्पन्न हो जाती है। पर मनोरमा प्रसन्न ही हुई।

अबतक चारु चुप चाप बैठी हुई थी। वह खुशी से उछल पड़ी बोली:—"हाँ मामा, मैं ललिता की मामी को कह आती हूं।"

उसकी माता ने डपट कर कहा—"चुप चाप बैठ, लड़कों को इन बातों में न पड़ना चाहिये। कहने की आवश्यकता होगी, तो मैं ही कहूंगी।"

गिरीन बोला—"तुम्हीं कहो। परसों राह में गुरुचरण बाबू से भेंट हुई थी, कुछ देर तक बातें भी हुई थीं। बातों से तो ऐसा ही मालूम हुआ कि बड़े सरल मनुष्य हैं। तुम्हारा क्या मन है?"

मनोरमा बोली—"मेरी भी यही राय है, और सभी यही कहते हैं। वे पति पत्नी दोनों ही बड़े सीधे सादे आदमी हैं। इसी लिये तो बड़ा दुःख होता है, कि ऐसे सज्जन मनुष्यों को भी घर द्वार छोड़ निराश्रय होना पड़ेगा। इन लोगों का व्यवहार तो देखो कि शेखर बाबू की पुकार सुनते ही ललिता ताश खेलना छोड़ कर चली गयी। मानो घर भर के मनुष्यों को उन लोगों ने खरीद लिया है पर कितनी ही खुशामद ये क्यों न करें, जब एक बार नवीन राय के फन्दे में जा फँसे हैं तब निकलना बड़ा ही मुश्किल है।"

गिरीन ने कहा—"बहन तब तुम उनसे पूछोगी न?"

"अच्छा पूछूँगी। यदि तुम्हारे द्वारा ही यह उपकार हो जाये तो और भी अच्छा है।" कह कह जरा हँसती हुई मनोरमा बोली—"अच्छा, तुम्हें इतनी क्या गरज पड़ी है।"

"गरज क्या बहन, दुःख में एक दूसरे की सहायता करना

चाहिये, और क्या ?" कह कर जरा लज्जित मुख से गिरीन वहां से उठ कर चला गया। दरवाजे पर से ही फिर भीतर लौट आया और मनोरमा के पास आकर बैठ गया।

मनोरमा ने पूछा—"लौट क्यों आये ?"

गिरीन ने हँसते हुए कहा—"इतनी बाते हो गयीं न? सम्भव है कि इन में सभी सत्य न हों।"

मनोरमा ने विस्मित होकर पूछा—"क्यों ?"

गिरीन ने हँस कर कहा—"ललिता जिस तरह रुपये खर्च करती है, उस तरह गरीब आदमी नहीं खर्च कर सकते बहन! उस दिन हम लोग थियेटर देखने गये वह स्वयं न गयी, इतने पर भी उसने दस रुपये अपनी बहन के हाथ भेज दिये। चारु से पूछो कि वह कितना खर्च करती है। महीने में पचीस तीस रुपये तो उस के हाथ खर्च को चाहिये।"

मनोरमा को विश्वास न हुआ।

चारु बोली—"सच्ची बात है मां। पर वह सब शेखर बाबू के रुपये हैं। आज ही नहीं! लड़कपन से ही ललिता अपने शेखर मामा की आलमारी खोल कर रुपये ले आती है—कोई कुछ नहीं कहता।"

मनोरमा ने कुछ सोच कर कहा,—"क्या जानूँ? परन्तु यह बात भी ठीक है, कि लड़के उस बुड्ढे की तरह चमार नहीं हैं। उन सब ने माता का 'गुण' पाया है। इसी लिये, उनमें दया धर्म दिखाई देता है। इसके अतिरिक्त ललिता खूब

चतुर लड़की है, लड़कपन से ही शेखर के पास रहती है, उसे भाई कहती है, इसी लिये सब उसे बहुत मानते भी हैं। हां चारु, तू तो जाती आती है। शेखर का तो इसी माघ महीने में विवाह होगा न ? सुना है, बुड्ढे को खूब रुपये मिलेंगे।"

चारु बोली,—"हां मां ! इस माघ में ही होगा—सब ठीक हो गया है।"

—:*:—

पांचवां परिच्छेद।

गुरुचरण ऐसे मनुष्य थे, कि सभी अवस्था के मनुष्य उनसे बिना किसी संकोच के बातें कर सकते थे। अतः दो चार दिनों की भेंट में ही उनसे और गिरीन से एक स्थायी सख्यता हो गयी, गुरुचरण में चित्त या मन की दृढ़ता बिलकुल ही न थी, इस लिये तर्क वितर्क करना उन्हें जितना ही अच्छा मालूम होता था, उसी तरह तर्क वितर्क में हार जाने पर उनके मन में कुछ असन्तोष या दुःख भी न होता था।

सन्ध्या के बाद चाय पीने का निमंत्रण उन्होंने सदा के लिये गिरीन को दे दिया था आफ़िस से लौटते लौटते ही संध्या हो जाती थी। हाथ मुंह धो कर तैयार होते ही गुरुचरण बाबू ललिता को पुकार कर कहते—"ललिता ! चाय तय्यार है ? काली, जा अपने गिरीन मामा को तो बुला ला।"

इसके बाद दोनों ही एकत्र बैठ कर चाय पीने और अनेक विषयों पर बातें और तर्क वितर्क करते थे।

ललिता किसी किसी दिन चुपचाप अपने मामा के पीछे बैठ कर उन दोनों की बातें सुनती थी। जिस दिन वह बैठती उस दिन गिरीन का उत्साह दूना हो जाता तर्क वितर्क में एक विचित्र शक्ति आ जाती थी। बातें विशेष कर वर्त्तमान समाज के विरुद्ध ही होती थीं। समाज की हृदयहीनता, असंगत उपद्रव तथा अत्याचार-इन्हीं विषयों की आलोचना होती थीं।

एक तो बात सच्ची रहने के कारण विरुद्ध बोलने का कुछ रहता ही न था दूसरे गुरुचरण के दुःखित उत्पीड़ित अशान्त हृदय से गिरीन की बातें बहुत कुछ मिलती थीं। इसी लिये, अन्त में वे सर हिलाते हुए कहते—"ठीक कहते हो गिरीन। किसकी इच्छा नहीं होती कि अपनी लड़कियों का यथा समय अच्छे स्थान में विवाह करे। परन्तु करे किस तरह? समाज का कथन है, कि लड़की की अवस्था विवाह योग्य हो गयी, अब इसका विवाह करो पर उसका प्रबन्ध तो समाज कर नहीं सकता। मेरी ही अवस्था देख लो मकान तक बन्धक पड़ गया है,दो दिन बाद ही लड़कों का हाथ पकड़ जंगल की राह पकड़नी पड़ेगी, उस समय समाज के मनुष्य यह कदापि न कहेंगे, कि आओ मेरे यहां आ कर रहो, क्या कहते हो?"

गिरीन चुप बैठा रहा गुरुचरण आप ही फिर कहने लगे "एक दम सच्ची बातें हैं। इस समय जैसी अवस्था है, उस-

से समाज में रहने की अपेक्षा परधर्म ग्रहण करना ही मंगल जनक है। खाने को मिले या न मिले, पर शान्ति से रहने में तो आयगा,जो समाज दुःखिये का दुःख नहीं समझता,विपत्ति में सहायता नहीं करता केवल आँखे लाल लाल कर गला दबा देने की चेष्टा करता है, वह समाज हमारा नहीं है, हम सरीखे गरीबों के योग्य भी नहीं है—यह समाज बड़े आदमियों का है। अच्छी बात है, वे ही रहैं, हमारी आवश्यकता नहीं है" कह कर गुरुचरण एकाएक चुप हो जाते आर कुछ सोचने लगते थे।

ललिता इन बातों को केवल सुनती ही न थी, बलिक रात में बिछावन पर सोती सोती तब तक इन पर विचार किया करती जब तक उसे नींद न आ जाती थी। प्रत्येक बात उसके हृदय पटल पर गम्भीर भाव से अंकित हो जाती थी। वह मन हीं मन कहती—इसमें सन्देह नहीं कि गिरीन बाबू की बातें यथार्थ और न्याय-संगत हैं।

अपने मामा को वह बहुत प्यार करती थी। उसी मामा के पक्ष में गिरीन जो कुछ कहता वह सभी उसे निर्मूल और साफ मालूम होता था। वह यह भी समझती थी, कि उसके मामा विशेष कर उसके लिये ही इतने व्याकुल रहते हैं खाना पीना छोड़ देते हैं, बलिक उसी को आश्रय देने के कारण उनको इतना कष्ट हो रहा है। परन्तु क्यों? क्या विवाह न होने के कारण उन्हें जाति च्युत होना पड़ेगा। आज यदि मेरा

विवाह हो जाये और चार दिन बाद ही विधवा हो कर लौट आऊं, तब तो जाति-च्युत नहीं होना पड़ता। इन दोनों बातों में अन्तर क्या है? गिरीन की इन बातों की प्रतिध्वनि वह अपने भावातुर हृदय से निकाल बारम्बार उन पर आलोचना करती हुई सो जाती थी।

जो कोई उसके मामा का पक्ष लेता, उनका दुःख समझता, उनके दुःख में सहानुभूति दिखाता, ललिता उसकी अत्यन्त श्रद्धा करती थी, उसके मन के साथ ललिता अपना मन अवश्य ही मिला देती थी। इसी लिये, वह गिरीन पर आन्तरिक श्रद्धा करने लगी थी।

धीरे धीरे गुरुचरण की भांति वह भी चाय पीने का समय आने की राह देखने लगी।

पहले गिरीन ललिता को 'आप' कहता था, पर गुरुचरण ने मना करते हुए कहा—'उसे आप क्यों कहते हो? तुम कहा करो," उसी समय से गिरीन ने भी उसे तुम कहना ही आरम्भ किया।

एक दिन गिरीन ने पूछा—"ललिता तुम चाय नहीं पीतीं?"

ललिता ने सर नीचा कर हिला दिया। गुरुचरण ने कहा—"उसके शेखर भैया ने मना किया है। उसके मतसे लड़कियों को चाय न पीनी चाहिये।"

ललिता यह भी समझ गयी कि चाय न पीने का कारण सुन कर गिरीन प्रसन्न न हुआ।

आज शनिवार था। आज सभा भङ्ग होने में अन्य दिनों की अपेक्षा बिलम्ब होता था।

सब कोई चाय पी चुके थे। आज गुरुचरण की आलोचना प्रमालोचना में विशेष उत्साह न था। वे कुछ अनमने से हो रहे थे।

इसी बात को लक्ष्यकर गिरीन ने पूछा—"मालूम होता है कि आज आपकी तबियत अच्छी नहीं है।"

गुरुचरण ने अपने मुंह के पास से हुक्का हटा कर कहा—"क्यों? तबीयत तो अच्छी है।"

गिरीन ने तब कुछ संकोच से कहा—"तब आफिस में क्या कुछ........."

"नहीं, सो भी नहीं," कह कर गुरुचरण चकित दृष्टि से गिरीन का मुंह देखने लगे। अब तक यह सरल मनुष्य यह न समझ सका था कि उसके मनका उद्वेग बाहर भी प्रकाशित हो रहा है।

ललिता पहले एकदम चुप बैठती थी, पर अब कभी कभी बीच में एकाद बात बोल देने लगी। आज भी अपने मामा का उत्तर सुन कर वह बोली—"हां मामा आज तुम कुछ चिन्तित दिखाई देते हो।"

गुरुचरण ने हंस कर कहा,—"हां बेटी! तूने ठीक पहचाना है, आज सच ही मैं कुछ चिन्तित हो रहा हूं, मन अशान्त हो रहा है।"

ललिता और गिरीन, दोनों ही उनके चेहरे की ओर देखने लगे।

गुरुचरण ने कहा—"नवीन भैया ने सब जानते हुए भी आज खड़े खड़े कितनी ही कड़ी बातें कह सुनायीं, उनका भी क्या दोष है, छः महीने हो गये, पर सूद का एक पैसा भी अब तक न दे सका—असल तो दूर की बात है।"

सुनते ही ललिता इस बात को दबा देने की चेष्टा करने लगी। कहीं उसके सरल हृदय मामा अपने घर की छिपी हुई बातें न कह डालें, दूसरे के सामने उसे व्यक्त न कर दें, इसी भय से वह जल्दी से बोल उठी—"तुम इस विषय में कुछ चिन्ता न करो, वह पीछे हो जायगा।"

परन्तु इतने पर भी गुरुचरण सम्हल न सके। बल्कि दुःखित भाव से उन्होंने हंस कर कहा—"पीछे क्या होगा बेटी? गिरीन? यह लड़की सदा यही सोचा करती है कि उसके मामा चिन्तित न रहें, परन्तु ललिता! बाहर के मनुष्य तो तेरे दुःखी मामा के दुःख की ओर देखना भी नहीं चाहते।"

गिरीन ने पूछा—"नवीन बाबू ने आज क्या कहा?"

ललिता यह नहीं जानती थी, कि गिरीन को सब बातें मालूम हैं, इसी लिए उसके प्रश्न को असंगत समझ कर वह मन ही मन अत्यन्त क्रोधित हो उठी।

गुरुचरण ने अब सब बातें स्पष्ट कह दीं। बोले—"नवीन राय की स्त्री को बहुत दिनों से अजीर्ण रोग हो गया है। अब

रोग कुछ बढ़ गया है, इस लिये वे दवा करने और आबहवा बदलने के लिए बाहर जाने वाली हैं। अतः रुपयों की भी आवश्यकता है। इस समय नवीन राय को सूद की समूची रक़म तथा असल में से भी कुछ देना होगा।"

कुछ क्षण तक स्थिर रहने बाद धीरे धीरे गिरीन ने कहा—"एक बात कई दिनों से आपसे कहने की इच्छा रहने पर भी अभी तक कुछ कह न सका। यदि आप बुरा न मानें तो मैं कहूं।"

गुरुचरण हंस कर बोले—"मुझे कोई भी बात करने में कभी कोई संकोच नहीं होता। कौन बात है, गिरीन?"

गिरीन ने कहा—"बहन से सुना है कि नवीन राय ने आपसे सूद अधिक लिया है, इसीसे कहता हूं कि मेरे रुपये तो यों ही पड़े हैं, किसी काम में नहीं लगते और नवीन राय को आवश्यकता है, अतः यदि आपकी इच्छा हो तो उनके रुपये उन्हें दे डालें।"

ललिता और गुरुचरण दोनों ही चकित होकर गिरीन के चेहरे की ओर देखने लगे। गिरीन बड़े संकोच से कहने लगा, "मुझे अभी रुपयों की कोई विशेष आवश्यकता नहीं है, इस लिए जब सुबीता हो, तब आप उन्हें लौटा दें। उन्हें जरूरत है, इसी लिये, कहता हूँ कि ......

गुरुचरण ने कहा—"सब रुपये तुम दोगे?"

गिरीन ने माथा झुका कर कहा—"अच्छी बात है, उनका भला होगा तो......"

गुरुचरण कुछ उत्तर दिया ही चाहते थे, इसी समय अन्नाकाली दौड़ती हुई वहां आ पहुंची, बोली—"बहिन जल्दी—शेखर भैया ने वस्त्र बदल कर तैयार होने को कहा है, थियेटर देखने जाना होगा—" कह कर जिस तरह वह हांफती घबड़ाती आयी थी, उसी तरह लौट गयी। उसको देख कर गुरुचरण हँस पड़े। ललिता ज्यों की त्यों स्थिर बैठी रही।

क्षण भर बाद ही अन्नाकाली लौट कर फिर आ पहुँची। बोली—"क्यों, उठी नहीं, हम सब तुम्हारी राह देख रहे हैं न?"

इतने पर भी ललिता ने उठने का कोई भी भाव न दिखाया वह अन्त तक सब बातें सुन लेने बाद जाना चाहती थी परन्तु गुरुचरण ने अन्नाकाली के चेहरे की ओर देख, जरा मुसकुरा, ललिता के सर पर एक हाथ रख कर कहा—"फिर जा बेटी, वृथा देर क्यों करती है, मालूम होता है कि सब कोई तेरी राह देख रहे हैं।"

लाचार ललिता को उठना ही पड़ा। परन्तु जाने के समय गिरीन के मुंह की ओर देख, एक गम्भीर और कृतज्ञ दृष्टि डाल, वह धीरे धीरे चली गयी, गिरीन ने उसे अच्छी तरह लक्ष्य किया।

लगभग दस मिनिट में वस्त्र बदल कर, पान देने के बहाने

ललिता एक बार फिर चुपचाप बैठकखाने में आ पहुँची।

गिरीन चला गया था। गुरुचरण एक मोटी तकिया पर सर रख कर आखें बन्द किये पड़े थे, उनकी बन्द आंखों के कोनों से आंसू की बून्दें बह रही थीं उनका ध्यान भंग न किया जिस तरह पैर दबाती हुई चुपचाप आयी थीं, उसी तरह चुपचाप चली गयीं।

कुछ देर बाद जब वह शेखर के कमरे में जा पहुंची, उस समय उसकी भी दोनों आखें जल से भर रही थीं। उस समय अन्नाकाली वहां न थी, वह सबके पहले गाड़ी में जा बैठी थी। अकेला शेखर अपने कमरे के बीच में खड़ा खड़ा मालूम होता है कि ललिता की हा राह देख रहा था। उसने ज्यों ही ललिता की ओर दृष्टि डाली, त्यों ही उसकी आँसुओं से भरी आँखों पर उसकी दृष्टि जा पड़ी।

आठ दस दिनों से ललिता उसे दिखाई न दी थी। इस लिये वह उस पर अत्यन्त क्रोधित हो रहा था, परन्तु इस समय वह अपना क्रोध भूल गया और उद्विग्न होकर बोल उठा, "यह क्या? रो रही हो?"

ललिता ने सर झुका कर जोर से हिला दिया।

कई दिनों से ललिता उसे दिखाई न दी थी, इस लिये उस के मन में एक प्रकार का परिवर्तन हो रहा था। इसी लिये, उसने ललिता के पास जा दोनों हाथों से उसका चेहरा पकड़

कर ऊपर उठा दिया और बोला—"सच ही तुम तो रो रही हो क्या हुआ है ?"

अब ललिता अपने को सम्हाल न सकी। वहीं बैठ गयी और आँचल से अपना मुंह छिपा कर रोने लगी।

छठवां परिच्छेद।

नवीन राय ने सूद और असल सब जोड़ कर, पाई पाई अदा कर दिया। इसके बाद मकान का किवाला लौटाते हुए बोले— "अच्छा रुपये किसने दिये ?"

गुरुचरण ने नम्र भाव से कहा—"भाई साहब, यह न पूछिये। बताने की आज्ञा नहीं है।

बात यह थी, कि रुपये मिलने पर भी नवीन राय सन्तुष्ट न हुए—इसकी तो उन्हें आशा भी न थी, कभी इच्छा भी न थी। वल्कि वे बराबर यही सोचा करते थे कि किस तरह यह अवसर हाथ आये कि वह मकान तोड़ फिर नये सिरे से बड़ा मकान बनवायें। यही उन्होंने स्थिर कर रखा था। और इसी व्यंग से बोले,"हाँ अब तो जरूर ही आज्ञा न होगी। भाई दोष तुम्हारा नहीं; मेरा है। रुपये मागना ही पाप हो गया। इसी को तो कलिकाल कहते हैं।"

गुरुचरण ने अत्यन्त दुःखित और व्यर्थत भाव से कहा—

"यह कैसी बात कहते हैं! अभी तो आपके रुपयों का ऋण ही मैंने चुकाया है परन्तु आपकी दया का ऋण तो चुकता न कर साक।"

नवीन हँस पड़े। वे अच्छे आदमी थे। इन बातों पर ही उनका विश्वास होता तो गुड़ बेच कर वे इतने रुपये एकत्र न कर सकते। इसी लिये वे बोले—"यदि ऐसा ही सोचते तो इस तरह मेरे रुपये अदा न कर जाते, यदि एकबार तकाज़ा ही किया था, तो कौन सी बेजा बात की थी। तुम्हारी भौजाई बीमार है इस लिये कहना भी पड़ा था, अपने लिये न कहा था। अच्छा अब किस सूद पर मकान बन्धक रक्खा।"

गुरुचरण ने सर हिलाते हुए कहा—"बन्धक नहीं रखा सूद के विषय में भी कोई बात तय नहीं हुई।"

नवीन राय को विश्वास न हुआ। बोले—"बन्धक नहीं रखा—खाली हाथ!"

गुरुचरण ने नम्र भाव से कहा—"हां, भाई साहब; ऐसा ही। लड़का बड़ा सज्जन है, उसमें बड़ी दया है।"

नवीन राय चौंक पड़े बोले—"लड़का, लड़का कौन?"

इस प्रश्न का फिर गुरुचरण ने कोई उत्तर न दिया। वे चुप रह गये जो कुछ उन्होंने कह डाला था वह कहना भी उन्हें उचित न था।

नवीन राय ने गुरुचरण का मनोभाव समझ हंस कर कहा—"जब मना ही है तब कहने की जरूरत नहीं है, परन्तु

संसार का बहुत सा उलट फेर देखा है इसी कारण से साव-धान कर देता हूँ, कि भाई वे चाहे कोई भी हों, इस तरह तुम्हारी भलाई करते करते, कहीं अन्त में डुबो न दें।"

इस बात का गुरुचरण ने कोई उत्तर न दिया और किवाला हाथ में ले अपने मकान पर लौट आये।

प्रति वर्ष ही भुवनेश्वरी इस समय कुछ दिनों के लिये वायु परिवर्त्तन के लिये पश्चिम जाती थी। उनके अजीर्ण रोगमें इससे बहुत कुछ लाभ होता था। रोग भी कुछ अधिक न था पर अपना काम बनाने की इच्छा से नवीन राय ने कुछ बढ़ा कर कहा था। जो हो यात्रा की तय्यारियां हो रही थी।

उस दिन सबेरे ही एक कपड़े के खूबसूरत बेगमें शेखर अपने विलास द्रव्य सजा सजा कर रख रहा था। इसी समय अन्ना काली ने वहाँ जाकर कहा—"शेखर भैया! तुम ि ाग तो कल जाओगे न?"

शेखर ने उसकी ओर देख कर कहा—"काली, अपनी ललिता बहन को जल्दी बुला दे, क्या साथ ले जायगी, क्या नहीं; सो बता जाये, दे जाये।"

शेखर समझता था कि हरसाल ललिता मां के साथ जाती है, इस बार भी जायगी।

अन्नाकाली इठलाती हुई बोली—"इस बार तो ललिता बहिन न जायगी।"

नाक्यों शेखर ने कहा—"ज यगी?"

काली बोली—"वाह ! कैसे जायगी। माघ फागुन में उसका विवाह होगा। बाबा उसके लिये वर खोजने की चेष्टा कर रहे हैं।"

शेखर टकटकी लगा, चुप हो कर उसका चेहरा देखता रहा।

काली ने अपने घर में जो कुछ सुना था, वह सभी बड़े उत्साह से कहने लगी। बोली—"गिरीन बाबू कहते हैं कितना भी रुपया क्यों न लगे, लड़का अच्छा मिलना चाहिये। बाबा आज भी आफिस न जायेंगे, अभी खा पी कर कहीं लड़का देखने जायेंगे। साथ में गिरीन बाबू भी जायेंगे।"

शेखर स्थिर भाव से उसकी बातें सुनने लगा और अब ललिता क्यों अधिक नहीं आना चाहती, इसका कारण भी मन ही मन समझने लगा।

काली कहने लगी—"गिरीन बाबू बड़े अच्छे आदमी हैं। बहन के विवाह के समय यह मकान चाचा के पास बन्धक रखा गया था। बाबा कहते थे कि दो तीन महीने बाद हम लोगों को यह मकान छोड़ चले जाना पड़ेगा। भीख मांगना होगा। इसीसे गिरीन बाबू ने वे रुपये दिये हैं, कल चाचा को बाबा ने सब रुपये दे दिये। ललिता बहन कहती थी, कि अब डर की कोई बात नहीं है। क्या यह सच्ची बात है शेखर भैया !"

शेखर कोई उत्तर न दे सका। उसी तरह अन्नाकाली की ओर देखता रहा।

काली ने पूछा—"क्या सोचते हो शेखर भैया?

इस बार शेखर चौंक पड़ा। जल्दी से बोल उठा—"कुछ नहीं। काली, अपनी ललिता बहन को ज़रा जल्दी से भेज दे। कहना मैं बुला रहा हूं। जा जल्दी जा।"

काली दौड़ती हुई चली गयी।

शेखर उस खुले हुए बेग की ओर देखता हुआ चुपचाप बैठा रहा। उसे किस पदार्थ की आवश्यकता है और किस की नहीं, कुछ भी समझ में न आने लगा।

शेखर की बुलाहट सुन कर ललिता ऊपर आयी। पहिले उसने खिड़की से आकर देखा। शेखर अब भी उसी तरह चुपचाप बैठा हुआ स्थिर दृष्टि से खुले हुए बेग की ओर देख रहा था। इसके पहले उसने शेखर का मुख भाव ऐसा कभी न देखा था। ललिता को कुछ आश्चर्य हुआ। वह कुछ डर भी गयी। धीरे धीरे वह शेखर के पास जा पहुंची। उसे देखते ही "आओ" कह कर शेखर उठ खड़ा हुआ।

ललिता ने बहुत ही कोमल स्वर में पूछा-"मुझे बुलाया है?"

'हां'—कह कर शेखर कुछ देर तक स्थिर दृष्टि से उसकी ओर देखता रहा। इसके बाद बोला—"कल सवेरे की गाड़ी से ही मैं मां को साथ ले पश्चिम जाऊंगा। सम्भव है कि

इस बार लौटने में देर हो। यह चाभी लो तुम्हारे खर्च के रुपये आलमारी में रखे हैं।"

ललिता भी सदा साथ जाया करती थी। गतबार उसने बड़े उत्साह से इस अवसर पर कपड़े लत्ते सजा सजा कर बक्स में भरे थे। इस बार वह काम शेखर अकेला कर रहा है। उस खुले हुए बेग की ओर देखते ही यह बात ललिता को याद आ गयी।

शेखर ने उसकी ओर से मुंह फेर कर एक बार खाँस कर गला कुछ साफ़ करते हुये कहा—"सावधान रहना ओर यदि कोई विशेष आवश्यकता आ पड़े तो भाई साहब से पता पूछ कर पत्र लिखना।"

इसके बाद दोनों ही चुप हो गये। यह जान कर ललिता बहुत ही लज्जित और संकुचित हुई कि इस बार शेखर भैया के साथ वह न जायगी और न जाने का कारण भी शेखर को मालूम हो गया है।

एकाएक शेखर ने कहा—"अच्छा अब जाओ मुझे ये चीजें सजा कर रखनी होंगी। देर हो गई है आज एक बार आफ़िस भी जाना पड़ेगा।"

ललिता उस खुली हुई बेग के सामने घुटने टेक कर बैठ गई। बोली—"तुम जाकर स्नान करो मैं ये चीजें रख देती हूं।"

"यह तो बड़ी अच्छी बात है।" कह कर शेखर ने चाभियों का गुच्छा ललिता के सामने फेंक दिया। इसके बाद वह

कोठड़ी के बाहर निक आया। फिर एकाएक कुछ सोच कर दरवाजे के पास जा खड़ा हुआ और बोला–"मुझे किन चीजों की जरूरत पड़ती है, सो याद तो है?"

ललिता सर झुका कर मेज की चीजों की जाँच करने लगी। उसने कोई उत्तर न दिया।

शेखर ने नीचे जाकर, अपनी माता से ललिता के विषय में पूछा। मालूम हुआ कि काली ने जो कुछ कहा है, वह सभी सच है। गुरुचरण ने रुपये चुका दिये यह भी सत्य है। उन्हें ललिता के लिये पात्र स्थिर करने की चेष्टा हो रही है–यह भी सत्य है। वह फिर कुछ अधिक न पूछकर स्नान करने चला गया।

लगभग दो घण्टे बाद जब वह स्नान भोजन से निश्चिन्त हो, आफिस की पोशाक पहनने के लिये अपने कमरे में आया, उस समय सचमुच ही अवाक हो गया। इन दो घण्टों में ललिता ने कुछ भी न किया था। मेज पर माथा रख चुपचाप बैठी हुई थी। शेखर के पैर का शब्द सुनकर एक बार उसने सर उठा कर उसकी ओर देखा और फिर माथा झुका लिया। इस समय उसकी दोनों आखें लाल हो रही थीं।

परन्तु शेखर ने पर देखकर भी न देखा। कपड़े पहनता हुआ धीरे धीरे।बोला—"इस समय तुम वे चीजें न रख सकोगी, दो पहर के समय आकर रखना।" इतना कह वस्त्र पहन कर वह आफिस चला गया। उसने ललिता की आखें

लाल क्यों हो रही हैं, इसका ठीक ठीक कारण समझ लिया था, परन्तु अच्छी तरह सब बातें सोचे बिना कोई बात अपने मुंह से निकालना उसने उचित न समझा।

उस दिन संध्या के समय मामा को चाय देने के लिये जब ललिता गई तब वह बहुत ही संकुचित हो उठी। आज शेखर भी वहीं बैठा था। वह गुरुचरण बाबू से विदा होने आया था।

ललिता ने सर झुकाये हुए चाय का एक प्याला गुरुचरण के आगे तथा दूसरा गिरीन के आगे रख दिया। यह देख तुरन्त ही गिरीन ने पूछा—"शेखर बाबू को तुमने चाय नहीं दी ललिता!"

ललिता ने उसी तरह सर झुकाये हुए धीरे धीरे कहा—"शेखर भैया चाय नहीं पीते।"

गिरीन ने फिर कुछ न कहा। ललिता की बात उसे याद आ गई। शेखर स्वयं भी चाय नहीं पीता और दूसरे पीते हैं, तो उसे अच्छा नहीं मालूम होता।

चाय का प्याला हाथ में उठा कर गुरुचरण ने ललिता के लिये जो वर स्थिर किया था, उसकी बात उठाई लड़का बी०ए० में पढ़ रहा है, धनवान है। बहुत सी तारीफ कर गये। अन्त में बोले—"इतना सब होने पर भी वह पसन्द नहीं है। इसमें सन्देश नहीं, कि वह देखने में बहुत सुन्दर नहीं है परन्तु पुरषों का भी कहीं रूप देखा जाता है गुण रहना ही यथेष्ट है। कुछ

ठहर कर फिर बोले—किसी तरह भी यदि विवाह हो जाय तो मेरी जान बचे।"

शेखर गिरीन से इसी समय साधारण परिचय हुआ था। उसकी ओर देख कर हंसते हुए, शेखर ने पूछा—"गिरीन बाबू को लड़का क्यों न पसन्द आया? लड़का लिखता पढ़ता है, धन जन से भी सम्पन्न है—अच्छा सुपात्र है।"

शेखर ने पूछा अवश्य, परन्तु पसन्द न आने का कारण वह अच्छी तरह समझ गया था और यह भी समझ गया था कि भविष्य में भी अभी कोई लड़का पसन्द न आयगा। परन्तु एकाएक गिरीन इस प्रश्न का उत्तर न दे सका। उसके चेहरे पर हलकी लालिमा दौड़ गयी। इस पर भी लक्ष्य देकर शेखर उठ खड़ा हुआ बोला—"चाचा, माँ को साथ लेकर कल सबेरे ही पश्चिम जाऊंगा। ठीक समय पर खबर देने में न चूकना।"

गुरुचरण ने कहा—"ऐसा भी कभी हो सकता है? तुम लोग ही तो मेरे सब कुछ हो। इसके अतिरिक्त ललिता की माँ जब तक उपस्थित न रहेंगी, तब तक तो कोई काम ही न हो सकेगा। क्यों ललिता?" कह कर उन्होंने मुंह फेर ललिता की ओर देखना चाहा, पर वह तब तक चली गयी थी। इसी लिये फिर बोल उठे—"वह कब चली गयी?"

शेखर ने कहा—"बात उठते ही चली गयी है।"

गुरुचरण गम्भीर भाव से बोले—"भागना ही चाहिये—कुछ भी हो अब उसमें भी सुध बुध आ गयी है।" कह कर

एक ठण्ढी सांस लेते हुए बोले—"मेरी बेटी मानो एक दम लक्ष्मी और सरस्वती का औतार है। बड़े भाग्य से ऐसी लड़की मिलती है शेखरनाथ!" बात कहते कहते उनके पीले चेहरे पर गम्भीर स्नेह की एक ऐसी मधुर छाया आ पड़ी कि गिरीन और शेखर दोनों ही आन्तरिक श्रद्धा से उन्हें प्रणाम किये बिना न रह सके।

सातवां परिच्छेद

ललिता चाय के दरबार से भाग कर शेखर के कमरे में आ पहुंची और एक बक्स खींच, उसके गर्म कपड़े सजा सजा कर रखने लगी। थोड़ी देर बाद शेखर भी वहां आ पहुंचा। ललिता ने सर उठा कर उसकी ओर देखा। पर यह क्या, उसकी ओर देखते ही वह भय विस्मय से व्याकुल होकर ज्यों की त्यों बैठी रह गयी।

किसी मुकद्दमे में अपना यथा सर्वस्व गँवा देने पर जैसा मुंह का भाव बनाकर मनुष्य अदालत के बाहर निकलता है, सबेरे देखने पर भी संध्या के समय वह जिस तरह पहचाना नहीं जाता, इस एक घण्टे में ठीक उसी तरह शेखर को भी मानो ललिता पहचान न सकी। उसके मुंह पर सर्वस्व चला जाने का चिन्ह मानो किसी ने तपाये हुए ज्वलन्त लोहे से दाग

दिया था। भीतर आकर शुद्ध कण्ठ से शेखर ने पूछा—"क्या कर रही हो ललिता?"

ललिता ने इस प्रश्न का कोई उत्तर न दिया, बल्कि शेखर के पास जाकर अपने दोनों हाथों के बीच में उसका एक हाथ पकड़ रोलाई भरे स्वर में पूछा—"क्या हुआ है शेखर भैय्या?"

"कहाँ कुछ तो नहीं हुआ" कह कर शेखर जबर्दस्ती हँस पड़ा। ललिता के हाथों के स्पर्श से उसमें बहुत कुछ सजीवता लौट आयी थी। अतः वह पास की ही एक चौकी पर बैठ गया और बोला—"तुम क्या कर रही हो?"

ललिता ने कहा—"मोटा ओवरकोट रखना भूल गयी थी वही रखने आयी थी।" शेखर चुपचाप बैठ कर सुनने लगा। इस इतनी देर में ही ललिता की घबड़ाहट बहुत कुछ कम हो गयी थी, अतः वह धीरे धीरे कहने लगी—"गतवार रेल में तुम्हें बहुत ठण्ढ मालूम हुई थी, बड़ा कष्ट हुआ था। बड़े कोट तो कई थे, परन्तु खूब मोटा कोट एक भी न था। इसी लिये मैंने लौट कर आते ही नाप भिजवा कर एक मोटा ओवरकोट तय्यार करा लिया था।"—कह कर उसने एक खूब भारी ओवरकोट लाकर शेखर के पास रख दिया।

शेखर ने हाथ से उसे जांच कर कहा—"पर तुमने मुझे तो कुछ कहा नहीं।"

ललिता हँस कर बोली—"तुम ठहरे शौकीन बाबू, तुम्हें कहने से क्या इतना मोटा कोट तुम बनवाने देते? इसी लिये

तुमसे कुछ कहा नहीं, तय्यार करा रख दिया था।" इतना कह, उस कोट को यथा स्थान रख, ललिता वापस आकर बोली—"ठीक सब कपड़ों के ऊपर ही रख दिया है, बक्स खोलते ही मिल जायगा। ठण्ढ मालूम हो तो पहन लेना।"

"अच्छा" कह कर शेखर कुछ देर तक स्थिर दृष्टि से एक ओर देखता एकाएक बोल उठा—"नहीं ऐसा तो हो ही नहीं सकता।"

ललिता चौंक कर बोली—"क्या नहीं हो सकता? न पहनोगे?"

शेखर जल्दी से बोल उठा—"नहीं नहीं यह दूसरी बात है। अच्छा ललिता मां के कपड़े लत्ते सब ठीक हो गये कि नहीं कुछ जानती हो?"

ललिता बोली—"हाँ जानती हूं। दोपहर के समय मैंने ही सब सजा कर रखे हैं।" कहकर उसने एक बार फिर सब चीजों को जांच लिया और बक्स में ताला लगा चाभी शेखर को देने लगी।

शेखर कुछ देर तक चुप रहा। इसके बाद ललिता की ओर देख कर उसने बड़े ही करुण स्वर में कहा—"अच्छा ललिता अब अगले वर्ष मेरा काम कैसे चलेगा, कुछ बता सकती हो?"

ललिता ने उसके चेहरे की ओर देखते हुए कहा—"क्यों?"

"क्यों? कारण मैं अच्छी तरह समझ रहा हूं।" कह कर अपनी बात दबा देने की इच्छा से अपने सूखे हुए मुंह पर

ज़रा मुसकुराहट लाता हुआ शेखर बोला—"परन्तु दूसरे के घर में जाने के पहले कहां क्या है, क्या नहीं है वहमुझे दिखा समझा कर जाना; नहीं तो आवश्यकता के समय मुझे कुछ भी न मिलेगा।"

ललिता ने क्रुद्ध स्वर में कहा— 'जाओ—"

अब, इतनी देर बाद शेखर हंसा, बोला—"जाओ तो जानता हूं, परन्तु सच ही मेरा क्या उपाय होगा? मुझ में शौक तो सोलह आने भरा है, पर कुछ करने की शक्ति कौड़ी भर भी नहीं है। वे सब काम नौकर भी नहीं कर सकते। इसलिये देखता हूं कि इसी समय से तुम्हारे मामा का वेश धारण करना पड़ेगा। वही धोती और एक चादर—इसके सिवा और क्या होगा?"

ललिता चाभियों का गुच्छा जमीन पर पटक कर भाग गयी।

शेखर ने चिल्ला कर कहा—"कल सवेरे एक बार जरूर आना।"

ललिता ने सुन कर भी न सुना। वह तेजी से सीढ़ियां तय कर दुतल्ले में जा पहुंची। अपने घर जाकर उसने देखा कि खुली छत के एक कोने में बैठ कर चन्द्रमा की चांदनी में अन्नाकाली अपने सामने फूलों का ढेर लगाये माला गूँथ रही है। ललिता उसके पास ही जाकर बैठ गयी और बोली—"ओस में बैठ कर क्या कर रही है?"

काली ने उसी तरह सर झुकाये हुए ही कहा—"माला गूँथ रही हूँ आज रात में मेरी लड़की का विवाह है।"

ललिता ने मुसकुरा कर कहा—"पर तूने मुझे कुछ कहा नहीं।"

अन्नाकाली गम्भीर भाव से बोली—"पहले से कुछ ठीक न था। इस समय बाबा ने पंचाङ्ग देख कर बताया कि आज रात के सिवा और कोई लग्न इस महीने में नहीं है। लड़की बड़ी हो गयी है अब रख नहीं सकती, किसी तरह उसका विवाह कर देना ही होगा पर बहन, दो रुपये दो न मिठाई मंगाऊं?"

ललिता हंस कर बोली—"रुपये के समय ही बहन की याद आती है। जा मेरी तकिया के नीचे रखे हैं ले ले। अच्छा काली इस फूल से भी कहीं विवाह होता है।"

काली ने गम्भीर भाव से कहा—"हां, दूसरा फूल नहीं मिलता तब इसी से होता है। मैंने इसी तरह कितनी ही लड़कियों का विवाह कर दिया मैं सब जानती हूँ।"—कह कर मिठाई मँगाने के लिये नीचे चली गयी।

ललिता वहीं बैठकर माला गूंधने लगी।

कुछ देर बाद अन्नाकाली लौट आयी, बोली—'सब को तो निमंत्रण दे आयी हूँ परन्तु एक शेखर भैया से अभी नहीं कहा है। जाऊं उन्हें भी कह आऊं, नहीं तो वे कहेंगे कि मुझे

कहा तक नहीं।" इतना कह कर वह शेखर के मकान में चली गयी।

काली पक्की गृहिणी है सब काम काज वह ठीक ठीक करती है शेखर भैया को निमंत्रण दे कर वह तुरन्त हीं लौट आयी आ कर बोली "वे एक माला मांग रहे हैं। जाओ ललिता वहन तुम्हीं जल्दी से दे आओ। तब तक मैं इधर के काम निपटा रखती हूं। लग्न आरम्भ हो गया है—अब समय नहीं है।"

ललिता ने सर हिलाते हुए कहा—"मैं नहीं जाऊंगी, तू ही दे आ।"

"अच्छा जाती हूं। वह बड़ी माला तो दो।"—कह कर उसने हाथ वढ़ाया।

ललिता माला उठा कर देना ही चाहती थी, कि उसने न जाने क्या सोच कर कहा—"अच्छा मैं ही दे आती हूं।"

काली ने जरा गम्भीर होकर कहा—"हाँ तुम्हीं दे आवो। मुझे वहुत से काम हैं—मरने की भी फुर्सत नहीं है।"

उसके मुंह का भाव और बातें करने का ढंग देख कर ललिता हँस पड़ी। "एक दम साठ वरस की बुढ़िया" कह कर हँसती हुई वह माला लेकर चली गई। दरवाजे के पास जाकर उसने देखा कि शेखर बड़े ध्यान से चिट्ठी लिख रहा है। अतः वह दरवाजे की राह से उसके पीछे जाकर खड़ी हो गई, इतने पर भी शेखर का ध्यान न टूटा। अब ललिता ने एकाएक शेखर को चकित कर देने के विचार से वह माला इस तरह

शेखर के गले में डाल दी, कि वह माथे में बिल्कुल न फंसी और सीधी उसके गले में चली गई। माला गले में डाल वह तेजी से कुर्सी के पीछे बैठ गई।

शेखर ने पहले चौंककर कहा—"क्यों काली !" पर इसके बाद ज्योंही उसने मुंह फेर कर पीछे की ओर देखा, त्योंही भयानक गम्भीर स्वर में बोल उठा—"यह क्या किया ललिता।"

ललिता उठ खड़ी हुई। शेखर के मुख का भाव बदला हुआ देख शङ्कित होकर बोली—"क्यों क्या हुआ ?"

शेखर ने अपनी गम्भीरता में जरा भी कमी न आने दी उसी भाव से उसने कहा—"तुम जानती नहीं हो ? काली से पूछ आवो, कि आज रात्रि के समय गले में माला पहनाने से क्या होता है ?"

अब ललिता समझी। पलक मारते ही उसका समस्त मुख मण्डल लज्जा से लाल हो गया वह "नहीं, कभी नहीं" कहती हुई तेजी से उस कमरे से बाहर निकल गई।

शेखर ने कहा-"जाना मत ललिता सुन जाओ जरूरी काम है—"

शेखर की पुकार उसके कानों में गयी परन्तु सुनता कौन है ? वह कहीं भी खड़ी न रह सकी। वह दौड़ती हुई अपने कमरे में जा पहुंची और एक दम आंखें बन्द कर बिछावन पर पड़ गयी।

इन पाँच छः वर्षों से वह सदा शेखर के साथ रहती थी,

सदा ही शेखर से कितनी ही बातें करती थी, पढ़ती थी, शिक्षा ग्रहण करती थी, पर ऐसी बात आज तक उसने शेखर के मुंह से कभी न सुनी। एक तो शेखर की प्रकृति अत्यन्त गम्भीर थी। अतः वह कभी उससे दिल्लगी करता ही न था। यदि करता भी तो इतना बड़ा लज्जाकर परिहास कभी शेखर के मुंह से निकल सकता है। ललिता ने इस बात की कल्पना भी न की थी। वह लज्जा से संकुचित हो, लगभग बीस मिनिट के उसी तरह पड़ी रही, इसके बाद उठ बैठी। शेखर से वह मन ही मन डरती थी। उसने कहा था कि जरूरी काम है। यही कह कर उसने पुकारा था। अतः अब जाना चाहिये कि नहीं—यही इतनी देर तक वह उठ बैठ कर सोच रही थी। इसी समय शेखर के मकान की दासी का शब्द सुन पड़ा—"ललिता बीबी कहाँ हैं, छोटे बाबू बुला रहे हैं।"

अब ललिता अपने को रोक न सकी बाहर आ कर धीरे से बोली- 'आती हूं, तुम जाओ।" ऊपर जा कर किवाड़ों के छिद्र से उसने झांक कर देखा शेखर अब भी चिट्ठी लिख रहा था बहुत देर तक वह चुप चाप खड़ी रही। इसके बाद धीमे स्वर में बोली-" मुझे क्यों बुलाया है?"

शेखर ने लिखते लिखते ही कहा—"पास आओ बताता हूं।"

ललिता ने कहा—"नहीं वहीं से कहो।"

शेखर मन ही मन हंस पड़ा बोला—"बताओ तो सही, आज एकाएक तुमने यह क्या कर डाला।"

ललिता रुष्ट भाव से बोली—"जाओ—फिर वही।"

इस बार शेखर ने मुंह घुमा कर कहा—"मेरा क्या दोष है? तुमने ही तो किया है—"

ललिता संकुचित होती हुई बोली—"कुछ नहीं किया है, तुम उसे लौटा दो।"

शेखर ने कहा—"इसी लिये बुलाया है, ललिता! पास आओ लौटा देता हूं। तुम आधा काम कर गयी हो, पास आ जाओ मैं पूरा कर देता हूं।"

ललिता दरवाजे की ओट में कुछ देर चुपचाप खड़ी रही। इसके बाद बोली—"सच कहती हूं यदि इस तरह दिल्लगी करोगे तो अब कभी तुम्हारे सामने न आऊंगी। दो उसे लौटा दो।"

शेखर ने फिर टेबुल की ओर मुंह फेर लिया और कलम उठा ली। बोला—"ले जाओ।"

ललिता बोली—"तुम वहीं से फेंक दो।"

शेखर ने सर हिलाते हुए कहा—"पास न आओगी तो न दूंगा।"

"तब मुझे जरूरत नहीं है"—कह कर ललिता क्रोध दिखाती हुई चली गई।

शेखर ने चिल्ला कर कहा—"पर आधा काम तो हो गया है न।"

ललिता वहां से अवश्य ही चली गई, पर नीचे न गई। पूर्व ओर की खुली छत पर जा, जंगला पकड़ कर खड़ी हो गई। उस समय सामने ही चन्द्रमा दिखाई दे रहे थे। और शरद काल की निर्मल चन्द्रिका चारो ओर छिटक रही थी। ऊपर स्वच्छ निर्मल आकाश दिखाई दे रहा था। वह एक बार शेखर के कमरे की ओर देख कर फिर आकाश की ओर देखने लगी। इस बार उसकी आँखें जल उठीं। लज्जा और अभिमान से उनमें जल भर आया। वह अब इतनी छोटी नहीं थी, कि इन बातों का मतलब नहीं समझ सकती। फिर क्यों ऐसा उपहास किया गया? शेखर ने क्यों उससे ऐसी दिल्लगी की? वह कितनी तुच्छ कितनी नीच है-उसकी यह समझने की यथेष्ट अवस्था हो गई है। वह अच्छी तरह जानती है कि उसे अनाथ और धनहीन समझ कर सभी उससे नेह करते हैं। सभी उसका आदर करते हैं शेखर भी करता है, उसकी माता भी करती है। यह उनकी दया है। वास्तव में उसका अपना कहलाने वाला कोई नहीं है, उसका पूरा पूरा दायित्व किसी पर भी नहीं है, इसलिये एक दम अपरिचित और पराया रहने पर भी गिरीन ने उसके उद्धार की बात उठाई है।

ललिता आँखें बन्द कर मन ही मन बोली—इस कलकत्ते के समाज में उसके मामा की अवस्था शेखर से कितनी हीन

है, यह सभी जानते हैं। और मैं उसी मामा की आश्रिता और गलग्रह हूं। उधर बराबरी के घर में शेखर के विवाह की बात चल रही है। दो दिन आगे हो या पीछे उसी घर में उसका सम्बन्ध होगा इस विवाह के समय नवीन राय कितने रुपये वसूल करेंगे, वे बातें भी वह शेखर की माता के मुंह से कई बार सुन चुकी है।

फिर आज क्यों एकाएक शेखर भैया ने इस तरह अपमान किया ?—येही बातें, शून्य की ओर देखती हुई ललिता मन ही मन सोच रही थी, कि एकाएक चौंक कर उसने मुंह घुमाकर देखा—शेखर चुपचाप खड़ा हँस रहा है! इसके पहले जिस तरह माला उसने शेखर के गले में डाल दी थी, ठीक उसी तरह उसी उपाय से वह माला उसके गले में लौट आई। रूलाई से उसका गला रुद्ध होने लगा, पर वह जबर्दस्ती रुलाई रोक कर विकृत स्वर में बोली—ऐसा क्यों किया ?"

शेखर ने मुसकुरा कर कहा—"तुमने क्यों किया था ?"

"मैंने कुछ नहीं किया"—कहकर उस माला को तोड़ कर फेंक देने के लिये उसने हाथ बढ़ाया ही था, कि शेखर की आंखों की ओर देखकर वह एकाएक रुक गई। फिर माला तो-ड़ने का उसे साहस न हुआ, परन्तु वह रो पड़ी, रोती रोती बोली मेरा कोई नहीं है, इसीलिये तो तुम इस तरह मेरा अप-मान करते हो ?

अब तक शेखर धीरे धीरे मुसकुरा रहा था, पर ललिता की

यह बात सुनकर वह चौंक पड़ा। यह तो बालक बालिकाओं जैसी बात नहीं है। बोला—"मैं अपमान करता हूँ या तुमने मेरा अपमान किया है।"

ललिता आँखें बन्द कर डरती हुई बोली— 'मैंने कहाँ अपमान किया है ?"

क्षण भर चुप रहने बाद शेखर ने शान्त भाव से कहा—"ज़रा सोचने से ही मालूम हो जायगा। आज कल तुमने बहुत हाथ पैर पसारे थे, ललिता! परदेश जाने के पहले तुम्हारा वही बन्द कर दिया।"

इतना कह शेखर चुप हो गया ललिता ने भी कोई उत्तर न दिया। सर झुका कर खड़ी रही। उस खिली हुई चाँदनी में दोनों ही चुपचाप आमने सामने खड़े हो गये। केवल नीचे से काली की लड़की के विवाह की शंखध्वनि सुन पड़ने लगी।

कुछ देर तक चुप रहने बाद शेखर ने कहा—"अब ओस में खड़ी न रहो, नीचे जाओ।"

"जाती हूँ" कहकर ललिता शेखर के पैरों पर सर रख कर प्रणाम करने बाद उठ खड़ी हुई और बहुत ही धीमे मृदु स्वर में बोली—"मुझे क्या करना होगा, सो बता दो।"

शेखर हँसा। एक बार ज़रा हिचका, इसके बाद ही उसने दोनों हाथ फैला, उसे खींच कर अपने कलेजे से लगा लिया और सर झुका कर उसके अरुण अधरों को चूम कर बोला—

"कुछ बताना न पड़ेगा, ललिता! आज से तुम स्वयं ही सब कुछ समझ जाओगी।"

ललिता की समूची देह रोमांचित हो कर कांप उठी। वह जरा डर कर खड़ी हो गई बोली—"मैंने एकाएक तुम्हारे गले में माला पहिना दी थी क्या इसी कारण से तुमने ऐसा किया है?"

शेखर ने हँस कर सर हिला दिया। कहा—"नहीं, मैं बहुत दिनों से सोच रहा था, पर कुछ स्थिर न कर सकता था। आज ही स्थिर किया है, क्योंकि आज ही यह समझ में आया है, कि तुम्हें छोड़ कर मैं रह नहीं सकता।"

ललिता बोली—"पर तुम्हारे पिता जब सुनेंगे तो रंज होंगे। माँ को दुःख होगा,-कहीं अन्त में......"

शेखर ने कहा—"बाबा रंज अवश्य होंगे पर माँ खूब प्रसन्न होंगी जो होना था सो हो गया, अब तुम भी उसे लौटा नहीं सकतीं और मैं भी नहीं। जाओ नीचे जा कर माँ को प्रणाम करो।"

आठवां परिच्छेद ।

लगभग तीन महीने बाद एक दिन दुःखित चित्त और मलीन मुख से गुरुचरण नवीनराय के यहां जा कर उनके फर्श पर बैठना ही चाहते थे कि नवीन राय ने चिल्ला कर कहा—'नहीं नहीं यहां नहीं उस चौकी पर जा कर बैठो। मैं इस समय अब स्नान न कर सकूंगा। अच्छा, तुमने अपनी जात क्यों दे डाली।

गुरुचरण दूर रखी हुई एक चौकी पर सर झुका कर बैठ गये। चार दिन पहले उन्होंने यथा रीति ब्रह्म-धर्म ग्रहण किया था। आज वही समाचार कितने ही रंग बदलता हुआ आस्तिक हिन्दू नवीन राय के कानों में आ पहुंचा था। नवीन की आंखों से आग की चिनगारियां निकलने लगीं परन्तु गुरुचरण उसी तरह मौन भाव से सर झुकाये बैठे रहे। उन्होंने बिना किसी से पूछे यह काम कर डाला था। इसी लिये उसी दिवस से उनके यहां रोना चिल्लाना मचा हुआ था और अशान्ति की सीमा न थी।

नवीन राय ने फिर गरज कर कहा—"बताते क्यों नहीं बात सच्ची है या झूठी ?"

आंसुओं से भरी दोनों आंखें ऊपर की ओर उठा कर नवीन रायकी ओर देखते हुए गुरुचरण ने कहा—"सच्ची

क्यों ऐसा काम किया ? तुम तो कुल साठ रुपये मासिक

पाते हो, तुम......" क्रोध से नवीन राय अधीर हो उठे, आगे की बात उनके मुंह से न निकली।

गुरुचरण ने आंखें पोछ गला साफ कर कहा—"ज्ञान न था, भाई साहब ! दुःख की ज्वाला के कारण स्थिर न कर सका कि ब्रह्मज्ञानी होऊं या गले में फांसी लगा परलोक चला जाऊँ। अन्त में सोचा कि आत्मघाती होने की अपेक्षा ब्रह्मज्ञानी होना ही अच्छा है। इसी से ब्रह्मज्ञानी हो गया।"

नवीन राय ने चिल्ला कर कहा—"अच्छा किया है। अपने गले में फांसी न दे जाति के गले में फांसी डाल दी है। अच्छा जाओ, अब हम लोगों को यह काला मुंह न दिखाओ। आज कल जो तुम्हारे मन्त्री हुए हैं उनके साथ ही रहो। लड़कियों का डोम चमारों से विवाह करो।" कह कर उन्होंने अपना मुंह फेर लिया।

गुरुचरण आंखें पोछते हुए उस मकान से बाहर निकल आये।

नवीन क्रोध और अभिमान के कारण पहिले कुछ स्थिर न कर सके कि उन्हें क्या करना चाहिये। गुरुचरण अब एकदम उनके अधिकार से बाहर हो गये थे। इस बात की भी सम्भावना न थी कि जल्दी मुट्ठी में आयेंगे। इसलिये निष्फल आक्रोश से लाख छटपटाते रहने पर भी जब उन्हें कोई उपाय न सूझ पड़ा तब उन्होंने उसी दिन मज़दूर बुलवा कर छत की

राह से जो जाने आने का रास्ता था, उसे बन्द करा दिया एक लम्बी और ऊंची दीवार बनवा दी।

यह समाचार पश्चिम में बैठी हुई भुवनेश्वरी के कानों तक भी जा पहुंचा। शेखर ने ही उसे यह समाचार सुनाया। सुन कर भुवनेश्वरी रो पड़ी। बोली—"शेखर ऐसा मति-बुद्धि उन्हें किसने दी?"

शेखर समझता था कि यह मति-बुद्धि किसने दी है। परन्तु उस विषय का उल्लेख न कर उसने कहा—"पर मां दो दिन बाद तुम लोग ही उन्हें जाति के बाहर निकाल देतीं। मेरी समझ में ही नहीं आता कि इतनी लड़कियों का विवाह वे कैसे करते।"

भुवनेश्वरी ने सर हिलाते हुए कहा—"कोई काम रुका नहीं रहता। शेखर! यदि उनके लिये अपना जाति-धर्म गंवाना होता तो कितने ही गंवा डालते। ईश्वर ने जिन्हें इस संसार में भेजा है उनका भार वे ही ग्रहण किये हुए हैं।"

शेखर चुप हो रहा। भुवनेश्वरी ने आंखें पोछते हुए कहा—"यदि अपनी ललिता बेटी को साथ लाती तो उसका कुछ न कुछ प्रबन्ध मुझे ही करना पड़ता। कर भी देती। मैं तो यह न जानती थी कि गुरुचरण ने इन कारणों से ही उसे नहीं भेजा है। मैं समझती थी कि सचमुच ही इसके विवाह का प्रबंध करना होगा।"

शेखर ने अपनी माता के मुख की ओर देख कर सलज्ज

भाव से कहा—"अच्छी बात है माँ! अब मकान चल कर वैसा ही करो। वह तो ब्राह्म नहीं हुई है-उसके मामा हुए हैं, और वे भी वास्तव में उसके कोई नहीं हैं। ललिता का अपना कोई नहीं है इसी लिये वह उनके यहां रहती है।"

भुवनेश्वरी ने कुछ सोच कर कहा—"बात तो ठीक है पर तुम्हारे पिता दूसरे ही ढंग के आदमी हैं। वे किसी तरह भी राज़ी न होंगे। संभव है कि उनसे भेंट भी न करने दें।"

शेखर के मन में भी यही आशंका थी। इसी लिए, वह कोई उत्तर न दे उठ कर चला गया।

इसके बाद एक मिनट के लिये भी विदेश में रहने की उनकी इच्छा न रही। दो तीन दिनों तक चिन्तित, दुःखित भाव से इधर उधर घूमने बाद एक दिन संध्या के समय शेखर ने आ कर कहा—"अब अच्छा नहीं लगता माँ! चलो घर चलें।"

भुवनेश्वरी तुरन्त ही प्रस्तुत होगई। बोली—"चलो अच्छी बात है मुझे भी कुछ अच्छा नहीं मालूम होता।"

घर लौट आने पर माता पुत्र दोनों ही ने देखा कि छत पर की जाने की राह बन्द कर दी गई है। ऊंची दीवार खड़ी है। गुरुचरण से किसी प्रकार का सम्बंध रखना यहां तक कि बातें करना भी नवीन राय उचित नहीं समझते, यह बात बिना किसी से पूछे ही उन्हें मालूम हो गयी।

शेखर के भोजन के समय उसकी माता उपस्थित थी।

दो एक बातों के बाद उन्होंने कहा—"गिरीन बाबू के साथ ही ललिता के विवाह की बात चल रही है। मेरी तो पहले से ही यही धारणा थी।"

शेखर ने उसी तरह सर झुकाये हुए पूछा—"किसने कहा।"

भुवनेश्वरी बोली,—"उसकी मामी ने। दो पहर के समय जब तुम्हारे पिता सोये थे तब मैं उनसे मिलने गयी थी। रोते रोते बहू की आँखें सूज गयी हैं।" कुछ क्षण चुप रहकर आंचल से अपनी आँखें पोछती हुई बोली—"भाग्य, शेखर, भाग्य! इस ललाट की लिखन को कोई मेट नहीं सकता। किसको दोष दूं। जो हो, गिरीन लड़का अच्छा है, सम्पत्ति भी है, ललिता को किसी बात का कष्ट न होगा।" कह कर चुप हो गयी।

शेखर ने कोई उत्तर न दिया। मुंह झुका कर भोजन के पदार्थ थाली में इधर से उधर रखने लगा। कुछ देर बाद जब भुवनेश्वरी उठ कर चली गयी, तब वह भी उठ कर हाथ मुंह धो, विछौने पर सो रहा।

दूसरे दिन संध्या के समय ज़रा घूम आने के लिये वह घर से बाहर निकला। इस समय गुरुचरण के बैठक खाने में नित्य की भांति ही चाय का दरबार लगा हुआ था, और बड़े उत्साह से हंसी दिल्लगी तथा बातचीत हो रही थी, वहाँ का कोलाहल शेखर के कानों में पड़ते ही उसने खड़े हो कर कुछ सोचा, इसके बाद धीरे धीरे उसी शब्द का अनुसरण करता

हुआ, उस मकान में घुसकर, बैठक के दरवाज पर जा कर खड़ा हो गया। बस उसी समय वह कोलाहल बन्द हो गया और उसका चेहरा देखते ही सब का मुख-भाव परिवर्तित हो गया।

ललिता के सिवाय यह समाचार और किसी को भी न मालूम था, कि शेखर लौट आया है। आज गिरीन तथा वह दूसरे भले-आदमी भी वहां बैठे हुए थे। वे विस्मित दृष्टि से शेखर की ओर देखने लगे। गिरीन भी अपना चेहरा अत्यन्त गम्भीर बना कर दीवार की ओर देखने लगा। सब से अधिक चिल्ला रहे थे गुरुचरण। उनका चेहरा तो एक दम ही पीला पड़ गया। गुरुचरण के पास बैठकर ललिता उस समय की चाय तय्यार कर रही थी। उसने एक बार सर उठा कर शेखर की ओर देखा और फिर माथा झुका लिया।

शेखर ने भीतर जा कर, चौकी से सर लगा, गुरुचरण को प्रणाम किया इसके बाद एक ओर बैठ हंस कर बोला—"यह क्या एक दम सब बन्द हो गया।"

गुरुचरण ने धीरे धीरे आशीर्वाद दिया। परन्तु क्या कहा सो कोई समझ न सका।

उनका मनोभाव शेखर समझ गया, इसी लिये, अवसर देने के वास्ते वह अपनी बातें ही कहने लगा। कल लौट आने की बात, माता का रोग अच्छा होने की बात, पश्चिम के देश विदेश की बात, कितनी ही बातें लगातार बक जाने बाद उसने उस अपरिचित युवक की ओर देखा।

इतने समय में गुरुचरण ने अपने को बहुत कुछ सम्हाल लिया था। अतः वे उस नवयुवक का परिचय देते हुए बोले-"वे गिरीन बाबू के मित्र हैं। एक जगह ही दोनों के मकान हैं। एक साथ ही लिखना पढ़ना सीखा है, बहुत सज्जन हैं। श्याम बाजार में रहते हैं। इतने पर भी जब से परिचय हुआ है, तब से बराबर ही मुझसे भेंट करने आया करते हैं।"

शेखर ने मन ही मन कहा,—"हां खूब सज्जन पुरुष हैं!" कुछ देर तक चुप बैठने बाद फिर उसने कहा,—"चाचा! और सब समाचार तो अच्छे हैं न?"

गुरुचरण ने कोई उत्तर न दिया सर झुका लिया, शेखर जाने के लिये उठ खड़ा हुआ, इसी समय एकाएक रोनी आवाज में उन्होंने कहा—"कभी कभी आया करना बेटा! एकदम त्याग न देना! सब बातें सुन ली हैं न?"

"सुन ली हैं" कह कर शेखर भीतर जनाने भाग में चला गया।

इसके बाद ही भीतर से गुरुचरण की स्त्री की रुदन ध्वनि सुन पड़ने लगी। बाहर बैठ कर गुरुचरण भी धोती के कोने से आंखें पोंछने लगे और गिरीन अपराधी के समान मुंह बना चुपचाप खिड़की की राह से बाहर की ओर देखने लगा। ललिता इसके पहले ही उठ गयी थी।

कुछ देर बाद रसोई घर से बाहर निकल कर शेखर बरान्दे में होता हुआ दालान में जा पहुंचा, वहां उसने देखा कि

किवाड़ की ओट में, अंधेरे में ललिता खड़ी है। उसने शेखर को पास देखते ही भूमिष्ठ हो कर प्रणाम किया और फिर एक दम उसकी छाती के पास जा, क्षणभर तक मुहं ऊपर की ओर किसी आशा में उठाये रही, इसके बाद कुछ पीछे हटकर धीरे धीरे बोली—"मेरी चिट्ठी का जवाब क्यों न दिया ?"

शेखरने आश्चर्य से कहा—"चिट्ठी ! मुझे तो कोई चिट्ठी न मिली, क्या लिखा था ?"

ललिता बोली—"कितनी ही बातें लिखी थीं, सब सुन तो लिया है ? अब यह बताओ कि तुम्हारी क्या आज्ञा है ?"

शेखर ने विस्मय से कहा—" मेरी आज्ञा ! मेरी आज्ञा से क्या होगा ?"

ललिता ने शङ्कित हो कर उसके चेहरे की ओर देखते हुए पूछा,—"क्यों ?"

शेखर ने और भी चकित भाव से कहा—"क्यों का क्या मतलब ललिता ! मैं किसे हुक्म दूंगा ?"

ललिता कुछ दृढ़ स्वर में बोली—"मुझे, और किसको दे सकते हो ?"

शेखर ने कुछ गम्भीर तथा करुण स्वर में कहा—"तुम्हें ही मैं किस तरह आज्ञा दे सकता हूं, और यदि दूं भी तो तुम क्यों मानोगी।"

इस बार ललिता मन ही मन बहुत डर गयी, उसने एक बार और भी शेखर के अत्यन्त निकट जा कर रुंधे स्वर में

कहा—"जाओ, इस समय यह दिल्लगी मुझे अच्छी नहीं लगती। पैरों पड़ता हूं, बताओ क्या होगा, मारे भय के रात में मुझे नींद नहीं आती।"

शेखर ने कहा—"डर किस बात का ?"

ललिता बोली—"डर नहीं है, तुम पास में नहीं, मां भी नहीं, इधर मामा न जाने क्या कर बैठे हैं। अब यदि मां मुझे ग्रहण न किया चाहें।"

शेखर थोड़ी देर तक चुप रह गया इसके बाद बोला—,'बात सच्ची है मां ग्रहण नहीं करना चाहेंगी। तुम्हारे मामा ने दूसरों से बहुत से रुपये लिये हैं—यह बात उन्होंने सुनी है। इसके अतिरिक्त इस समय तुम लोग ब्राह्मण और हम लोग हिन्दू हैं।"

इसी समय रसोई घर से अन्नाकाली ने पुकारा—"ललिता बहन, मां बुला रही हैं।"

ललिता ने चिल्ला कर कहा—"आती हूं।" इसके बाद धीमे स्वर में बोली—"मामा चाहे जो कुछ हो जायँ पर तुम जो हो मैं भी वही हूं। यदि मां तुम्हें नहीं छोड़ सकतीं तो मुझे भी नहीं त्याग सकतीं। और गिरीन बाबू से रुपये लेने के सम्बन्ध में तुम्हारा जो कथन है सो वे रुपये मै लौटा दूंगी। और उनके रुपये दो दिन आगे पीछे देने तो पड़ेंगे ही।"

शेखरने पूछा—"इतने रुपये कहाँ से लाओगी ?"

ललिता ने शेखर के चेहरे की ओर एकबार देखा और क्षण

भर मौन रहकर कहा—"जानते नहीं हो, कि स्त्रियां का रुपये कहाँ मिलते हैं ? मुझे भी वहीं से मिल जायंगे।"

अबतक यद्यपि शेखर शान्त भाव से बातें कर रहा था, पर वह मन ही मन जला जाता था। इस बार व्यंग से बोला—"परन्तु तुम्हारे मामा ने तो तुम्हें बेच डाला है।"

अन्धकार के कारण ललिता शेखर के चेहरे का भाव न देख सकी, परन्तु यह समझ गयी कि शेखर का कंठ स्वर बदल गया। इसी लिये उसने भी दृढ़ स्वर में उत्तर दिया—"ये झूठी बातें हैं। इस संसार में मेरे मामा जैसा कोई आदमी नहीं है, उनकी तुम हँसी न करो। उनका दुःख तुम नहीं समझ सकते हो, पर इस पृथ्वी के बहुत से मनुष्य समझते हैं।"—कह कर, कुछ ठहर जरा दम ले वह फिर बोली—"इसके अलावा मेरा विवाह होने के बाद उन्होंने रुपये लिये हैं, मुझे बेचने का उन्हें अधिकार भी नहीं है और मुझे उन्होंने बेचा भी नहीं है। यह अधिकार केवल तुम्हें है, तुम इच्छा करते ही, रुपये देने के भय से मुझे बेच सकते हो।"—कह उत्तर की राह देखे बिना ही वह तेजी से रसोई घर की ओर चली गयी।

नवां परिच्छेद ।

उस दिन रात्रि के समय बहुत देर तक विह्वलों की भांति इधर उधर घूमता हुआ बहुत रात बीते, शेखर घर लौटा। वह यही सोचता था कि उस दिन को इतनी छोटी ललिता ने इतनी बातें सीखीं किस तरह? उसने इस तरह निर्लज्जों की भांति इतनी बातें कैसे मेरे सामने मुंह से निकालीं।

आज वह ललिता के व्यवहार से सचमुच ही बड़ा चकित तथा क्रोधित हुआ था परन्तु यदि वह शान्त भाव से इस क्रोध के कारण पर विचार करता, तो उसे मालूम हो जाता कि यह क्रोध ललिता पर नहीं बल्कि अपने ऊपर ही है।

इन कई महीनों की ललिता की जुदाई में, प्रवास काल में, उसने अपनी कल्पनाओं द्वारा ही अपने को बांध रखा था। केवल काल्पनिक सुख दुःख, हानि लाभ पर विचार कर उसने देखा था कि ललिता का सम्बन्ध उसके भविष्य जीवन से कितना मिला हुआ है, उसके बिना शेखर का जीवन कितना कठिन है, कितना दुःखदायी है। बस, इसी विषय पर वह बराबर विचार करता था। ललिता बचपन से ही उसकी गृहस्थी में सम्मिलित हो रही थी। इस कारण से विशेष कर माँ, बाप, भाई, बहन, जैसे परिवार के मनुष्यों में उसकी गणना कर, उसके सम्बन्ध पर शेखर ने कुछ विचार न किया था, इस भाव से विचार करने की कल्पना भी कभी उसके मन में

न उठी थी। सम्भव है कि ललिता न मिले, पिता माता इस विवाह में सम्मति न दें, इस कारण से वह दूसरे की संगिनी हो सकती है—शेखर की दुश्चिन्ता बराबर इस पथ पर प्रवाहित हो रही थी और इसी लिये उसने विदेश जाने के पहले, रात्रि के समय, जबर्दस्ती उसके गले में माला पहना, इधर का रास्ता ही बन्द कर दिया था।

उधर पश्चिम में रहने के समय गुरुचरण के धर्म-परिवर्त्तन का समाचार सुन वह अत्यन्त व्याकुल हो उठा था और सदा यहीसोचा करता था कि ऐसा न हो, कि ललिता न मिले। सुख की हो या दुःख की-चिन्ता की इस गति से वह परिचित था। आज ललिता की स्पष्ट बातों ने उसकी चिन्ता का यह पथ जबर्दस्ती बन्द कर दिया। यही कारण था कि उसकी चिन्ता की धारा दूसरी ओर ही बह चली। पहले चिन्ता थी कि शायद न मिले, अब चिन्ता हुई शायद पीछे न छूटे।

उसका श्याम बाजार का सम्बन्ध टूट गया था। वे इतने रुपये न दे सके। साथ ही शेखर की माँ को लड़की भी पसन्द न आयी। अतः इस बार कुछ दिनों के लिये तो शेखर एक फन्दे से बच गया, परन्तु नवीन राय भी दस बीस हजार प्राप्त करने की बात न भूले और इसकी चेष्टा भी उन्होंने त्याग न दी।

शेखर सोचता था, कि क्या करना चाहिये उस रात में जब उसने ललिता के गले में माला पहना दी थी, तब शेखर ने डूबकर न सोचा था और न वह यही समझ सका था।

कि यह काम इतना गुरुतर हो जायगा, ललिता इस तरह असंदिग्ध चित्त से विश्वास कर लेगी कि सचमुच ही उसका विवाह हो गया है और धर्मतः इस के विपरीत और कोई भी काम वह नहीं कर सकती—ये इतनी बातें उस समय शेखर न विचार सका था, यद्यपि उसने स्वयं ही यह बात कही थी कि जो होना था सो हो गया, अब तुम भी उसे लौटा नहीं सकती और मैं भी नहीं, परन्तु उस दिन से, आज जिस ढङ्ग और जिस भाव से उसने इस विषय पर विचार किया था, उस तरह विचारने की उसमें शक्ति भी न थी और मालूम होता है कि अवसर भी न था। उस समय उसके मस्तक पर चन्द्रमा की चमकीली चांदनी छिटक रही थी, चांदनी से चारो दिशायें आलोकित और समुज्वल हो कर हँस रही थीं, उस के गले में माला पड़ी थी, उस समय प्रियतमा के वक्षःस्थल का स्पन्दन अपने हृदय से लगा कर पहले पहल अनुभव करने का मोह उत्पन्न हो रहा था और प्रणयी जिसे अधरसुधा कहते हैं, उसे पान करने के लिये वह व्याकुल हो रहा था। उस समय उसे स्वार्थ था भला बुरा कुछ भी सूझ न पड़ा और न अर्थ लोलुप पिता की रुद्र मूर्त्ति ही आंखों के आगे खड़ी दिखाई दी, उस समय उसने सोचा था, मां ललिता को प्यार करती हैं, अतः उन्हें सम्मत कर लेना कठिन न होगा और भाई से कहला कर पिता को भी किसी तरह राज़ी कर लिया जायगा सारांश

यह कि किसी न किसी तरह काम बन जायगा इसके अलावा गुरुचरण ने भी उस समय, इस तरह अपने को अलग कर शेखर की आशा का पथ बन्द न कर दिया था। पर अब तो विधाता स्वयं ही मुंह फेर बैठा था, वास्तव में शेखर को कुछ विशेष सोचने की आवश्यकता न थी। वह अच्छी तरह समझता था कि पिता को सम्मत कर लेना तो दूर की बात है, इस समय माता को राज़ी कर लेना भी सम्भव नहीं है। अब यह बात मुंह से निकाली ही नहीं जा सकती।

शेखर ने ठण्ढी सांस ले कर एक बार फिर कहा—क्या किया जाय? वह ललिता को अच्छी तरह पहचानता था। उसने अपने हाथों ही उसे आदमी बनाया था, अतः वह अच्छी तरह जानता था कि जिस कार्य को एक बार उसने अपना धर्म समझ लिया है उसे त्यागने के लिये वह कभी भी तैयार न होगी। वह समझ गयी है—उसकी दृढ़ धारणा हो गयी है कि वह मेरी धर्म-पत्नी है, इसी लिये आज संध्या के समय अन्धकार में बिना किसी संकोच कलेजे के पास आ कर मेरे मुंह के पास अपना मुंह ला; इस तरह खड़ी थी।

यद्यपि गिरीन के साथ उसके विवाह की चर्चा चल रही है परन्तु इस विषय में कोई भी उसे सम्मत न कर सकेगा। अब वह किसी तरह चुप भी न रहेगी। अब सभी बातें प्रकट कर देगी। सोचते सोचते, शेखर का चेहरा लाल हो गया

आंखों में जलन हो गयी। सच ही तो ! मै केवल माला बदल कर ही शान्त न हो गया था, वल्कि उसे अपने कलेजे से लगा कर मैंने उसका मुंह चूम लिया था। ललिता ने उस समय कोई बाधा न दी—कोई पाप नहीं था, इसी लिये उसने बाधा न दी,—मेरा अधिकार था, इसी लिये बाधा नहीं दी। अब, अब इस बात का वह क्या उत्तर दे सकता है ?

पिता माता के सम्मत हुए बिना ललिता से विवाह नहीं हो सकता, यह निश्चय है। परन्तु गिरीन के साथ ललिता का विवाह न होने का कारण जिस समय प्रकट हो जायगा, उस समय मैं घर बाहर किसी को भी मुंह दिखाने योग्य न रहूंगा।
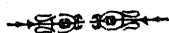
दसवां परिच्छेद।

असम्भव समझ कर शेखर ने ललिता की आशा एकदम त्याग दी थी, पहले कई दिवस, यह सोच कर कि शायद एका एक ललिता यहां आ पहुंचे अथवा सब बातें प्रकट कर दे तो मुझ पर जवाबदेही आ पड़ेगी, वह सदा डरता रहता था, परन्तु कई दिवस बीत जाने पर भी किसी ने उस से कैफियत तलब न की, यह भी न मालूम हुआ, कि ललिता ने कोई बात कही या नहीं, और उस मकान से शेखर के यहां कोई आया भी नहीं, शेखर के कमरे के सामने जो खुली हुई छत

थी, उस पर खड़े होने से ही ललिता की मकान की छत दिखाई देती थी। कभी ललिता दिखाई न दे जावे इस भय से अब वह छत पर खड़ा न रहता था, पर जब निर्विघ्न रूप से एक महीने का समय बीत गया, तब उसने मन ही मन कहा—लाख हो, स्त्री जाति लज्जा शर्म नहीं त्याग सकती, ये बातें वह कह नहीं सकती। उसने सुना था कि स्त्रियों का कलेजा कट जाने पर भी मुंह नहीं खुलता इस समय इस कहावत पर उसने विश्वास कर लिया और स्त्री जाति में इतनी दुर्बलता प्रदान करने के कारण उसने सृष्टिकर्त्ता को अनेक धन्यवाद दिये और उनकी बुद्धि की बहुत कुछ प्रशंसा भी कर डाली, पर इतने पर भी उसे शान्ति क्यों न मिली? जब से उसकी समझ में यह आ गया, कि अब भय की कोई बात नहीं है, उसी समय से एक अभूतपूर्व व्यथा से उसके कलेजे में दर्द होने लगा। उसके हृदय के अन्तरतम स्थल में एक ऐसी निराशा भरने लगी, ऐसा दर्द होने लगा ऐसी आशङ्का उत्पन्न होने लगी, कि रह रह कर उसका कलेजा कांपने लगा। ऐसा क्यों होता है? यह सोचता है—अब ललिता कुछ न कहेगी? क्या अब किसी दूसरे के हाथों में सौंप दिये जाने तक वह मुंह न खोलेगी—कुछ न कहेगी, मौन ही बनी रहेगी? उसका विवाह हो गया है, वह अपने स्वामी के घर चली गई है—वह बात याद आते ही, मन में उदय होते ही उसके हृदय तथा शरीर में आग सी क्यों लग जाती है?

पहले संध्या के समय वह घूमने फिरने के लिये कहीं बाहर न जाता था, बल्कि सामने की खुली छत पर ही इधर से उधर टहला करता था अब फिर वह वैसा ही करने लगा, परन्तु किसी दिन भी उस मकान का कोई मनुष्य उसे छत पर न दिखाई दिया। एक दिन न जाने किस काम से अन्ना काली ऊपर आ पहुंची थी, परन्तु शेखर पर दृष्टि पड़ते ही उसने आँखे झुका लीं और जब तक शेखर यह सोचने लगा, कि उसे पुकारना चाहिये, या नहीं इसी बीच में वह नीचे उतर गयी शेखर मन ही मन समझ गया कि दीवार उठा देने का क्या मतलब है, इस बात को बच्चा बच्चा समझ गया है। इतनी छोटी काली भी अच्छी तरह जान गयी है।

एक महीना और भी बीत गया।

एक दिन भुवनेश्वरी ने बातें करते समय पूछा--शेखर इधर कभी ललिता को देखा है?

शेखर ने सर हिलाते हुए कहा-"नहीं, यों

भुवनेश्वरी ने कहा-"लगभग दो महीने बाद कल संध्या को वह छत पर दिखाई दी। न जाने लड़की कैसी हो गयी है। रोगिनी, सूखा मुंह मानो बुढ़िया हो गयी है ऐसी गम्भीर! कोई उसे देख कर यह नहीं कह सकता कि यह चौदह वर्ष की बालिका है।" कहते कहते उसकी आंखों में आंसू भर आये। आंचल से आंसू पोछती हुई, भारी गले से बोली----साड़ी मैली, आंचल फटा हुआ, पूछा----साड़ी नहीं है? बोली----

है तो, परन्तु मुझे विश्वास नहीं होता। आज तक कभी उसने अपने मामा के दिये वस्त्र नहीं पहने। मैंने ही दिये हैं, पर इधर छः सात महीनों से मैं भी कुछ दे न सकी।" वे फिर कुछ बोल न सकीं, आंचल से आंख मुंह पोछने लगीं। ललिता को यथार्थ में वे अपनी लड़की के समान ही समझती थीं।

शेखर मुँह फेर कर दूसरी ओर देखता हुआ चुप बैठा रहा।

कुछ देर तक चुप रहने बाद वे फिर बोलीं—"तुझे छोड़ कर उसने कभी किसी से कुछ मांगा नहीं। यदि भूख भी लगती तो अपने मकान में वह किसी से कुछ न कहती। वह भी मैं ही देती—मेरे ही आसपास घूमती, चक्कर लगाती रहती थी, मैं उसका चेहरा देखते ही समझ जाती थी। शेखर मुझे वही बातें याद आती हैं सम्भव है कि वह उसी तरह घूमती होगी पर कोई कुछ समझता न होगा, कुछ पूछता भी न होगा मुझे तो वह केवल माँ कह कर पुकारती ही न थी, माता की तरह प्यार भी करती थी।"

शेखर साहस कर माँ के मुंह की ओर देख न सका जिधर देखता था, उधर ही देखता हुआ बोला—"अच्छी बात है, फ़िर उसे क्या चाहिये तुम पुकार कर पूछ क्यों नहीं लेतीं।"

"कैसे पूछूँ! इन्होंने जाने आने की राह तक बन्द कर दी है। और मैं भी किस मुंह से पूछने जाऊँ? उन्होंने न जाने किस दुःख की ज्वाला के कारण, बिना समझे बूझे, एक काम

कर डाला पर हमलोगों ने, अपने मनुष्य होने पर भी कहां तो कुछ प्रायश्चित ट्रायश्चित करा उस काम को ढक देते, सो न कर इकदम उन्हें बाहर ही निकाल दिया और मैं तो कह सकती हूं कि इनके तकाजे के कारण ही उन्होंने अपनी जान दे डाली। केवल तकाज़ा, केवल तकाज़ा, घृणा वश मनुष्य सब कुछ कर सकता है। मैं कहती हूं कि उन्होंने अच्छा ही किया है। यह गिरीन हम लोगों से कहीं अधिक उनका अपना है। मैं कह सकती हूं, कि उसके साथ यदि ललिता का विवाह हुआ तो वह सुखी होगी।

एकाएक शेखर ने मुंह फेर कर पूछा—"अगले महीने में ही होगा न ?"

भुवनेश्वरी ने कहा—"हां ऐसा ही तो सुना है।

शेखर ने फिर कुछ न पूछा।

भुवनेश्वरी कुछ देर चुप रह कर बोली—"ललिता से सुना है कि उसके मामा का शरीर भी आज कल खराब हो रहा है। अच्छा रहेगा भी कैसे ? एक तो उनके मन में सुख नहीं है दूसरे घर में नित्य रोना धोना मचा रहता है। एक मिनट के लिये भी घर में शान्ति नहीं है।"

शेखर चुपचाप सुन रहा था। उसने कोई उत्तर न दिया। कुछ देर बाद माता के चले जाने पर वह बिछावन पर जा पड़ा और ललिता के सम्बन्ध में ही सोचने लगा।

इस गली में दो गाड़ियां स्वच्छन्द जा आ नहीं सकती थीं

एक गाड़ी जबतक किसी मकान से खूब सटकर खड़ी न होती जबतक दूसरी गाड़ी नहीं जा सकती थी। दस दिन बाद शेखर की आफिस गाड़ी, राह रुकी रहने के कारण गुरुचरण के दरवाजे पर खड़ी हो गयी। शेखर आफिस से लौटा आ रहा था, वह गाड़ी से उतर पड़ा भीतर, जा कर उसने पूछा तो मालूम हुआ कि डाक्टर आये हैं।

कुछ दिन पहले उसने अपनी माता से सुना था कि गुरुचरण बीमार हैं। यह बात उसे उस समय स्मरण हो आयी अतः वह घर न जा कर सीधा गुरुचरण के सोने वाले कमरे में चला गया। बात वैसी ही थी। गुरुचरण निर्जीव की भांति बिछावन पर पड़े थे। एक ओर ललिता और गिरीन उदास मुख से बैठे हुए थे और सामने एक कुर्सी पर बैठ कर डाक्टर रोग की जांच कर रहा था।

गुरुचरण ने धीमे स्वर में उसे बैठने को कहा। ललिता माथे का आंचल कुछ लम्बा कर मुंह फेर कर बैठ गयी।

डाक्टर उसी मुहल्ले में रहते थे। वे शेखर को अच्छी तरह पहचानते थे। रोग की परीक्षा कर औषध आदि व्यवस्था बता उसे साथ लिये बाहर निकल आये। पीछे पीछे गिरीन भी डाक्टर को रुपये देने के लिये आया। इस समय डाक्टर ने उसे विशेष सतर्क रहने का उपदेश देते हुए कहा—खूब सतर्क रहना। रोग अभी अधिक अग्रसर नहीं हुआ है। इस समय वायु परिवर्तन अत्यन्त आवश्यक है।

डाक्टर के चले जाने पर दोनों फिर गुरुचरण वाले कमरे में आ पहुंची इसी समय ललिता ने इशारे से चुपचाप गिरीन को एकान्त में बुलाया और उसी कमरे के एक कोने में खड़ी हो, धीरे धीरे उससे बातें करने लगी। शेखर सामने की चौकी पर बैठ कर चुपचाप गुरुचरण का रोग क्लिष्ट मुख देखने लगा वे इस समय करवट बदल कर सोये हुए थे। अतः शेखर का आगमन न जान सके।

कुछ देर चुपचाप बैठे रहने बाद जब शेखर उठ कर चला गया उस समय भी ललिता और गिरीन उसी तरह धीरे धीरे बातें कर रहे थे। उसे किसी ने बैठने का भी न कहा, आने के लिये भी न कहा किसी ने उससे बात तक न की।

आज उसे विश्वास हो गया कि ललिता ने उसे कठोर दायित्व से सदा के लिये छुट्टी दे दी है। अब वह निर्भय हो गया है। अब शंका का कोई कारण नहीं है अब ललिता उसे पकड़ कर रख नहीं सकती। पर आज पोशाक उतारते उतारते सैकड़ों बार उसके ध्यान में यह बात आयी। आज वह अपनी आंखों देख आया कि गिरीन पड़ोसियों का परम बन्धु है, वह इस समय सब का आश्रय स्थल और ललिता का भविष्य आश्रयदाता है। अब मैं कोई नहीं हूं ऐसे विपत्ति-काल में भी ललिता से सहायता मांगना तो दूर की बात है मेरा एक परामर्श ग्रहण करने की प्रत्याशा भी न रखी है।

वह एकाएक " ओफ " कर एक गद्दी जड़ी हुई आराम

कुर्सी पर सर झुका कर बैठ गया। आज ललिता ने उसे देखते ही आंचल रख कर अपना मुंह फेर लिया था। मानो वह एक दम अपरिचित या पराया हो। इतना ही नहीं उसके सामने ही गिरीन को एकान्त में बुला कर न जाने क्या परामर्श किया। कैसी विचित्र बात है। एक दिवस इसी के साथ ललिता को शेखर ने थियेटर जाने न दिया था।

एक बार उसने यह भी सोचने की चेष्टा की कि सम्भवतः उसने गुप्त सम्बन्ध के विषय में विचार कर ही लज्जा से ऐसा व्यवहार किया है पर यह भी कैसे सम्भव है? यदि यही बात होती तो इतने काण्ड हो गये, वह इतने दिनों में किसी कौशल से एक बात भी पुछवा न सकती थी।

एकाएक दरवाजे के पास माता का कण्ठस्वर सुन पड़ा। वे कह रही थीं—"अभी तक हाथ मुंह नहीं धोया, संध्या होती है न!"

शेखर जल्दी से उठ खड़ा हुआ और उसके चेहरे पर माता की दृष्टि न पड़े इसी भाव से मुंह फेर कर तेज़ी से नीचे उतर गया।

इन कई दिनों में; कितनी ही तरह की बातों नाना प्रकार के रूप धारण कर उसके मन में उठती रहीं, प्रत्येक क्षण एक न एक विचार में वह लगा ही रहता, केवल एक बात उसने आज तक न सोची थी अर्थात् वास्तव में दोष किसका है? उसने आज तक एक भी आशा भरी बात ललिता से न कहा,

न उसे कहने का सुयोग ही दिया। बल्कि पीछे यह बात प्रकाशित न हो पड़े वह किसी प्रकार का दावा कर बैठे–इसी आशंका में वह पड़ा रहता था। इतने पर भी सब प्रकार के अपराध एक ललिता के सर पर लाद कर ही वह उस पर विचार करता था और स्वयं हिंसा, क्रोध, अभिमान अपमान से जलता रहता था। मालूम होता है, कि संसार के सब पुरुष इसी तरह विचारा करते हैं और इसी तरह मन ही मन दग्ध हुआ करते हैं।

सात दिनों तक वह इसी तरह मन ही मन अपने को जलाता रहा आज भी संध्या के समय, एकान्त कमरे में, इसी तरह की आग जला कर वह बैठा था कि एकाएक दरवाजे पर एक प्रकार का शब्द सुन वह चौंक उठा और उसका हृत्पिण्ड एकाएक उछल पड़ा। इसके बाद ही काली का हाथ पकड़े हुए ललिता उस कमरे में आयी और स्थिर हो कर, जमीन पर बिछी कार्पेट पर बैठ गयी। काली ने कहा–"शेखर भैया, हम दोनों तुम्हें प्रणाम करने आयी हैं।"

शेखर ने कोई उत्तर न दिया चुपचाप उनकी ओर देखता रहा।

काली बोली–"शेखर भैया ! हम लोगों ने अनेक अपराध किये हैं, उन्हें क्षमा करना।"

शेखर समझ गया, कि इनमें एक बात भी काली की निजकी नहीं है। यह केवल सिखाई हुई बात कह रही है उसने पूछा–"तुम लोग कल कहां जाती हो ?"

काली बोली–"पश्चिम ! बाबा को साथ ले हम सभी मुंगेर जायंगे। वहाँ गिरीन बाबू का मकान है। बाबा यदि अच्छे भी हो जायंगे, तो अब हम लोग यहाँ न आयंगे। डाक्टर ने कहा है, इस देश का जल वायु बाबा को सहन नहीं होगा।"

शेखर बोला–"अब वे कैसे हैं ?"

"कुछ अच्छे" कह कर काली आंचल के भीतर से साड़ियों के कई जोड़े निकाल कर दिखाती हुई बोली–"चाची ने खरीद दिये हैं।"

ललिता अब तक चुपचाप बैठी हुई थी। अब एका एक उठ कर, टेबिल पर एक चाभी रखती हुई बोली–"अब तक आलमारी की यह चाभी मेरे पास ही थी" फिर कुछ हंस कर बोली–"परन्तु उसमें अब रुपये पैसे नहीं हैं, सब खर्च हो गये हैं।"

शेखर चुप, उसने कोई उत्तर न दिया।

काली बोलीः–"चलो बहन, रात होती है,

ललिता के कुछ उत्तर देने के पहले ही शेखर एकाएक घबड़ा कर बोल उठा–"काली, नीचे से मेरे लिये पान तो ले आ।"

ललिता ने उसका हाथ पकड़ लिया। बोली–'तू बैठ काली, मैं ला देती हूं।" इतना कह कर वह तेज़ी से नीचे उतर गयी। कुछ देर बाद उसने पान लाकर काली के हाथ में दिया उसने शेखर को दे दिया।

पान हाथ में ले, शेखर निस्तब्ध होकर बैठा रहा।

"अब जाती हूं, शेखर भैया!"—कहकर काली ने शेखर के पैरों के पास जा; झुककर प्रणाम किया ललिता वहाँ खड़ी थी, उसी स्थान पर भूमिष्ठ होकर प्रणाम करने बाद, दोनों ही उस कमरे से चली गयीं।"

शेखर अपना भला बुरा सोचता, और आत्म मर्यादा पर विचार करता ही, विवर्ण, पीला मुंह बनाये, विह्वल हत बुद्धि के समान चुपचाप बैठा ही रह गया। ललिता आयी, जो कहना था कह कर सदा के लिये उसने विदा भी ग्रहण कर ली परन्तु शेखर कुछ कह न सका। मानो कहने की कोई बात ही न थी–इसी भाव से समय बीत गया। ललिता इच्छा पूर्वक ही काली को अपने साथ ले आयी थी क्योंकि उसकी यही इच्छा है कि अब उस सम्बन्ध में कोई बात ही न उठे—यह शेखर मन ही मन समझ गया। उसके बाद, उसका शरीर काँपने लगा सर घूमने लगा; और वह उठ कर बिछावन पर जाकर आँखें बन्द कर लेट रहा।

ग्यारहवाँ परिच्छेद

गुरुचरण का भग्न स्वास्थ्य मुंगेर में जाकर भी न जुड़ा वर्ष भर बाद ही यह दुःख का बोझ उतार कर वे परलोक पधार गये। गिरीन वास्तव में उनसे अतिशय स्नेह करता था और यथासाध्य अन्त तक उसने अपना स्नेह निबाह दिया।

मृत्यु के पहले उन्होंने सजल कण्ठ से गिरीन का हाथ पकड़ कर अनुरोध किया था, कि तुम अब पराये न बन जाना और वही काम करना जिसमें यह गहरी बन्धुता आत्मीयता में परिणत हो जाये। वह अपनी आंखों यह देखकर न जा सके। रोग के कारण समय ही न मिला, परन्तु परलोक में बैठ कर देखने की इच्छा वे प्रकट कर गये। उस समय गिरीन ने सानन्द और सर्वान्तःकरण से यह बात स्वीकार ली।

गुरुचरण के कलकत्ते वाले मकान में जो किरायेदार रहते थे उनके द्वारा भुवनेश्वरी को कभी कभी गुरुचरण का समाचार मिल जाता था और इसी तरह गुरुचरण का मृत्यु संवाद भी उन्हें प्राप्त हुआ।

इसके बाद शेखर के मकान में एक दुर्घटना घटी। एकाएक नवीनराय मर गये। भुवनेश्वरी ने शोक दुःख से अधीर हो बड़ी बहू के हाथों में गृहस्थी का भार सौंप, काशीवास के लिये प्रस्थान किया। जाते समय कह गयीं—"अगले साल जब

शेखर के विवाह का सब प्रबन्ध हो जायगा तब वे आ कर विवाह कर जायंगी।"

विवाह के सम्बन्ध में नवीनराय ने स्वयं ही सब बातें स्थिर कर दी थीं। और विवाह इसके पहले ही हो भी जाता पर नवीनराय की आकस्मिक मृत्यु के कारण इस वर्ष विवाह स्थगित रह गया। कन्यापक्ष वालों को अब विलम्ब करना सहन नहीं था इसी लिये वे फिर आ कर बात पक्की कर गये। इसी महीने में विवाह होना निश्चित हुआ। इसी लिये आज शेखर अपनी माता को लाने की तय्यारियां कर रहा था। आज आलमारी से कपड़े निकाल कर बक्स में रखते समय बहुत दिनों के बाद उसे ललिता की याद आयी। यह सब काम वही करती थी।

तीन वर्ष से भी अधिक हो गये। वे कलकत्ता छोड़ कर चले गये हैं। इस बीच उनका कोई विशेष समाचार भी उसे न मिला। उसके जानने की चेष्टा भी न की, शायद उसकी इच्छा भी न थी। अब ललिता पर उसका घृणा भाव हो गया था। परन्तु आज एकाएक उसके मन में आया कि यदि किसी तरह उसका कोई समाचार मिलता तो अच्छा होता। न जाने अब वह कैसी है। अच्छी ही होगी, क्योंकि गिरीन का साथ है—यह वह अच्छी तरह जानता था, तथापि यह सुनने की उसे इच्छा थी—कब विवाह हुआ किस तरह रहती है,—यही सब।

गुरुचरण के मकान में अब किरायेदार न थे। लगभग दो महीने हुए, वे मकान छोड़ कर चले गये हैं। शेखर ने एक बार सोचा कि चारु के बाप से जा कर पूछूं शायद उन्हें गिरीन का समाचार अवश्य ही मालूम होगा। क्षण भर के लिये बक्स में वस्त्र रखना बन्द हुआ। वह शून्य-दृष्टि से खिड़की से बाहर की ओर देखता हुआ यही सब सोचने लगा। इसी समय दरवाजे के बाहर खड़ी हो कर पुरानी दासी ने कहा—"छोटे बाबू, काली की मां एक बार आपको बुला रही हैं।"

शेखर ने अत्यन्त चकित हो कर पूछा—"कौन काली की मां!"

दासी ने हाथ के इशारे से गुरुचरण का मकान दिखा दिया और बोली—"हम लोगों की काली की मां। वे सब कल रात के समय लौट आये हैं।"

"चलो, चलता हूं"—कह कर वह तुरत नीचे उतर पड़ा।

उस समय संध्या हो चली थी। ज्यों ही उसने गुरुचरण वाले मकान में पैर रक्खे त्यों ही हृदय-वेधी सरल ध्वनि सुन पड़ने लगी। विधवा वेश धारिणी गुरुचरण की स्त्री के पास जा कर वह जमीन में ही बैठ गया और धोती के कोने से चुप-चाप अपनी आंखें पोंछने लगा। यह केवल गुरुचरण के लिये ही नहीं, बल्कि अपने पिता के शोक से वह एक बार और भी अभिभूत हो गया।

संध्या होने पर ललिता दीपक जला गयी। उसने दूर से

ही उसे प्रणाम किया और क्षण भर वहां ठहर कर धीरे धीरे उस कमरे से चली गयी। शेखर एक सत्रह वर्ष की उस स्त्री को आखें उठा कर देख न सका। और न उसे पुकार कर उसने कोई बात ही कही। तथापि तिरछी दृष्टि से जो कुछ वह देख सका उसी से उसे ऐसा मालूम हुआ मानो ललिता कुछ बड़ी और बहुत दुर्बल हो गयी है।

बहुत कुछ रोने-धोने बाद गुरुचरण की स्त्री ने जो कुछ कहा, उसका मर्म यही है कि मेरी इच्छा है कि यह मकान बेच, अब मुंगेर जा कर, अपने दामाद के आश्रय में हो रहें। बहुत दिनों से पिता की इच्छा थी, कि यह मकान खरीद लें, अब यदि उपयुक्त मूल्य में तुम लोग ही खरीद लो तो एक प्रकार से यह मकान अपना ही रहेगा और हमलोगों को भी कोई कष्ट न होगा और भविष्य में जब कभी यहां आने का काम पड़ेगा तो एक दो दिनों के लिये कोई दूसरा स्थान न खोजना पड़ेगा—यही सब। शेखर ने जब यह उत्तर दिया कि मां से पूछ कर यथासाध्य चेष्टा करूंगा, तब वे आंखें पोछती हुई बोलीं—"बहन क्या जल्दी न आवेंगी?"

शेखर ने कहा कि आज रात में ही मैं उन्हें लाने जाऊंगा। इसके बाद गुरुचरण की स्त्री ने एक एक कर अन्य समाचार भी जान लिये। शेखर का कब विवाह है कहां से कितने हजार, कितने जेवर मिलेंगे। नवीन राय कैसे मरे. शेखर की मां ने क्या किया, इत्यादि कितनी ही बातें उन्होंने कहीं और सुनीं।

जब शेखर वहां से चला, उस समय आकाश में चांदनी छिटक रही थी। इसी समय गिरीन ऊपर से उतर कर शायद अपनी बहन के मकान में चला गया। यह देख कर गुरुचरण की स्त्री ने पूछा—"हैं शेखरनाथ! मेरे दामाद से तुमसे परिचय नहीं है? ऐसा लड़का आजकल दिखाई नहीं देता।"

शेखर को इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है। यही बात उसने कही और 'परिचय है'—कह कर तेजो से उस मकान से बाहर निकल आया। परन्तु बाहर बैठक वाले कमरे के सामने आते ही उसे रुक जाना पड़ा। अन्धकार में दरवाजे की ओट में ललिता खड़ी थी। वह बोली—सुनो, क्या आज ही मां को लाने जाओगे?"

शेखर ने कहा—"हां।"

ललिता—"क्या वे बहुत कातर हो गयी हैं?"

शेखर—"हां प्रायः पागल की तरह हो गयी थीं।"

ललिता—तुम कैसे हो?

"अच्छा हूँ" कह कर शेखर तेजी से उस मकान से बाहर निकल गया। रास्ते में आने पर उसका आपादमस्तक लज्जा और घृणा से कांप उठा मानो ललिता के पास खड़े होने के कारण उसका शरीर भी अपवित्र हो गया था। ऐसा ही उसे मालूम होने लगा पर लौट कर उसने किसी तरह सन्दूक में कपड़े जैसे तैसे भर कर उसे बन्द कर दिया। इस समय भी गाड़ी में देर थी। घड़ी देख कर बिछौने पर लेट गया और

शय्या का आश्रय ग्रहण कर, यह शपथ खा कर कि ललिता की विवाह स्मृति को भी अब जला कर खाक कर डालेगा, हृदय के रन्ध्र रन्ध्र में घृणा का दावानल उसने जला दिया। इस यातना में उसने मन ही मन कितनी ही अकथ्य भाषा में ललिता का तिरस्कार भी किया, यहां तक कि उसे कुलटा कह देने में भी उसे किसी प्रकार का संकोच न हुआ उस समय जब कि शेखर गुरुचरण की स्त्री से मिलने गया था गुरुचरण की विधवा स्त्री ने कहा था—"यह तो सुखका विवाह न था, इसी लिये किसी की भी राय न थी नहीं तो क्या ललिता तुम्हें निमंत्रण न भेजती।" ललिता की यह स्पर्द्धा इस समय मानो समस्त अग्नि पर शिखा विस्तार कर प्रज्वलित होने लगी।

बारहवाँ परिच्छेद

शेखर जब अपनी माता को ले कर लौट आया, तब भी उसके विवाह में दस बारह दिनों की देर थी।

दो तीन दिन बाद, एक दिन सवेरे ललिता शेखर की मां के पास बैठ कर एक टोकरी में कुछ भर रही थी। शेखर नहीं जानता था; कि ललिता यहां बैठी है इसी लिये, किसी काम से 'मां' कह कर उस कमरे घुसतेही वह चौंक कर खड़ा हो गया, ललिता सर झुका कर काम करने लगी।

मां ने पूछा—"क्या शेखर!"

शेखर जिस काम के लिये वहां गया था, वह भूल गया और 'अभी रहे' कह कर जल्दी से उस कमरे से बाहर निकल आया। वह ललिता का मुंह न देख सका, पर उसके दोनों हाथों पर उसकी दृष्टि जा पड़ी वह एक दम निराभरण न रहने पर भी, कांच की दो दो चूड़ियों के सिवा उस में और कुछ न था। शेखर ने एक क्रूर हँसी हँस कर मन ही मन कहा—"यह भी एक नया ढकोसला है।" वह जानता था, कि गिरीन धनवान है अतः उसी की पत्नी का हाथ इस तरह अलंकारशून्य होने का कोई संगत कारण वह बहुत कुछ खोजने पर भी प्राप्त न कर सका।

उसी दिन संध्या के समय वह तेजी से ऊपर से नीचे उतर रहा था और ललिता उन्हीं सीढ़ियों से ऊपर जा रही थी, वह एक ओर दब कर खड़ी हो गयी पर ज्यों ही शेखर उसके पास पहुंचा त्यों ही उसने अत्यन्त विनम्र स्वर में बड़े संकोच से कहा—"तुम से कुछ कहना चाहती हूँ।"

क्षण भर के लिये स्थिर हो कर, विस्मय भरे स्वर में शेखर ने कहा—"किसे? मुझ को?"

उसी तरह मृदु स्वर में ललिता बोली—"हां तुमको।"

"मुझ से अब तुम्हें क्या कहना है"—कह कर शेखर पहले की अपेक्षा भी अधिक तेजी से नीचे उतर गया।

उसी स्थान पर चुप चाप कुछ क्षण तक खड़ी रहने पर

एक ठण्डी सांस ले कर ललिता धीरे धीरे ऊपर चढ़ आयी।

दूसरे दिन सवेरे शेखर अपने बाहर वाले कमरे में बैठ कर समाचार पत्र पढ़ रहा था कि एकाएक उसने विस्मय से देखा—गिरीन आया है। गिरीन एक कुर्सी खींच कर उस के पास ही बैठ गया। शेखर समाचारपत्र एक ओर रख उसके प्रणाम के बदले में प्रणाम कर जिज्ञासु भाव से उसकी ओर देखने लगा। इन दोनों में देखा सुनी का परिचय अवश्य था, पर आज तक कभी बातें न हुई थीं और इस कार्य्य के लिये, दोनों में से किसी ने भी आज तक आग्रह न दिखाया था।

गिरीन ने एक दम काम की बात ही आरम्भ की, बोला—"विशेष प्रयोजन से इस समय आपको कष्ट देने आया हूं। मेरी सास की इच्छा आपको मालूम है। वे अपना मकान आप के हाथों ही बेचना चाहती हैं। आज मुझसे यही कहलाया है कि यदि आप शीघ्र ही इसका कोई प्रबंध कर दें तो इसी महीने में वे मुंगेर लौट जायें।"

गिरीन को देखते ही शेखर के हृदय में एक तूफान बहना आरम्भ हो गया था, उसकी बातें उसे अच्छी न मालूम होती थीं, अतः उसने अप्रसन्न भाव से कहा—"यह तो ठीक परन्तु बाबा की अनुपस्थिति में बड़े भाई ही मालिक हैं उनसे कहना ही आवश्यक है।"

गिरीन ने मुसकुरा कर कहा— 'यह हम लोग भी जानते हैं, परन्तु उनसे आप ही कहें तो अच्छा हो।"

शेखर ने उसी भाव से उत्तर दिया—"आप के कहने से भी हो सकता है। उन लोगों के अभिभावक तो अब आप ही हैं।"

गिरीन ने कहा—"मेरा कहना यदि आवश्यक हो तो मैं कह सकता हूं परन्तु कल मंझली बहन कहती थीं कि आप ध्यान देंगे तो काम सहज में हो जायगा।"

शेखर एक मोटी तकिये का सहारा ले कर बैठा हुआ अब तक बातें कह रहा था। अब सीधा हो कर बैठ गया। बोला—"किसने कहा है?"

गिरीन बोला—मंझली बहन—ललिता कहती थी कि...

शेखर हतबुद्धि हो गया इसके बाद गिरीन क्या कह गया उसका एक शब्द भी उसके कान में न गया। कुछ देर तक विह्वल दृष्टि से गिरीन के चेहरे की ओर वह देखता रहा। इसके बाद एकाएक बोल उठा—"मुझे क्षमा करें गिरीन बाबू! पर क्या ललिता के साथ आपका विवाह नहीं हुआ?"

गिरीन ने दातों के नीचे जीभ दबा कर कहा—"नहीं, आप तो उन सब को जानते हैं, काली के साथ मेरा......

"पर ऐसी बात तो न थी।"......शेखर ने आश्चर्य से कहा।

गिरीन ने ललिता से सब बातें सुनी थीं। वह बोला—"यह सत्य है कि ऐसी कोई बात न थी पर मृत्यु के समय गुरुचरण बाबू मुझसे अनुरोध कर गये थे कि मैं और कहीं विवाह न करूं मैंने भी वचन दे दिया था। उनकी मृत्यु के बाद मंझली बहन (ललिता को सब यही कहते थे) ने मुझे सब बातें समझा कर कहा–यद्यपि इन बातों को और कोई नहीं जानता–कि इसके पहिले उनका विवाह हो गया है और स्वामी जीवित हैं। सम्भव है कि इस बात पर और कोई विश्वास नहीं करता परन्तु मैं उनकी एक बात पर भी अविश्वास नहीं करता। इसके अलावा स्त्रियों का तो एक बार से अधिक विवाह नहीं होता—हो भी नहीं सकता--यह कैसी बात है? यह भी क्या कभी होता है?"

शेखर की दोनों आंखें आंसुओं से भर गयीं। वह आंसू भरी आंखों के कोनों से, गिरीन के सामने ही जोर से फूट कर रोने लगा। परन्तु इस ओर शेखर का ध्यान न था, उसे यह बात याद भी न आई कि एक पुरुष के सामने पुरुष का इतनी दुर्बलता प्रकाश करना अत्यन्त लज्जाकर है।

गिरीन चुप चाप देखता रहा उसके मन में पहले से ही सन्देह था--पर वह ललिता के स्वामी को पहचान गया। शेखर ने कुछ देर बाद आंखें पोछते हुए भारी गले से कहा—"पर आप तो ललिता से स्नेह करते हैं?"

गिरीन के चेहरे पर एक छिपी हुई व्यथा की गहरी छाया॥

आ पड़ी पर फिर भी वह मुस्कुराने लगा और धीरे धीरे बोला—"इस बात का उत्तर देना आवश्यक है। इसके अलावा स्नेह चाहे कितना भी अधिक क्यों न हो, जान बूझ कर कोई किसी की विवाहिता स्त्री से विवाह नहीं करता। इन बातों के लिये मैं गुरुजनों के सम्बन्ध की इन बातों पर आलोचना भी नहीं करना चाहता।" कह कर वह फिर एक बार हँस पड़ा। इसके बाद उठ कर बोला—"अब जाता हूं फिर किसी समय मिलूँगा।" इतना कह प्रणाम कर, वह चला गया।

शेखर सदा से ही गिरीन से विद्वेष भाव रखता था, इधर वह विद्वेष घोर घृणा में परिणत हुआ था, परन्तु आज उसके जाते ही शेखर उठ कर ज़मीन से माथा टेक इस अपरिचित ब्राह्म युवकको बारम्बार प्रणाम करने लगा। आज उसने पहले पहल ही देखा कि मनुष्य चुपचाप कितना बड़ा त्याग कर सकता है। हँसते हँसते कितनी कठोर प्रतिज्ञा और उसका पालन कर सकता है।

उसी दिन तीसरे पहर के समय, भुवनेश्वरी अपने कमरे में जमीन पर ही बैठ कर ललिता की सहायता से नये वस्त्रों की थाक लगा रही थीं कि शेखर भीतर जा कर माता की शय्या पर बैठ गया। अब वह ललिता को देख कर घबड़ा कर भाग न गया। भुवनेश्वरी ने उसकी ओर देख कर कहा—"क्या है, शेखर!"

शेखर ने कोई उत्तर न दिया, चुप हो कर थाक लगाना देखने लगा। कुछ देर बाद बोला—"यह क्या हो रहा है मां!"

भुवनेश्वरी ने कहा—"हिसाब लगा कर देखती हूं, कि किसे क्या देना होगा। मालूम होता है कि अभी कपड़े और भी खरीदने पड़ेंगे।"

शेखर ने कहा—"और यदि मैं विवाह ही न करूं ?"

भुवनेश्वरी ने हँस कर कहा—"तुम सब कुछ कर सकते हो, तुम्हारे गुणों का तो वारापर नहीं है।"

शेखर बोला—"मालूम होता है, ऐसा ही होगा।"

इस बार भुवनेश्वरी गम्भीर हो उठी, बोली—"यह कैसी बात है ऐसी अमंगल बात क्यों अपने मुंह से निकालता है ?"

शेखर ने कहा—"अब तक तो न कहा, पर अब चुप रहने से काम नहीं निकलता। अब चुप रहने से महापातक होगा।"

भुवनेश्वरी कुछ समझ न सकी, अतः शंकित दृष्टि से उसकी ओर देखने लगी।

शेखर ने कहा—"अपने इस लड़के के कितने ही अपराध तुमने क्षमा किये हैं,इसे भी क्षमा करो। मैं सच ही यह विवाह न कर सकूंगा।"

पुत्र की बातें सुन और चेहरे का भाव देख कर भुवनेश्वरी वास्तव में अत्यन्त उद्विग्न हो पड़ी थीं परन्तु इस भाव को छिपा कर उन्होंने कहा,"अच्छा अच्छा! ऐसा ही होगा। इस

समय तू यहां से जा मुझे तंग न कर शेखर मुझे बहुत काम हैं।"

शेखर ने फिर भी हंसने का एक व्यर्थ प्रयास किया और शुष्क स्वर में बोला—"नहीं मां, मैं तुमसे सत्य पूर्वक कहता हूं कि यह विवाह न होगा।"

भुवनेश्वरी ने कुछ क्रोध से कहा—"क्यों यह क्या लड़कों का खेल है?"

शेखर बोला—"लड़कखेल नहीं है, इसी लिये कहता हूं।"

भुवनेश्वरी इसबार सचमुच ही डर गयी। क्रोध भरे स्वर में बोली—"शेखर। क्या हुआ है सो साफ साफ बता। यह बेढंगी बातें मुझे अच्छी नहीं लगतीं।"

शेखर ने मृदु स्वर में कहा—'फ़िर किसी दिन कहूंगा, आज नहीं।"

"फिर किसी दिन कहेगा"—कह कर उन्होंने कपड़े एक ओर ढकेल दिये और बोलीं—"तब आज ही मुझे काशी पहुंचा दे। ऐसी गृहस्थी में मैं एक दिन भी रहना नहीं चाहती।"

शेखर सर झुका कर चुप बैठा रहा। भुवनेश्वरी अधिकतर चंचल हो उठीं। घबड़ा कर कहने लगीं—"ललिता भी मेरे साथ जाना चाहती है। देखूं, शायद उसका भी कोई प्रबन्ध हो जाय।"

इस बार शेखर मुंह सामने की ओर उठा कर हँसा और बोला—"तुम ले जाओगी तो ले जाओ पर उसका प्रबन्ध

और किस के साथ करोगी। तुम्हारी आज्ञा से बढ़ कर उस के लिये और भी कुछ है ?"

लड़के का हँसमुख चेहरा देख कर उनके मन में कुछ आशा हुई। इसके बाद ललिता की ओर देख कर उन्होंने कहा-"उसकी बातें सुनीं। वह समझता है कि मैं जहां इच्छा हो तुझे ले जा सकती हूं मानो तुम्हारी मामी से पूछने की भी जरूरत नहीं है।"

ललिता ने कोई उत्तर न दिया, शेखर की बातों का ढंग देख कर वह अत्यन्त संकुचित हो रही थी।

शेखर बोल उठा-"उसे समझाना चाहो, समझाओ-यह तुम्हारी इच्छा की बात है, परन्तु तुम जो कहोगी वही होगा यह मैं भी समझता हूं और जिसे तुम ले जाना चाहती हो, वह भी समझती है कि वह तुम्हारी पुत्रवधू है—" इतना कह कर शेखर ने सर झुका लिया।

भुवनेश्वरी विस्मय से स्तम्भित हो गयीं। अपनी जननी के सामने सन्तान का यह कैसा परिहास ! टकटकी लगा कर उसकी ओर देखती हुई बोलीं—"क्या कहा ? वह मेरी कौन है ?"

शेखर चेहरा ऊपर न उठा सका, परन्तु उसने उत्तर दिया, धीरे धीरे बोला—"यही तो कहा मां, कि आज नहीं, चार वर्ष से भी अधिक हो गये, तुम सच ही उसी समय से उसकी सास हो। मैं इससे अधिक कुछ कह नहीं सकता। उससे

पूछो वही बतायगी"—कह कर उसने देखा कि ललिता अपना सास के पैर पकड़ने का उद्योग कर रही है। वह भी उसके पास जा कर खड़ा हो गया दोनों ने एकत्र माता के चरणों में भूमिष्ठ हो प्रणाम किया। इसके बाद शेखर वहां से चला गया।

भुवनेश्वरी की आंखों से आनन्दाश्रु बहने लगे। वे सच हो ललिता को बहुत प्यार करती थीं। सन्दूक खोला अपने सब जेवर निकाल कर उसे पहनाते हुए, एक एक कर सभी बातें उन्होंने सुन लीं। सब सुनकर बोलीं—"इसी लिये गिरीन से काली का विवाह हुआ।"

ललिता बोली—"हां, इसी कारण से। मैं नहीं जानती कि गीरीन जैसा आदमी इस संसार में कोई दूसरा है या नहीं पर मैंने ज्योंही सब बातें उन्हें समझा कर कहा त्योंहीं उन्होंने विश्वास कर लिया, कि सचमुच ही मेरा विवाह हो गया है। स्वामी मुझे ग्रहण करें या न करें यह उनकी इच्छा पर निर्भर है, परन्तु वे हैं अवश्य!"

भुवनेश्वरी ने उसके सिर पर हाथ रखते हुए कहा—"हैं क्या, मैं आशीर्वाद देती हूं, कि जन्म जन्म दीर्घजीवी हो कर रहें। जरा बैठो बेटी, मैं अविनाश से कह आऊं कि वधू बदल गयी है—इतना कह, हँसती हुई भुवनेश्वरी अपने बड़े लड़के के कमरे की ओर चली गयी।

॥ इति ॥

॥ श्री ॥

लहरी बुकडिपो

बुलानाला काशी

का

मासिक

सूचीपत्र

अक्टूबर-नवम्बर-१९२४

एक कार्ड पर अपना नाम व पता लिख भेजने से
यह मासिक सूचीपत्र प्रतिमास मुफ्त
भेजा जाता है।

लहरी प्रेस, काशी।

नियम ।

१—डाक महसूल मनीआर्डर कमीशन और रजिष्ट्री आदि का खर्च बढ़ जाने के कारण प्रत्येक छोटे से छोटे पार्सल पर भी कम से कम ।≤) खर्च पड़ जाता है अस्तु ज्यादा पुस्तकें एक साथ मंगाने से खर्च की किफायत होती है ।

२—दस रुपै से ऊपर मूल्य की पुस्तकें मंगाने से १) पेशगी भेजना उचित है ।

३—अधिक पुस्तकें रेल द्वारा मंगाने में ही सुभीता होता है ।

४—प्रायः ग्राहक गण लिफाफे में टिकट नोट आदि रख कर बिना रजिष्ट्री कराये भेज देते हैं जिनके खो जाने से तरद्दुद होता है । कृपया बिना रजिष्ट्री कराये इस प्रकार न भेजा करें ।

५—इन पुस्तकों के इलावा और भी सब तरह की पुस्तकें हर वक्त मौजूद रहती हैं जिनका बड़ा सूचीपत्र पत्र पाते ही मुफ्त भेजा जाता है । आवश्यकता हो तो एक बार हमें भी याद करें :—

मैनेजर लहरी बुकडिपो—लहरी प्रेस,

बुलानाला, काशी ।

कर्ममार्ग	२)	कर्मक्षेत्र	३)
कलंकिनी	।।।≈)	कापालिक डाकू	१॥)
कामिनी	-)	कालग्रास	।)
कालेज होस्टेल	।)	कालचक्र	।)
कालाकुत्ता	॥)	कालीनागिन	१)
किरणशशी	।-)	किशोरी वा बीरबाला	≡)
किस्मत का खेल	।-)	कृष्ण बसना सुन्दरी	१।।।)
कृष्णकान्ता	४)	कुन्दनलाल	१॥)
कुसुम संग्रह	१।)	केतकी की शादी	।)
कैदी की करामात	१॥)	कोटारानी	≡)
कोहेनूर	१॥)	कौशलकिशोर	१)
कंकन चोर	२)	खरा सोना	१)
खूनी औरत	१।)	खूनी डाकू	-)
गल्पांजलि	१।)	गल्प लहरी	१।)
गल्पमाला	२॥)	गल्पांजलि	।।।)
गाड़ी में लाश	१)	गुप्तरहस्य	।।।-)
गुलबदन या रजिया बेगम	१॥)	गुलबहार या आदर्श भ्रातृस्नेह	।)
गोपाल के गहने	।)	गोबिंदराम	१)
गंगोत्तरी	।।।)	घटना चक्र	२।)
घटना घटाटोप	२)	चतुरंगचौकड़ी	।-)
चपला	२॥)	चरित्र चित्रण	१॥)
चरित्र हीन	३।)	रानी जयमती	॥)
चाणक्य और चन्द्रगुप्त	२॥)	चालाक चोर	१॥)
चारुदत्त	।)	चाँदबीबी	२)
चिन्ता	।।।) बड़ा १॥)	चित्रांगदा	॥)
चित्रावली	॥≈)	चुम्बक	।≈)
चोट	।।।≈)	चोर की बहादुरी	≈)

पुस्तक	मूल्य
चोर की तीर्थ यात्रा	=)
चौहानी तलवार	॥)
चन्द्रलोक की यात्रा	-)
चन्द्रावली	=)॥
चन्द्रधर	॥)
चम्पक बरणी	-)
जर्मन जासूस	१।)
जर्मन षड़ यंत्र	१॥)
जय श्री वा बीरबालिका	।-)
जया जयन्त	१।)
जहर का प्याला	१)
जानकी	।)
जासूस की झोली	१।)
जासूसी गुलदस्ता	१) २)
जासूसी कुत्ता	१॥)
जासूसी चक्कर	२॥)
जिन्दे की लाश	=)
जीवन ज्योति	१।)
जंगली रानी	॥=)
टर्की का कैदी	१॥।)
टापू की रानी	१॥।)
डबल जासूस	१॥)
डाकू	-)॥
डाक्टर की कहानी	।)
तारासिंह	=)
त्रिदेव निरूपण	।-)
तिलस्माती मुंदरी	।)
चोर चौकड़ी पर	।-)
चन्द्रशाला	।=)
चन्द्रगुप्त	२॥।)
चन्द्रिका	-)
चम्पा	।)
चीना सुन्दरी	१॥।)
जवाहिरात की पेटी	-)
जय पराजय	॥)
जया	॥।)
जयन्ती	॥)
जादू का महल	१॥)
जासूस पर जासूस	।)
जासूसी कहानियां	॥।=)
जासूसी पिटारा	॥।)
जासूस के घर खून	१॥)
जासूस जगन्नाथ	१॥)
जीवन	॥।-)
जोड़ा जासूस	१।)
जंगल की मुलाकात	-)
टालस्टाय की कहानियाँ	१)
टिकेन्द्र जीत सिंह	॥।)
डाक्टर साहब	१॥)
डाकू रघुनाथ	१=)
ताया का खून	≡)
तारामती	।)
त्रिवेणी वा सौभाग्य श्रेणी	।)
तिलस्मी बुज	-)

प्रेम पचीसी	२॥।)	प्रेमाश्रम	३॥)
पंच मंजरिका	।)	पंजाब पतन	॥)
फूल कुमारी	॥)	फूलों का हार	॥।)
फूल में कांटा	॥=)	फूलों की डाली	≡)
बज्राघात	२॥)	बड़े घर की बड़ी बात	१)
बनमालीदास की हत्या	=)	बनबीर	२)
बनदेवी	॥।)	बनारसी दुपटा	।)
बरदान	१॥।)	बलवन्त भूमिहार	॥।)
बात की चोट	॥=)	बारांगना रहस्य	४॥) ५)
बारुणी	॥=)	बालमित्र	≡)
बालिका हरण	॥।)	बोल्शेविक रहस्य	१॥।)
ब्याही बहू	≡)	विचित्र मित्र	।=)
विचित्र दगाबाजी	=)	विदूषक	॥।)
विधवा	।-)	विवाह कुसुम	१॥)
विमाता	३)	विमान विध्वंसक	१)
विराज बहू	॥≡)	विलायती डाकू	।=)
विचित्र समाज सेवक	३)	बीर मालो जी भोंसले	॥=)
वीर हम्मीर	=)	वीर पूजा	१)
वीर दुर्गादास	२)	वीर रमणी	१।)
वीर वारांगना	॥)	वीर जयमल	।=)
वीर कुमारी	=)	वीरबाला	॥।)
वीर पत्नी	।-)	बीरेन्द्र	=)
बीरेन्द्र विमला	-)	बूढ़ा जासूस	=)
बेगुनाह का खून	।)	बेलून विहार	१।)
बेनिस का ब्यापारी	॥।)	बेनिस का बांका	१)
बे बादल का बज्र	।=)	बंग विजेता	१॥।)
भड़ाम सिंह शर्मा	॥=)	भ्रमर	१॥=)

भयानक भूल	≈)	भयानक बदला	१)
भयानक भेदिया	।≈)	भयंकर तूफान	१)
भाग्य चक्र	१॥) ≈)	भानमती	॥)
भारत का अधः पतन	≈)	भारती	२॥)
भीमसिंह	१॥) १)	भीषण डकैती	१॥)
भीषण भविष्य	।)	भीषण नारी हत्या	।≈)
भीषण भूल	।≈)	भूतों का डेरा	।)
भूल भुलैयां	≈)	भोजपुर की ठगी	॥≈)
मडेल भगिनी	१।)	मदन मोहिनी	॥-)
मञ्जरी	१।)	युगल मालती	।≈)
मधुलपतिका	।)	मधुमति	≡)॥
मत्तो और पत्तो	॥)	मन्नू से राय मुन्नालल बहादुर	॥≈)
मयंक मोहनी	॥≈)-१)	मरदानी औरत	१)
मरे हुये की मौत	।-)	मल्लिका देवी	१॥)
महेन्द्र मोहनी	१॥≈)	महेन्द्र कुमार	५।)
मानकुमार	३)	मानवी कमीशन	≡)
माया	≈)	मायारानी	≈)
माया मरीचिका	॥-)	मायापुरी	२॥)
मालती	।)	माल गोदाम में चोरी	≈)
मालती	-)	मृणालिनी	
मूर्ख बुद्धिमान	।≈)	मेवाड़ का उद्धार	॥)
मेवाड़ का उद्धार कर्ता	≈)	मेरी जासूसी	।)
मोती महल	४॥), ३॥)	मोहनी	॥≈) ≈)
मृत्यु विभीषिका	१॥)	मुन्नाजान	॥)
सेवा सदन	३।)	हेम चन्द्र	१॥≈)
लंडन रहस्य प्रति भाग	॥≈)	वारांगना रहस्य	५)

नाटक

अजात शत्रु	१≈)
वीर अभिमन्यु	॥।)
अज्ञातवास	॥।=)
अंधेर नगरी	≈)
आदर्श हिन्दू विवाह	॥)
ईसा नाटक	॥।=)
कलिकाल रहस्य	।)
कामिनी मदन	।)
काशी दर्शन	॥)
कृष्णावतार	१)
खां जहाँ	॥।≈)
खूने नाहक	।≡)
खूब सूरत बला	॥)
गोपीचन्द्र भरथरी	॥)
गोरख धंधा	॥)
गौतम अहिल्या	॥)
चन्द्रावली	।)
चांद बीबी	१।)
जया	।)
जीवन मुक्त	१॥)
जैसे को तैसा	=)
डबल जोरू	≡)
ताराबाई	१।)
ताराबांई	१)
तेगे सितम	॥।)
अत्याचार का अंत	॥।)
असीरेहिर्स	॥) ।≡)
आतशी नाग	॥)
महात्मा कबीर	१)
आनन्द रघुनन्दन	॥)
उस पार	१=)
कलियुगागमन	≡)
काली नागिन	॥=)
किरण मई	।-)
कुलदीपबाबू	≈)
ख्वाबे हस्ती	।≡)
खून का खून	।≈)
गड़बड़ घोटाला	≡)
गो रक्षा नाटक	≡)
गौतम बुद्ध	॥।)
गंगावतरन	॥≈)
जगमोहन भूषण	≈)
चौपट चपेट	≡)
जहरी सांप	॥)
जीवन मुक्ति रहस्य	२)
झक मारी	।≈)
डुप्लीकेट	।≈)
तुलसीदास	॥≈)
पुरुविक्रम नाटक	॥।)
दयानन्द	॥≈)

दलजीतसिंह	॥-)
दिलफरोश	॥)
दुशमने ईमान	॥=)
देवी जालिया	॥)
धर्म योगी	॥।)
धूप छांह	॥)
नलदमयन्ती	॥।) १)
निर्भय भीम व्यायोग	≡)
परोपकार	१)
प्रहलाद नाटक	=)
पृथ्वीराज	॥।)
बङ्गमा भगत	॥)
बलिदान	१।)
बाल कृष्ण	॥=)
भक्ति विजय	॥=)
भारत उद्धार	॥।)
भारत विजय	॥।)
भारत रमणी	॥।=)
भूल भुलैयाँ	।≡)
माधव सुलोचना	।)
माधवी	≡)
मृच्छकटी	॥।)
मीरा बाई	॥=)
मूर्ख मंडली	॥।)
यहूदी की लड़की	॥)
रघुनाथ राव	॥=)
राम लीला	॥।=)
दानी कर्ण	॥=)
दुर्गादास	१॥)
दुर्जन	।-)
दोधारी तलवार	॥)
धर्मोजय	१)
नई रोशनी	॥=)
नन्दविदा	।)
नूरजहां	॥)
प्रबोध चन्द्रोदय	॥)
पांडव प्रताप	॥)
पूर्व भारत	॥।=)
बनबीर	॥=)
बाजीराव	१=)
महात्मा विदुर	१)
भारत दुर्दशा	-)।
भारत गौरव	१॥)
भारत जननी	=)
भीष्म	॥)
महाभारत	॥=)
पद्मावती	॥)
मानी बसंत	॥=)
मीठा जहर	॥)
मूर्ख मगडली	।-)
युधिष्ठिर दिग विजय	।)
रण धीर प्रेम मोहनी	॥)
राणा संग्राम सिंह	॥।)
रामायण	॥।)

मिलने का पता—लहरी बुकडिपो, लहरी प्रेस, बनारस सिटी।

पुस्तक	मूल्य
रूपवती	≋)
रोमियो जुलियट	।)
स्वामी विवेकानन्द	१)
विश्वबोध	।)
विश्वामित्र	१) ॥।)
वैधव्य कठोर दंड है या शान्ति	।≋)
सत्यनारायण	१।)
साकार रहस्य	।-)
सिलवर किंग नाटक	॥)
सुकन्या	१।)
सुनहरी खंजर	॥)
सूम के घर धूम	।)
सैदे हवस	॥)
संयोगिता हरण	॥)
शरीफ बदमाश	॥≈)
श्रवण कुमार	॥)
छत्र पति शिवाजी	१।)
श्रीमती मञ्जरी	॥।)
हरिश्चन्द्र	।) ॥≈)
हिन्दू स्त्री	॥।)
रेशमी रुमाल	॥)
शकुन्तला	॥) ॥।)
बिल्म मङ्गल	॥)
विशाख	१)
बीर कुमार छत्रसाल	१॥)
भक्त चन्द्र हास	१।)
सती चिन्ता	१)
सावित्री सत्यवान	॥।)
सिंहल विजय	१=)
सुकुमारी	१।)
सफेद खून	॥≈)
भक्त सुदामा	१)
भक्त सूरदास	॥≈)
संग्राम	१।।)
संसार चक्र	॥।)
शहीदेनाज़	।≈)
श्यामा स्वप्न	१।)
हिन्दू	१)

जीवन चरित्र।

पुस्तक	मूल्य
अब्राहमलिंकन	॥) ॥≈)
सम्राट अशोक	१॥) २॥।)
आत्मोद्धार	१)
आनन्दीबाई	।≈)
एनीबेसेंट	।≈) ॥।)
भारत भक्त ऐन्ड्रूज	२।)
अरविन्द घोष	॥)
अहल्याबाई	≋)
आदर्श चरितावली	।≈)
उथेलो	॥)
एब्राहम लिंकन	॥≈)
श्रीकृष्ण	४)

श्रीकृष्ण	४॥।)
श्रीकृष्ण चरित्र	।≈) ≈)
कोलम्बस	॥।)
महात्मा गांधी	१)
गांधीजी	॥)
महात्मा गांधी की दिव्य वाणी	≈)
महात्मा गांधी की जीवनी	≈)
गांधी गीता	२)
गोपीचंद भरथरी	=)
चित रंजन दास	।≈) ॥)
डाक्टर सर जगदीश चंद्रवसु	।≈)
जमसेदजी नसरवानजी ताता	।)
जेनरल जार्ज वाशिंगटन	१)
म० जेरीवाल्डी	-।)
टेरेन्स मैक्सविनी	≈)
दादा भाई नौरोजी	-)॥-१॥)
दिल का कांटा	१)
दो खून	≈)
धन कुबेर कारनेगी	१)
नेपोलियन	२।)
परशुराम	३)
राजर्षि प्रह्लाद	२।)
प्रेसिडेन्ट बिलसन	॥-)
पंजाब हरण और दलीपसिंह	२)
बोलशेविक जादूगर	॥)
मोगल साम्राज्य बाबर	।)
महात्मा विदुर	१॥।)
बालक श्रीकृष्ण	१।)
केशव चंद्र सेन	१≡)
गाजीमियां	-)॥
गांधी गौरव	॥।) ३)
गांधीजी कौन हैं	॥-)
गांधी सिद्धांत	॥)
गांधी दर्शन	१)
महाकवि गालिब और उनका उर्दू काव्य	॥)
सम्राट चन्द्रगुप्त	।)
देश भक्त दामोदर	॥।=)
जेनरल गारफील्ड	।)
जार्ज पंचम	।=)
जे एन टाटा	।≈)
जोजेफ जेरीवाल्डी	१।≈)
द्विजेन्द्र लाल राय	।)
देवी जोन	॥)
द्रौपदी कीचक	।)
नादिरशाह	१॥।)
महाराणा प्रताप	१।)
परीक्षित	१।)
पृथ्वीराज	१।)
पंजाब केशरी रणजीतसिंह	॥) १॥।)
महाराज बरौदा चरित्र	।≈)
बंकिमचन्द्र चटर्जी	१≡)
बिचित्र जीवन	१)
बीर चरितावली	॥=)

पुस्तक	मूल्य
बीर कर्ण	१।)
भारत के दश रत्न	।-)
भीम चरित्र	।।।≈)
राजर्षि भीष्म पितामह	।-)
मेघनाद बध	।।।)
मेगास्थिनीज	।।≈)
मेरे जेल के अनुभव	।≈)
बुद्ध चरित	२।)
मौलाना रूम और उनका उर्दू काव्य	१।।)
लवकुश	१।।)
लाला लाजपत राय	।।)
शिवाजी	।-)
श्रीराम चरित्र	५।।)
बीर केशरी शिवाजी	४।)
सप्तर्षि	।।।≈)
सिराजुद्दौला	२)
सुएनच्वांग	१।)
हरीसिंह नलवह	≡)
सम्राट हर्ष वर्धन	।।)
बुद्ध जी का जीवन चरित्र	।।)
भारत के महापुरुष	३)
भीष्म पितामह	।-)
महादेव गोविन्द रानाडे	≈)-≈)।।-।।।)
मेजिनी का जीवन चरित्र	।।।)
महात्मा ग्वीपसेप मेजिनी	।)
मेरी कैलाश यात्रा	।।)
महादेव गोविन्द रानाडे	१)
राष्ट्रीय निर्माता	।।≈)
रूस का राहू	।≈)
लार्ड किचनर	१)
लोकमान्य तिलक	।) १)
महात्मा शेखसादी	।≈)
राणा प्रताप	१।।।)
सिकन्दर शाह	१।।≈)
महानुभाव शुक्रात	≈)
सुहराब रुस्तम	१।।)
हर्ष चरित्र भाषा	।।)
नेपोलियन बोनापार्ट	१)

राजनैतिक तथा ऐतिहासिक

पुस्तक	मूल्य
अमीर अब्दुल रहमान खाँ	।।।)
अकाली दर्शन	।।।)
असहयोग का इतिहास	=)
आधुनिक भारत	।।≈)
आयरलैंड में मातृ भाषा	।≈)
गदर का इतिहास	८)
अहमदाबाद की कांग्रेस	।≈) ।)
असहयोग दर्शन	१।)
आयरलैंड की राज्य क्रान्ति	।-)
आयरलैंड में होमरूल	।।)

इंगलैंड का इतिहास १) २)	इटाली की स्वाधीनता ॥)
इन्दौर का इतिहास ॥-)	सचित्र ऐतिहासिक लेख ।=)
गदर का इतिहास १॥)	ग्रीस का इतिहास १=)
एशिया निवासियों के प्रति	कांग्रेस के पिता मि० ह्यूम ॥।)
यूरोपियनों का बर्ताव ।=)	कार्नेगी और उसके विचार ॥=)
गुलामी ॥।=)	चित्तौड़ की चढ़ाइयाँ ॥=)
चीन की राज्य क्रान्ति १॥)	जापान की राजनैतिकप्रगति ३॥=)
जापान का उदय ।)	जापान ॥।)
ट्रान्सवाल में भारतवासी ।≡)	तरुण भारत १)
दाराशिकोह =)॥	दिल्ली अथवा इन्द्र प्रस्थ ॥)
नवीन भारत १॥)	नागपुर की कांग्रेस ॥।)
पंजाब का भीषण हत्याकांड १॥।)	पंजाबकाभीषणनरहत्याकांड ॥।≡)
महाराणा प्रताप का बनवास -)	पांडव बनवास २)
पूना का इतिहास -)	बनारस १॥)
फिजी में मेरे २१ वर्ष ।=)	श्री वृन्दावन =)
बनारस का इतिहास -)	बेलजियम का झंडा ।)
विहार का विहार ।।)	भारत वर्ष ॥)
बोलशेविज्म १।=)	भारत का मैट्रिकुलेशनइतिहास १)
भारत वर्ष में चरित्रकीदरिद्रता -)	भारतकोस्वाधीनताकासंदेश १।-)
भारत की प्राचीन झलक २)	भारत वर्ष के लिये स्वराज ।=)
भारत के देशी राष्ट्र ॥।)	भारत और इंगलैन्ड २)
भारत वर्षीय राजदर्पण २)	भारतीय वीरता १।।)
भारतीय जागृति १)	भारतीयशाशन संबंधी सुधारों
भारतीयराष्ट्र निर्माण ।=)	का आवेदन पत्र १॥।)
भारतीय शासन सुधार ॥)	भारतीय शासन ॥।=)
मोगल वंश ।)	युरोपीयमहायुद्धकाइतिहास १॥।=)
युरोप की लड़ाई ।-)	युरोपीय महा भारत १॥।=)

रूस में युगान्तर	२)	राजपूतों की बहादुरी	१)
राज सम्बधी सिद्धान्त	१।।)	रोम का इतिहास	१)
शिवाजी की योग्यता	।।≈)	रूस की राज्यक्रान्ति	२)
सिक्खोंका उत्थान और पतन	१)	सत्याग्रह की मीमांसा	।)
सत्याग्रह और असहयोग	१।।।)	सर्विया का इतिहास	।≈)
स्वतंत्रता की झंकार	।।)	स्वराज्य की योग्यता	१।)
स्वराज्य की मांग	१।।)	स्वराज्य गुटका	≈)
स्वराज्य और हमारी योग्यता	।)	स्वराज्य सप्ताह	।।)
स्वराज्य पर सर रवीन्द्र	।)	स्वराज्य पर मालवीय	।)
स्वराज्य की गूंज	।≈)	सिक्खों का साहस	≈)
सिक्खों का परिवर्तन	१।।)	सिन फिनर	।)
संसार व्यापी असहयोग	।।≈)	संसार की क्रान्तियां	१।।≈)
हम असहयोग क्यों करें	।।)	हुमायूं नामा	।।)

बालोपयोगी

आकाश की बातें	≡)	कैलास का बिश्वास	≡)
तैरना सीखना	=)	ध्रुव चरित्र	।)
नवीन पत्र प्रकाश	।।=)	नवयुवको स्वाधीन बनो	।।)
नवीन बाल पत्र बोधनी	≡)	नीति शिक्षावली	-)।।
नीति धर्म अथवा धर्म नीति	।)		
पौराणिक गाथा	।-)	फुटबाल का खेल	-)।।
ब्रह्मचर्य	।-)	व्यवहारिक पत्रबोध	।।≈)
बालकों की बातें	।।)	बालहित	-)
बालबीर चरितावली	।।)	बाल कथा कहानी	।।-)
बाल विनोद	।≈)	बाल बोधनी	-)
बालोपदेश	।), ।।)	विद्यार्थी जीवन का उद्देश्य	-)
भारतीयनवयुवकों को राष्ट्रीय सन्देश	।।।)	भारतीय नीति कथा	।।।)

भारतीय विद्यार्थी विनोद	।≈)	भारती सुनीतिकथा	।।≈)
मिडिल क्लास भूगोल	।-)	युवक शिक्षा	।≈)
युवाओं को उपदेश	॥-)	शिशु सदुपदेश	≋)
विद्यार्थी जीवन	॥)	विनोद	≈)
शिक्षा सुधार	॥)	शिक्षा का आदर्श	।-)
संजीवनी बूटी	॥।)	किशोरावस्था	॥≋)
समुद्रकी सैर	॥।≈)		

स्त्रियोपयोगी

पतिव्रता अरुन्धती	॥=)	आदर्श दम्पति	१)
आर्य महिला रत्न	२।)	कुल कमला	।।।≈)
गृहलक्ष्मी	१।)	गृह शिल्प	।।))
गृह शिक्षा	१।)	जेवनार	।।)
तरंगिणी	१।)	देवी द्रौपदी	।।≈)
सती दमयन्ती	।।=)	द्रौपदी और सत्यभामा	=)
नल दमयन्ती	१॥)	पतिव्रता दमयन्ती	=)
पत्नी प्रभाव	॥।)	पतिव्रता मनसा	।।)
पतिव्रता गान्धारी	।।।)	पत्रांजलि	॥)
बच्चों की रक्षा	।)	बच्चों का चरित्र गठन	॥)
बनिता बिनोद	।।≈)	बनिता बिलास	।-) ।।≈)
वनिता विलास	।–)	वनिता बोधनी	।≈)
व्यंजन विधान	१)	बिधवा कर्तव्य	।।)
महासती वृन्दा	१)	भगिनी भूषण	≈)
भारत की क्षत्राणी	।।)	भारत की सच्ची देवियां	॥)
भोजन विधि	।≈)	सती मदालसा	।।)
माता	।।।)	माता और पुत्र	-)
माता के उपदेश	।)	मुस्लिम महिला रत्न	२।)

रमणी पंचरत्न	२॥)	पति व्रता रुक्मिणी	॥≈)
ललना सहचरी	२॥)	शकुन्तला	२) ॥≈)
शर्मिष्ठा	।≈)	शर्मिष्ठा देवयानी	२।)
सच्ची स्त्रियां	॥)	सती विपुला	२।)
सती सामर्थ्य	॥।)	सती महिमा	१)
सती पंचरत्न	१)	सती बेहुला	२।)
सती सतीत्व	१।)	सती सुकन्या	॥।) १)
सती अनुसूया	॥≈)	सावित्री सत्यवान	१॥) ।)
सावित्री	≈)	सती सावित्री	॥)
सावित्री	≋)	सती वृतान्त	१॥)
स्त्रियों का स्वर्ग	२)	सीता बनवास	॥) ॥≈)
सीता	२)	सती सीमन्तिनी	॥।)
सीता की जीवनी	-) ॥)	स्त्री शिक्षा शिरोमणी	॥।)
स्त्री धर्म बोधिनी	।≈)	सुघड़ चमेली	≈)
सती सुलक्षणा	॥)	सती सुलोचना	॥।)
सूत्र शिल्प शिक्षक	१)	सोने का चाँद	।)
हरिश्चन्द्र शैव्या	२॥)	पार्वती	२)

काव्य तथा गायन

अकबर और उनका उर्दू काव्य	।≋)	अनाथ	।)
अन्योक्ति कुसुमांजलि	-)	अनोखा रंडीबाज	)॥
आनन्द मोहन	-)॥	आत्मार्पण	।-)
इन्द्रावती	॥।)	काव्य कुसुमांजलि	≈)
कबीर के शब्द	≈)	श्रीकृष्ण चरित्र	-)॥
कुसुमांजलि	≈)	कंसवध	।≋)
गजलियात दिलबहार	≈)	[गो]पाल प्रशस्ति	≈)
गोपाल विनय	-)	गोपा[ल]गारी	-)

चमनिस्ताने हमेशा बहार	१)	छन्द रत्नावली	≡)
जयद्रथ बध	॥)	जागृत भारत	॥)
चन्दूलाल भजन माला	॥)	प्रेम पुष्पाजलि	१।)
जातीय कविता	१॥)	जानकी बाग विनोद	।)
जिगरी मिलाप	–)	त्रिशूल तरंग	॥=)
थियेट्रिकल गायन	।)	दव और बिहारी	१॥=)
देव यानी	।)	देव दूत	।=)
विवेक दर्पण लावनी	।–)	विमल प्रसूनांजलि	≡)
देहरा दून	।=)	नजर बन्द	=)
नीतिदीपिका	।)	पथिक	॥)
पद्य प्रमोद	॥।)	पद्य प्रदीप	॥)
पद्य प्रभाकर	।–)	पद्यपारिजात	।)
भारत विनय	१=)	मशहूर गवैया	२=)
वीर पंचरत्न	२॥।)	वीर विनोद	२)
बारहमासा नवरत्न	–)	विधवा प्रार्थना	।–)
बिहारी की सतसई २ भाग	४॥)	वीणाझंकार	।=)
बसंत विकाश	≡)	बहारे थियेटर	।=)
भक्ति प्रदीप स्तोत्र माला	–)	श्रीमद्भगवत गीता	॥=)
भजन प्रभाश्य	–)॥	वैतालिक	।)
भारत भक्ति	≡)॥	भारत गीत	॥=)
भारतोदय भजनावली	॥।)	भोज प्रबन्ध	॥।)
मन की लहर	=)	मनरंजन संग्रह	।≡)
मारुति विजय	॥)	मिलन	।)
मीराबाई के भजन	–)	मौर्य्य विजय	)
रसाल बन	।–)	रसीला गवैया	–)
रसखान दोहावली	–)॥	राग रुस्तमे हिन्द	=)
रागिनी थियेटर	।–)	रागसाज संग्रह	॥।)

मिलने का पता–लहरी बुकडिपो, लहरी प्रेस, बनारस सिटी।

राघव गीत	१।)	राधकोपनिषद्	।।।)
राम चरित चिन्तामणि	२)	राम चरित चंद्रिका	॥)
राम कलेवा	≠)	राशिमाला	-)॥
राष्ट्रीय झंकार	१)	राष्ट्र भारती	॥)
राष्ट्रीय तरंग	।-)	राष्ट्रीय गान	।)
राष्ट्रीय बीणा	॥≠)	रंगीला गवैया	-)॥
वाक्य विनोद	।≠)	बामन विनोद	-)॥
शकुन्तला	।)	संस्कृत कवियों की अनोखी सूझ	।≠)
श्याम छटा	-)	श्यामा सरोजनी	≠)
शिव पार्वती संबाद	≢)	शिव ताडंवस्तोत्र	≠)
शुकदेव	≠)	सत्यभास्कर	≠)
सत्याग्रहीप्रह्लाद	।)	सुदामा चरित्र	≢)
सुमनाञ्जलि	≠)	सुरस तरंगिनी	-)
संगीत थियेटर	।)	सन्त समागम	≠)
हास बिलास	।)	ऋतु संहार संस्कृत	॥।)-
हास्य मंजरी	॥)	हिंड़ोला	≢)
होरी गुलाल	।≠)	होली	≡)

किस्सा कहानि

अकबर बीरबल बिनोद	।≠)	अचंभो का बच्चा	≠)
अफीमची का किस्सा	≠)	अलादीन	≢)
अलीबाबा	-)॥	एकरात में बीस खून	≠)
कलिजुगवा	-)॥	कलियुग का बुखार	=)
गुलबकावली	।=)	गुल सनोवर	।)
गुलाब उपन्यास	-)	चहारदरवेश	।।।)
चार दोस्तों की गपशप	।।।)	चार दोस्तों की हँसी दिल्लगी	-)
चित्त बिनोद	=)	चम्पा चमेली	-)

छबीली भठियारी	।)	जान न पहिचान बड़ी बीबी	
त्रिया चरित्र	=)	सलाम	-)
तोता मैना	।।।)	नवीन चांदतारा	।।।)
दिल्लगी दर्पण	।।≋)	पुरानी ढढ्ढो	≈)
फिसाना अजायब	।≈)	बकावली सुमन	।-)
रात का सपना	-)	लतीफे बीरबल	-)
वैताल पचीसी	।=)	रात की मुलाकात	-)॥
शेख चिल्ली	-)	सवायार	।।≈)
साढेतीन यार	।।।≈)	सारंगा सदावृत्त	।।)
सिंहासन बत्तीसी	।।)	सिंधवाद जहाजी	।≈
हातिमताई	।।।)	हंसी दिल्लगी	-)

भिन्न भिन्न

अगरवालों की उत्पत्ति	=)	अनंत ज्वाला	।।)
अपना सुधार	।।=)	अपने हितैषी बनो	।≈)
अपूर्वरत्न	।)	अवतार मीमांसा	।।।)
अविभक्त कुल	।)	अमर कोष	।।)
अमरीका दिग दर्शन	।।।)	अमरीका पथ प्रदर्शक	।≋)
अमरीका भ्रमण	।।)	अमरीका के विद्यार्थी	।)
अमरीका का व्यवसाय	।≈)	खजाना रोजगार	१)
अंग्रेजी शिक्षक	।।)	हिन्दी इंगलिश वोकाबुलरी	।।)
आकृति निदान	१।)	आत्म रहस्य	≋)
आत्म विद्या	२)	श्रीआचार्य चरितम्	१)
आतशक का इलाज	।)	आत्म विजय	।।।)
आदर्श सम्राट	।≈)	आरती विश्वनाथ जी की	-)
आराध्य शोकांजली	।)	आरम्भ गणित	-)
आरोग्य साधन	।।)	आरोग्य प्रदीप	।।।≋)

पुस्तक	मूल्य
जीवनसुधार पर सरल विचार	≡)
ज्योतिष शास्त्र	॥)
ज्योतिर्विज्ञान	२)
म० टालस्टाय के लेख	।-)
ताप	।=)
डा० केशव देव शास्त्री	॥।)
तपस्वी अरविन्द के पत्र	।)
तन मन और परिस्थितियों का नेता मनुष्य	।)
तिलक दर्शन	२॥)
दत्तक चन्द्रिका	॥)
दिव्य जीवन	॥।)
दृष्टान्त सागर	२)
दुनिया	=)
देश उन्नति का द्वार	।)
देसायन संग्रह	॥)
धर्म और विज्ञान	२)
नवरत्न	१॥) १)
नीबू नारंगी	=)
पदार्थ संख्या कोष	।=)
पंच भूत	१॥)
प्रबंध पूर्णिमा	१)
प्रैक्टिकल फोटोग्राफ	१॥)
प्रबन्ध पारिजात	॥-)
प्राचीन [प]ंडित और कवि	॥=)
प्लानचेट गीतावली	॥)
पुनरुत्थान	॥=)

पुस्तक	मूल्य
प्रकाश	॥-)
दुर्गा सप्तशती	॥=)
जुजुत्सू व जापानी कुश्ती	=)
टेलीग्राफ टीचर	॥)
टालस्टाय के सिद्धान्त	१।)
अरविन्द मन्दिर में	॥।)
आत्मविद्या	२॥)
तन्दुरुस्ती और ताकत	=)
तरंगिणी	१)
तुलसी साहित्य	॥)
त्रैभाषिक व्याकरण शब्दावली	।=)
दियासलाई और फास फोरस	=)
दुग्ध चिकित्सा	=)
देश की दशा	-)॥
धर्म और जातीयता	॥।)
राज नीति विज्ञान	१।=)
धान की खेती	≡)
नियोग मीमांसा	१॥)
नैतिक जीवन	१)
पत्र [सम्]पादन कला	१)
फिजी में प्रतिज्ञाबद्ध कुली प्रथा	१)
प्रेम पूर्णिमा	२)
पंचरत्न	१।)
प्रबन्ध पुष्पाञ्जलि	॥)
प्रातः काल और सायंकाल के विचार	।=)
प्रेम	॥) ।≡)

फोटो ग्राफी शिक्षा ।-)
बनारस के व्यवसायी ॥≈)
विक्रम कला ।।)
बालमीकि रामायण १।)
व्यापार शिक्षा ।।।)
बिवेक बचनावली ≋)
भगवान महाबीर ४॥)
भाग्य निर्माण १।।।)
भव्य भारत ।-)
भाई बन्धुओं के झगड़े ।≈)
भारत में कृषि सुधार १।।।)
भारतीय जेल ।।)
भ्रातृस्नेह -)
भूकंप १≈)
मानव जीवन १॥)
मानसिक शक्ति ।)
मिनव्रता ।।।≋)
म र्ति पूजा ॥।)
मैं निरोग हूँ या रोगी ।)
यंग इंडिया ४॥)
युगल कुसुम ।≈)
युरोपकेप्रसिद्ध शिक्षासुधारक १॥≈)
योरोप में बुद्धि स्वतंत्र्य १)
रंगीला चर्खा ।-)
रामायण भाषा टीका ५)
रागिणी ४।)
राष्ट्रीय संदेश ।≈)

कृत्वकला १।)
बम्ब के गोले ॥)
स्वामी राम तीर्थ के सदुपदेश ।)
व्यापारिक कोष २।)
विवाह पद्धति ।।।) ≈)
जगत व्यापारिक पदार्थ कोष ५)
भाव चित्रावली ४)
भरत चरितामृत ।≈)
भाग्य निर्माण १।≈)
भारत में दुर्भिक्ष १।।।)
भिखारी से भगवान १) १॥)
भारत की ऋतुचर्या ≈)
मनुष्य के अधिकार ।≋)
महा भारत ३)
मानस कोष ॥≈)
मूंग फली की खेती -)
मेजिनी के लेख २)
यमद्वितीया कथा -)॥
रघुवंश सार ॥≈)
युद्ध की कहानियाँ ।)
राम बादशाह के छः हुक्मनामे १।)
योग दर्शन १)
लेखन कला ॥-)
रामायण मूल २॥)
शशाँक ३)
राष्ट्र भाषा हिन्दी ।)

राजनीति	।)	राजनीति प्रवेशिका	।=)
राज योग	।=)	राज सत्ता	।=)
राज पथ का पथिक	।-)	राज भक्ति	=)
रजा शिक्षा	१।)	राम की उपासना	।)
रामायण रहस्य	।।।)	रामोपदेश माला	≡)
रालट ऐक्ट	२)	रावण राज्य	२।।।)
रूस का पुनर्जन्म	।।।=)	रोगी की सेवा	।)
लंदन के पत्र	≡)।।	लंदन यात्रा	।।।)
वस्त्र भूषण	१)	बहिष्कृत भारत	।)
व्यय	।।)	बर्नियर की भारत यात्रा	२)
व्यावहारिक विज्ञान	१।=)	बाल्य विवाह दूषक	=)
विचार दर्शन	१।)	विधवा विवाह मीमांसा	२)
वेदान्त का विजय मंत्र	-)।।	वेश्या स्तोत	≡)
वैदिक जीवन	।।)	भागवत गीता	।-)
वैज्ञानिक अद्वैत वाद	१।।।=)	भक्तियोग	१।।।)
योगी अरविन्द की दिव्य वाणी	।।।)	असहमत संगम	१)
हिन्दी ऋग्वेद भाष्य	।।)	भाषा ऋजु पाठ	।-)
ऋतु चर्या	१)	रूस का पंचायती राज्य	।।।)
शास्त्री जी के दो व्याख्यान	।।=)		
शिल्प मार्तंड	।।)	शिक्षित और किसान	।।=)
शिक्षितों का स्वाथ्य व्यतिक्रम	।)	सच्चा जादू	१)
सत दर्शन	१)	सदाचार सोपान	।)
सदाचार नीति	१)	स्वा निक स्वराज्य	-)।।
सफल जीवन	।।)	सफलता की कुञ्जी	।=) ।)
सफल गृहस्थ	।।।)	समय दर्शन	१-)
समाज दर्शन	१।)	सरस्वती विवाह	=)
सन्तति शास्त्र	१।।)	हमारे शरीर की रचना	६।।।)

स्वर्ग की सड़क	१॥)	स्वदेशाभिमान	।-)
स्वदेशी पर महात्मा गांधी	॥)	स्वदेशी और स्वराज्य	।≈)
स्वदेश	१)	सुख तथा सफलता	।-)
स्वदेशी धर्म	।)	स्वदेशी आन्दोलन	-)॥
स्वराज्य विचार	≡)	स्वराज्य की धूम	।)
स्वदेशी की जय	-)॥	स्वास्थ्य साधन	≈)
स्वाधीन भारत	॥)	हिन्दुस्तानी स्वस्थ्य रक्षा	।)
साबुन सराजी	१)	साम्यवाद	।≈)
साहित्या लोचन	२) ३)	साहित्य सुषमा	॥)
साहित्य बिहार	॥)	साहित्य नवनीत	॥)
सितार शिक्षक	।≈)	सिद्ध करामात	१।)
सुख तथा सफलता	≡)	सुखकी प्राप्ति का मार्ग	।≈)
सुखी गृहस्थ	॥)	सुखी रहने का उपाय	≡)
सुगम चिकित्सा	≈)	सुजाक का इलाज	-)॥
सक्ति मुक्तावली	॥)	सेवाधर्म	१॥)
संतोष	॥-)	सार सुख साधन	।-)
संसार विजयी	≡)	हनुमान ज्योतिष	।)
हमारी कारावास कहानी	॥)	हमारा भीषण ह्रास	।)
हमारी प्राचीन ज्योतिष	।)	हारमोनियम मास्टर	१)
हारमोनियम शिक्षा	॥)	हारमोनियम टीचर	॥)
हृदय लहरी	॥)	हृदय तरंग	।)
हिन्द स्वराज्य	।-)	हिन्दी भाषा के सामयिक पत्र	।)
हिन्दी व्याकरण	।) ॥≈)	हिन्दी का संदेश	-)
हिन्दू जाति का स्वातंत्र्यप्रेम	॥≋)	हिन्दुस्तान का राष्ट्रीय झंडा	१)
हिन्दी साहित्य विमर्ष	१।)	हिन्दी पद्य रचना	।)
हिन्दुओं की पर जहरीली छुरी	-)	हिन्दू विवाह	॥≈)

मोतियों का खजाना	८)
राजेन्द्रकुमार	।)
रूप का बाजार	।)
रूप ज्वाला—	॥)
लावण्यमई—	≈)
लैली मजनू	।)
विचित्र खून—	।)
विद्याधरी	=)
श्यामा	≡)
रणवीर ४ भाग—	६)
रामरखा का खून	≡)
शैतान—	।॥)
सच्चा सपना—	≈)
सत्यवीर	१॥)
सती चरित्र संग्रह—	२)
सप्तम प्रतिमा —	॥≈)
सफेद घोड़ा—	।)
सरला—	=)
साहसी डाकू—	१।)
स्वर्णबाई—	।-)
स्वर्णलता—	१।॥)
सुख शर्वरी	।)
सुरसुन्दरी—	१॥)
सुलोचना—	=)
सौतेली मां—	=)
स्नेहलता—	॥)
संसार विजयी—	॥)
हवाई डाकू—	१॥)
हवाईनाव—	।
हिरण्यमई	≡)
हृदयकंटक—	।-)

जीवनी

कविराज लछीराम जी	-)॥
दादाभाई नौरोजी—	-)॥
धर्मवीर बालक	=)
बाजीराव पेशवा—	१)
बासंतिक कुसुम—	≡)
विक्रमादित्य छोटा - बड़ा	।-)
विशुद्ध चरितावली	॥≈)
भारत की देवियां	।=)
मीराबाई—	≡)
रामकृष्णदेव	।-)
राधा कृष्णदास	≈)
सप्तम एडवर्ड—	≈)
सूरदास—	≈)

नाटक

- अज्ञातवास— १)
- कपटीमुनि— ।)
- कलि कौतुक रूपक— ≡)
- क्या इसीको सभ्यता कहते हैं =)
- कृष्णकुमारी— ॥)
- ग्रामपाठशाला— ≡)
- जय नारसिंह की— =)
- द्रौपदी चीरहरण— ॥)
- नागानन्द— ।)
- नाट्यसंभव— ।=)
- पद्मावती— ।=)
- पुरअसर जादू—उर्दू ॥=)
- बारिद्नाद बध— ≡)
- बीरनारी— ।-)
- बूढ़े मुंह मुहासे— =)
- वैदकी हिंसा हिंसा न भवति ≡)
- महाअंधेरनगरी— ।)
- महारानी पद्मावती— ।=)
- रुक्मिणी परिणय— ।)
- सती— ॥)
- सरोजिनी— ॥)
- सुनहला विष— ।=)

काव्य

- अनुरागलतिका— ।=)
- अन्योक्ति कल्पद्रुम— ।=)
- अष्टजाम— ≡)
- अलकशतक औरतिल शतक =)
- अङ्ग दर्पण— =)
- अंगादर्श— ।)
- आरती विश्वनाथ—)॥
- इश्कनामा— =)
- इन्द्रसभा— =)
- उर्दू शतक =)
- उपखान पचासा—)॥
- उपालंभ शतक— =)
- कर्णाभरण— =)
- कलियुग पचीसी— =)
- कवि कीर्ति कलानिधि— =)
- कविवचन सुधा— ।)
- कविकुल कंठाभरण— =)
- काव्य निर्णय— १)
- काशी विश्वेश्वर रहस्य =)
- कुंडलिया गिरधरदास कृत -)॥

कृष्णावली—	-)
गीतार्णव—	≡)
चैत चन्द्रिका—	।)
चैत चन्द्रिका—	।=)
छंदो मंजरी—	॥=)
जगत विनोद—	॥)
ठाकुर शतक—	=)
दिल दीवानी—	-)॥
दीप प्रकाश—	।)
देवी पैज—	।)
दृष्टान्त तरंगिणी—	-)
ध्रुव सर्वस्व—	॥=)
नखशिख—(चन्द्रशेखर)	=)
„ (केशव)	=)
नयनामृत प्रवाह—	॥)
नानकसूर्योदय जन्मसाखी—	६)
पजनेस प्रकाश—	।)
पद्माभरण—	≡)
प्रबोध पचासा—	≡)
प्रियाप्रीतम विलास—	।।
पावस पचासा—	-)
पावस प्रमोद—	।=)
पूर्ति प्रमोद—	~)
प्रेम फुलवारी—	-)
प्रेम फौजदारी—	=)॥
प्रेमलतिका—	।=)
फाग चरित्र—	।=)
फूलोंका गुच्छा—	=)
बजरंग बत्तीसी—	-)
बदमाश दर्पण—	-)॥
बरवै नायिका भेद	=)
बलभद्र कृत सिखनख—	=)
बसंत बहार—	-)
बसंत मंजरी—	।)
बसुमती—	-)
वर्षा बहार—	=)
व्यंगार्थ कौमुदी—	।)
बालविनोद—	।)
बिजयिनी विजय वैजयन्ती—	-)
बिनय वर्णमाला—	≡)
विनय रसामृत—	-)
विज्ञान मार्तंड—	।)
बिहरा—	-)
वीणा रस मंजरी—	।)
बुढ़िया बखान—	-)
बुढ़वा मंगल—	)॥
बृन्दाबन शतक—	-)
बृहद व्यंगार्थ चन्द्रिका—	।)
भड़ौआ संग्रह—	१)
भवानी विलास—	।=)

भावविलास—	।=)
भाषा भूषण—	=)
भाषा भूषण रसिकमोहन—	॥)
भाषा सत्यनारायण—	=)
मजमूआः नजीर—	।)
मनोजमंजरी—	१)
महेश्वरसुधाकर—	॥)
महेश्वर चन्द्र चन्द्रिका—	॥)
महेश्वर सुधाकर—	॥)
महेश्वर विनोद	१)
महेश्वरविलास—	१)
मानस रहस्य—	।)
मुकुन्द विलास—	≡)
मुहूर्त मंजरी—	।=)
रघुनाथ शतक—	≡)
रतन हजारा—	॥)
रसप्रबोध—	।=)
रस बनारस—	-)
रस बरसात—	≡)
रसविलास—	=)
रस राज—	।)
रस लहरी—	≡)
रस सिंधु शतक—	१)
रसिक मोहन	॥)
रसिकविनोद—	।=)
रसिकानन्द—	।=)
राधा सुधाशतक—	≡)
राम रसायन—	२॥।)
रामचन्द्रभूषण—	॥=)
रावणेश्वर कल्पतरु—	१)
ललित ललाम—	॥)
लक्ष्मण शतक—	=)
लोकोक्तिरस कौमुदी—	।=)
शकुन्तला उपाख्यान—	।)
शिव चरितामृत—	१॥)
शिवाशिव शतक—	=)
शृंगार तिलक—	-)
शृंगारदर्पण—	॥)
शृंगारनिर्णय—	।=)
शंभु शतक—	।-)
शृंगार सतसई—	।)
शृंगार सुधा तरंग—	।)
श्रावणशृंगार—	≡)
सुजान रसखान—	।)
सुजानसागर—	॥)
सुधानिधि—	॥)
सनेह लीला—	-)
सभा विलास—	।)
समस्यापूर्ति—	४॥)
सरयू लहरी—	=)

मिलने का पता—लहरी बुकडिपो, लहरी प्रेस, बनारस सिटी ।

स्फुट